इम पुस्तक का पहला और दूसरा मस्करण मुपमा निकुज, तीसरा मस्करण भारती भडार तथा चौथा मस्करण मेंट्रल बुक डिपो, प्रयाग मे प्रकाशित हुआ था।

पहला मस्करण—अप्रैल, १९३५—हिंदी रूपातर
दूसरा मस्करण—अक्टूबर, १९४०—मूल अंग्रेजी सहित
तीसरा सस्करण—जनवरी, १९४६—भूमिका, टिप्पणी सहित
चौथा मस्करण—मितम्बर, १९५२— ,, ,, ,,
पाँचवाँ सस्करण—मई १९५९ ,, ,, ,,

मूल्य २ ५० रुपये
प्रकाशक गजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक हिंदी प्रिंटिग प्रेस, दिल्ली

तव उलट दो ।

सभवत फिट्ज़जेरल्ड ने इसीका भाव अतिम रुबाई मे रक्खा है । इस रुबाई के भी अतिम भाग को किसी भी अनुवादक ने ठीक नही समझा—
'turn down an empty Glass" का मतलब है—Shall turn down an empty Glass ! जो प्रेयसी 'करेगी' उसको अनुवादको ने 'करना'—ऐसा आदेश दिया है । किसी ने जूठा प्याला उलटने को कहा है, किसी ने खाली । प० बलदेवप्रसाद मिश्र ने मदिरा गिराने को कहा है पर अत मे 'सुखमान' लगाकर अन्याय किया है । प्रेयसी मृत उमर खैयाम के नाम पर यह मदिरा ज़मीन पर उँडेलती हुई उदास होगी कि सुखी ?

* * *

ख़ैयाम की मधुशाला

फ़िट्ज़जेरल्ड कृत 'रुबाइयात उमर ख़ैयाम' के प्रथम
अंग्रेज़ी अनुवाद का पद्यबद्ध हिंदी रूपांतर
सन् १९३३ में
रूपांतरित

बच्चन की अन्य रचनाएँ

१ बुद्ध और नाचघर
२ आरती और अंगारे
३ मैकबेथ (अनुवाद)
४ ओथेलो (अनुवाद)
५ जन गीता (अनुवाद)
६ धार के इधर-उधर
७ प्रणय पत्रिका
८ मिलन यामिनी
९ खादी के फूल
१० सूत की माला
११ हलाहल
१२ बंगाल का काल
१३ सतरंगिनी
१४ आकुल अंतर
१५ एकांत संगीत
१६ निशा निमंत्रण
१७ मधुकलश
१८ मधुबाला
१९ मधुशाला
२० प्रारंभिक रचनाएँ—पहला भाग } कविताएँ
२१ प्रारंभिक रचनाएँ—दूसरा भाग } कविताएँ
२२ प्रारंभिक रचनाएँ—तीसरा भाग—कहानियाँ
२३ बच्चन के साथ क्षणभर (संचयन)
२४ सोपान (संकलन)

'मधुशाला' का अंग्रेजी और 'बंगाल का काल' का बँगला अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है।

भूमिका

[तीसरे सस्करण की]

आज लगभग वारह वरस हुए जव मैंने फिट्ज़जेरल्ड के 'रुवाइयात उमर खैयाम' के पहले सस्करण का उल्था हिंदी मे किया था। लगभग दस वरस इसको छपे हुए भी हो चुके हैं। इसके पहले सस्करण के साथ ही अपने अनुवाद, फिट्ज़जेरल्ड के अग्रेजी रूपातर और उमर खैयाम के वारे में मैं कुछ कहना चाहता था, लेकिन दूसरे सस्करण के साथ भी इसकी नौवत न आई। भूमिका रूप में कुछ लिखा हुआ मेरे पास वहुत दिन से पडा था, इधर मैंने कुछ और कितावो से भी मसाला इकट्ठा कर लिया था। भला हो नए पेपर कट्रोल आर्डर का, किताव का सस्करण खतम हुए दो साल से ऊपर हो गया था और प्रेस वाले कान में तेल डालकर वैठे हुए थे। नए सस्करण की प्रेस-कापी तैयार करके मैं भेज भी देता तो उसके जल्दी छपने की कोई सूरत नही थी। किताव के जल्दी न छप सकने पर मन मे कुढते हुए भी प्रेस-कापी तैयार करने के लिए जो मुझे मनमाना समय मिला उसका मैंने स्वागत ही किया। और इस तरह आराम के साथ मैं यह भूमिका और टिप्पणी लिख सका। अगर इनमें मेरे पाठको को कुछ काम की वात मिले तो उसके लिए उन्हे इस नए पेपर कट्रोल आर्डर को ही धन्यवाद देना चाहिए।

उमर खैयाम के नाम से मेरी पहली जान-पहचान की एक वडी मज़ेदार कहानी है। उमर खैयाम का नाम मैंने आज से लगभग पचीस वरस हुए जव जाना था। उस समय मैं वर्नाक्यूलर अपर प्राइमरी के तीसरे या चौथे दरजे मे रहा हूँगा। हमारे पिता जी 'सरस्वती' मँगाया करते थे। पत्रिका के आने पर मेरा और मेरे छोटे भाई का पहला काम यह होता था कि उसे खोलकर उसकी तसवीरो को देख डाले। उन दिनो रगीन तसवीर एक ही छपा करती थी, पर सादे चित्र, फोटो इत्यादि कई रहते थे। तसवीरो को देखकर हम वडी उत्सुकता से उस दिन की वाट देखने लगते थे जव पिता जी और उनकी मित्र मडली इसे पढकर अलग रख दे। ऐसा होते-होते दूसरे

महीने की सरस्वती आने का समय आ जाता था। उन लोगो के पढ चुकने पर हम दोनो भाई अपनी कैंची और चाकू लेकर सरस्वती देवी के साथ इस तरह जुट जाते थे जैसे मेडिकल कालिज के विद्यार्थी मुर्दो के साथ। एक-एक करके सारी तसवीरे काट लेते थे। तसवीरे काट लेने के बाद पत्रिका का मोल हमको दो कौडी भी अधिक जान पडता। चित्रो के काटने मे जल्दबाजी करने के लिए, अब तक याद है, पिता जी ने कई बार गोशमाली भी की थी।

उन्ही दिनो की बात है, किसी महीने की सरस्वती मे एक रगीन चित्र छपा था, एक बूढे मुसलमान की तसवीर थी, चहरे मे शोक टपकता था, नीचे छपा था—उमर खैयाम। रुबाइयात के किस भाव को दिखाने के लिए यह चित्र बनाया गया था, इसके बारे मे कुछ नही कह सकता क्योकि इस समय चित्र की कोई बात याद नही है सिवा इसके कि एक बूढा मुसलमान बैठा है और उसके चेहरे पर शोक की छाया है। हम दोनो भाइयो ने चित्र को साथ ही साथ देखा और नीचे पढा 'उमर खैयाम'। मेरे छोटे भाई मुझसे पूछ पडे, "भाई, उमर खैयाम क्या ?" अब मुझे भी नही मालूम था कि उमर खैयाम के क्या माने है। लेकिन मै बडा ठहरा, मुझे अधिक जानना चाहिए, जो बात उसे नही मालूम है वह मुझे मालूम है, यही दिखाकर तो मै अपने बडे होने की धाक उसपर जमा सकता था। मै चूकने वाला न था। मेरे गुरु जी ने यह मुझे बहुत पहले सिखा रखा था कि चुप बैठने से गलत जवाब देना अच्छा है। मैने अपनी अक्ल दौडाई और चित्र देखते ही देखते बोल उठा, "देखो यह बूढा कह रहा है—उमर खैयाम, जिसके अर्थ है 'उमर खत्याम' अर्थात् उमर खतम होती है, यही सोचकर बूढा अफसोस कर रहा है।" उन दिनो संस्कृत भी पढा करता था 'खैयाम' मे कुछ 'क्षय' का आभास मिला होगा और उसीमे कुछ ऐसा भाव मेरे मन मे आया होगा। बात टली, मैने मन मे अपनी पीठ ठोकी, हम और तसवीरो के देखने मे लग गए।

पर छोटे भाई को आगे चलकर जीवन का ऐसा क्षेत्र चुनना था जहाँ हर बात को केवल ठीक ही ठीक जानने की जरूरत होती है, जहाँ कल्पना, अनुमान या कयास के लिए सुई की नोक के बराबर भी जगह नही है। लडकपन मे ही उनकी आदत हर बात को ठीक-ठीक जानने की ओर रहा करती थी।

उन्हे कुछ ऐसा आभास हुआ कि मैं वेपर की उडा रहा हूँ। शाम को पिता जी से पूछ वैठे। पिता जी ने जो कुछ वतलाया उसे सुनकर मै झेंप गया। मेरी झेंप को और अधिक वढाने के लिए छोटे भाई वोल उठे, "पर भाई तो कहते है कि यह वूढा कहता है कि उमर खतम होती है—उमर खैयाम यानी उमर खत्याम।" पिता जी पहले तो हँसे, पर फिर गभीर हो गए, मुझसे वोले, "तुम ठीक कहते हो, वूढा सचमुच यही कहता है।" उस दिन मैंने यही समझा कि पिता जी ने मेरा मन रखने के लिए ऐसा कह दिया है, वास्तव में मेरी सूझ गलत थी।

उमर खैयाम को वह तसवीर वहुत दिनो तक मेरे कमरे की दीवार पर टँगी रही। जिस दुनिया में न जाने कितनी सजीव तसवीरें दो दिन चमककर खाक मे मिल जाती है उसमे उमर खैयाम की निर्जीव तसवीर कितने दिनो तक अपनी हस्ती वनाए रख सकती थी। किसी दिन हवा के झोंके या नौकर की झाडू से रद्दी कागदों की टोकरी मे गिर गई होगी और वहाँ से कूडाखाने में पहुँचकर सड-गल गई होगी। उमर खैयाम की तसवीर तो मिट गई पर मेरे हृदय पर एक अमिट छाप छोड गई। उमर खैयाम और उमर खतम होती है, यह दोनो वाते मेरे मन में एक साथ जुड गई। तव से जव कभी भी मैंने 'उमर खैयाम' का नाम सुना या लिया मेरे हृदय में वही टुकडा 'उमर खतम होती है' गूज उठा। यह तो मैंने वाद को जाना कि अपनी गलत सूझ मे भी मैंने इन दो वातो मे एक विल्कुल ठीक सवध वना लिया था।

वहुत दिनो के वाद एकाएक फिट्जजेरल्ड की 'रुवाइयात उमर खैयाम' पढते हुए मेरी नजर इन सतरो पर ठहर गई

Oh, come with old Khayyam, and leave the wise
To talk, one thing is certain, that Life flies,
One thing is certain, and the Rest is Lies,
The Flower that once has blown for ever dies

(२६ वी रुवाई)

Life flies=उमर खतम होती है। उमर खैयाम को केवल एक वात का निश्चय है कि उमर खतम होती है। मुझे अपने लडकपन की वात याद

महीने की सरस्वती आने का समय आ जाता था। उन लोगो के पढ चुकने पर हम दोनो भाई अपनी कैंची और चाकू लेकर सरस्वती देवी के साथ इस तरह जुट जाते थे जैसे मेडिकल कालिज के विद्यार्थी मुर्दों के साथ। एक-एक करके सारी तसवीरे काट लेते थे। तसवीरे काट लेने के वाद पत्रिका का मोल हमको दो कौडी भी अधिक जान पडता। चित्रो के काटने मे जल्दवाजी करने के लिए, अव तक याद है, पिता जी ने कई वार गोशमाली भी की थी।

उन्ही दिनो की वात है, किसी महीने की सरस्वती मे एक रगीन चित्र छपा था, एक बूढे मुसलमान की तसवीर थी, चहरे मे शोक टपकता था, नीचे छपा था—उमर खैयाम। रुवाइयात के किस भाव को दिखाने के लिए यह चित्र वनाया गया था, इसके वारे मे कुछ नही कह सकता क्योकि इस समय चित्र की कोई वात याद नही है सिवा इसके कि एक बूढा मुसलमान बैठा है और उसके चेहरे पर शोक की छाया है। हम दोनो भाइयो ने चित्र का साथ ही साथ देखा और नीचे पढा 'उमर खैयाम'। मेरे छोटे भाई मुझसे पूछ पडे, "भाई, उमर खैयाम क्या ?" अव मुझे भी नही मालूम था कि उमर खैयाम के क्या माने है। लेकिन मै वडा ठहरा, मुझे अधिक जानना चाहिए, जो वात उसे नही मालूम है वह मुझे मालूम है, यही दिखाकर तो मै अपने वडे होने की धाक उसपर जमा सकता था। मै चूकने वाला न था। मेरे गुरू जी ने यह मुझे वहुत पहले सिखा रखा था कि चुप बैठने से गलत जवाव देना अच्छा है। मैने अपनी अक्ल दौडाई और चित्र देखते ही देखते वोल उठा, "देखो यह बूढा कह रहा है—उमर खैयाम, जिसके अर्थ है 'उमर खत्याम' अर्थात् उमर खतम होती है, यही सोचकर बूढा अफसोस कर रहा है।" उन दिनो सस्कृत भी पढा करता था 'खैयाम' मे कुछ 'क्षय' का आभास मिला होगा और उसीसे कुछ ऐसा भाव मेरे मन मे आया होगा। वात टली, मैने मन मे अपनी पीठ ठोकी, हम और तसवीरो के देखने मे लग गए।

पर छोटे भाई को आगे चलकर जीवन का ऐसा क्षेत्र चुनना था जहाँ हर वात को केवल ठीक ही ठीक जानने की जरूरत होती है, जहाँ कल्पना, अनुमान या कयास के लिए सुई की नोक के बराबर भी जगह नही है। लडकपन से ही उनकी आदत हर वात को ठीक-ठीक जानने की ओर रहा करती थी।

उन्हें कुछ ऐसा आभास हुआ कि मैं वेपर की उडा रहा हूँ। शाम को पिता जी से पूछ बैठे। पिता जी ने जो कुछ बतलाया उसे सुनकर मैं झेंप गया। मेरी झेंप को और अधिक बढाने के लिए छोटे भाई बोल उठे, "पर भाई तो कहते हैं कि यह बूढा कहता है कि उमर खतम होती है—उमर खैयाम यानी उमर खत्याम।" पिता जी पहले तो हँसे, पर फिर गभीर हो गए, मुझसे बोले, "तुम ठीक कहते हो, बूढा सचमुच यही कहता है।" उस दिन मैंने यही समझा कि पिता जी ने मेरा मन रखने के लिए ऐसा कह दिया है, वास्तव में मेरी सूझ ग़लत थी।

उमर खैयाम की वह तसवीर बहुत दिनों तक मेरे कमरे की दीवार पर टँगी रही। जिस दुनिया मे न जाने कितनी सजीव तसवीरें दो दिन चमककर ख़ाक में मिल जाती हैं उसमें उमर खैयाम की निर्जीव तसवीर कितने दिनो तक अपनी हस्ती बनाए रख सकती थी। किसी दिन हवा के झोंके या नौकर की झाड़ू से रद्दी कागदो की टोकरी में गिर गई होगी और वहाँ से कूडाख़ाने मे पहुँचकर सड-गल गई होगी। उमर खैयाम की तसवीर तो मिट गई पर मेरे हृदय पर एक अमिट छाप छोड गई। उमर खैयाम और उमर ख़तम होती है, यह दोनो बातें मेरे मन मे एक साथ जुड गई। तब से जब कभी भी मैंने 'उमर खैयाम' का नाम सुना या लिया मेरे हृदय मे वही टुकडा 'उमर खतम होती है' गूँज उठा। यह तो मैंने बाद को जाना कि अपनी गलत सूझ में भी मैंने इन दो बातो में एक बिल्कुल ठीक सबध बना लिया था।

बहुत दिनो के बाद एकाएक फिट्ज़जेरल्ड की 'रुबाइयात उमर खैयाम' पढते हुए मेरी नज़र इन सतरो पर ठहर गई

> Oh, come with old Khayyam, and leave the wise
> To talk, one thing is certain, that Life flies,
> One thing is certain, and the Rest is Lies,
> The Flower that once has blown for ever dies
>
> (२६ वी रुबाई)

Life flies=उमर खतम होती है। उमर खैयाम को केवल एक बात का निश्चय है कि उमर ख़तम होती है। मुझे अपने लडकपन की बात याद

आ गई, क्या उमर खैयाम के इस मूल निश्चय पर इतने दिनो पहले मै अपनी स्वाभाविक सूझ से पहुँच गया था ? क्या उस दिन पिता जी के कानो मे यही लाइन—One thing is certain, that Life flies गूंज उठी थी जो उन्होने मुझसे कहा था कि, हाँ यह वूढा सचमुच यही कहता है कि उमर खतम होती है ? तव तो उमर खैयाम का अर्थ समझने मे मै सच से वहुत दूर न था। इस प्रकार उमर खैयाम का नाम और उसका मूल सिद्धात आज से पचीस वरस पहले मेरे मन मे अपनी जड जमा चुका था। साथ ही साथ उमर खैयाम की कविता के साधारण वातावरण का भी कुछ-कुछ आभास मुझे मिल चुका था। वह इस प्रकार।

पिता जी ने उमर खैयाम के वारे मे केवल इतना वतलाया था कि यह फारसी का एक कवि है। इसने अपनी कविता रुवाइयो मे लिखी है जैसे तुलसीदास ने चौपाइयो मे। रुवाई का शाब्दिक अर्थ ही चौपाई है। पिता जी ने कितनी वारीकी से यह बात वता दी थी, अव समझ मे आता है। 'उमर खैयाम' की ध्वनि का अर्थ जैसे अपने आप ही मेरे मन मे वैठ गया था उसी तरह 'रुवाई' शब्द का भी हुआ। मुझे यह रुवाई शब्द, 'रोवाई' शब्द का भाई-सा जान पडा—हम अपने घरो मे वोली जाने वाली अवधी मे खडी वोली के 'रुलाई' शब्द को 'रोवाई' कहते है। मुझे ऐसा लगा जैसे रुवाइयो मे उमर खैयाम का रोना होगा। कोई एसी वात कही गई होगी जिससे कवि का शोक, विषाद प्रकट होता होगा। पर मैंने इसे जाहिर न होने दिया। दूध का जला मट्ठा फूंक-फूंककर पीता है। एक वार लजा चुका था। अपनी और हँसी नही कराना चाहता था। लेकिन मन मे रुवाइयो के लिए जो धारणा वन गई थी वह तो वनी ही रही। इस मनोरजक घटना के सात-आठ वरस वाद जव मैने उमर खैयाम की रुवाइयो को पहली वार पढा, तो मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने उनमे किसी रोदन, किसी वेदना या किसी निराशा की प्रत्याशा करते हुए पढा था। मेरी यह प्रत्याशा कहाँ तक पूरी हुई होगी इसे 'रुवाइयात उमर खैयाम' का हरेक पाठक अपने आप समझ सकता है। मुमकिन है यहाँ मेरी वात काटकर कुछ लोग मुझसे अपनी असहमति जताएँ। साधारण जनता के वीच, और इसमे प्राय ऐसे लोग अधिक है जिन्होने उमर खैयाम की कविता स्वय नही पढी, वस यदा-कदा

दूसरो से उसकी चर्चा सुनी है, या कभी उसके भावो को व्यक्त करने वाले चित्रो को उडती नजर से देखा है, कवि की एक और ही तसवीर घर किए हुए है। उनके ख्याल मे उमर खैयाम आनदी जीव है, प्याली और प्यारी का दीवाना है, मस्ती का गाना गाता है, सुखवादी है या जिसे अग्रेजी मे हिडोनिस्ट या एपीक्योर कहेगे। इतिहासी व्यक्ति उमर खैयाम ऐसा ही था या इससे विपरीत, इसपर मुंह खोलने का मुझे हक नही है। फारसी की रुवाइयो में उमर खैयाम का जो व्यक्तित्व झलका है उसपर अपनी राय देने का मैं अधिकारी नही हूँ क्योकि फारसी का मेरा ज्ञान बहुत कम है। लेकिन, एडवर्ड फिट्ज़जेरल्ड ने उन्नीसवी सदी के मध्य में अपने अग्रेज़ी तरजुमे के अदर उमर खैयाम का जो खाका खीचा है उसके बारे में बिना किसी सकोच या सदेह के मैं कह सकता हूँ कि वह किसी सुखवादी आनदी जीव अथवा किसी हिडोनिस्ट या एपीक्योर का नही है।

इन रुबाइयो का लिखने वाला वह व्यक्ति है जिसने मनुष्य की आकाक्षाओ को ससार की सीमाओं के अदर घुटते देखा है, जिसने मनुष्य की प्रत्याशाओ को ससार की प्राप्तियो पर सिर धुनते देखा है, जिसने मनुष्य के सुकुमार स्वप्नों को ससार के कठोर सत्यो से टक्कर खाकर चूर-चूर होते देखा है। इन रुबाइयों के अदर एक उद्विग्न और आर्त आत्मा की पुकार है, एक विषण्ण और विपन्न मन का रोदन है, एक दलित और भग्न हृदय का क्रदन है। सक्षेप में कहना चाहें तो यह कहेगे कि रुबाइयात मनुष्य की जीवन के प्रति आसक्ति और जीवन की मनुष्य के प्रति उपेक्षा का गीत है—रुबाइयो का क्रम जैसा रक्खा गया है उससे वे अलग-अलग न रहकर एक लबे गीत के ही रूप में हो गई है। यह गीत जीवन-मायाविनी के प्रति मानव का ऐकातिक प्रणय निवेदन है। पर कौन सुनता है ? वह अपना क्रोध-विरोध प्रकट करता है—पर उसे हार ही माननी पडती है। मानव की दुर्बलता, उसकी असमर्थता, उसकी परवशता, उसकी अज्ञानता और उसकी लघुता के साथ उसका दंभ, उसका क्रोध-विरोध और उसकी भ्राति उसे कितना दयनीय बना देती है! रुबाइयात सुख का नहीं दुख का गीत है, सतोष का नही असतोष का गान है। अग्रेज़ी लेखक जी० के० चेस्टरटन ने लिखा है कि Omar's philosophy is not the philosophy of

happy people but of unhappy people अर्थात् उमर खैयाम की फिलासफी सुखियो की फिलासफी नही दुखियो की फिलासफी है। और क्या ऐसा भी है कि मनुष्य हो और दुखी न हो ? सदा नही तो कम मे कम एक समय, और तब वह अवश्य उमर खैयाम के विचारो की ओर खिच जाता है। उमर खैयाम की रुबाइयो को पढकर मुझे अपनी स्वाभाविक बुद्धि पर आश्चर्य था, जिसने उनमे निहित विचारो की छाया 'रुबाई' शब्द मे ही देख ली थी।

'रुबाइयात उमर खयाम' को पहले पहल फिट्जजेरल्ड के अनुवाद मे पढने का भी एक विशेष अवसर था। सभवत १९२५-२६ की बात थी। उस समय मै गवर्नमेट इटरमीडिएट कालिज, प्रयाग मे एफ० ए० क्लास मे पढता था। उन दिनो कालिज मे एक लिटरेरी सोसाइटी थी। इस समिति की ओर से महीने मे दो बार, हर दूसरे शनिवार को, व्याख्यान तथा वाद-विवाद हुआ करते थे जिसमे कालिज के अध्यापक तथा विद्यार्थी सभी भाग लिया करते थे। एक दिन हमारी समिति के मत्री श्रीयुत ब्रजकुमार नेहरू की ओर से यह सूचना मिली कि अमुक शनिवार को श्रीयुत शिवनाथ काटजू 'रुबाइयात उमर खैयाम' पर अपना लेख सुनाएगे। श्रीयुत शिवनाथ काटजू प्रयाग के प्रसिद्ध ऐडवोकेट डा० कैलाशनाथ काटजू के सुपुत्र है। उस समय आप मेरे सहपाठी थे। शिवनाथ जी के लेख को समझने के लिए ही मैने 'रुबाइयात उमर खैयाम' को पढने की जल्दी की। रुबाइयात मे जो कुछ पाने की आशा मैने की थी वही मुझको मिली। रुबाइयात पढकर मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे हृदय मे एक वृक्ष उग आया जिसके बीज उससे सात-आठ साल पहले पड चुके थे। शिव जी—हम क्लास मे उन्हे इसी नाम से पुकारते थे—के लेख ने इस वृक्ष मे पहले पानी का काम किया।

'रुबाइयात उमर खैयाम' के उस पहले पाठ मे ही मैने उसका रूपातर करना आरभ किया या अगर मै अधिक सच्चाई से काम लूँ तो कहूँगा कि उस प्रथम पाठ से ही मेरे मन मे उसका अनुवाद होना शुरू हुआ। यह एक स्वाभाविक बात है कि जब हम किसी अन्य भाषा को सीखना आरभ करते है तो जो कुछ हम उसमे पढते है उसे समझने को हम मन ही मन अपनी भाषा मे उसका अनुवाद करते जाते है। एफ० ए० पास करके बी० ए० मे

पहुचा, बी० ए० पास करके एम० ए० मे, बहुत कुछ पढना था, यदा-कदा रुबाइयात पर भी नजर दौडा ली, पर अभी तक उमर खैयाम की कविता का मेरा ज्ञान केवल शाब्दिक था। कविता का अर्थ मै जानता था, परतु किसी कविता के अर्थ को समझ लेना उसे समझने के कार्य का सबसे सरल भाग है। शब्दो के पर्दे को उठाकर कवि की भावनाओ को हृदयगम करना कठिन काम है। साधारण ज्ञान और बुद्धि रखनेवाला मनुष्य भी कठिन से कठिन कविता के शाब्दिक अर्थ को प्रयत्न करने से जान सकता है, परतु भावनाओ को समझने के काम में बुद्धि और ज्ञान कुछ भी काम नही देते। किसी कविता का अर्थ तटस्थ रहकर भी जाना जा सकता है पर भावनाओ को समझने के लिए अपने को कवि के साथ एक करना पडता है। साहित्य को समझने के लिए जीवन के अनुभव की आवश्यकता होती है। कविताएँ पढाते समय मै अपने विद्यार्थियो से अक्सर कहता हूँ कि अभी तुम कविताओ का अर्थ समझ लो, इनके भावो को तुम तब समझोगे जब जीवन के अनुभवो से भीगोगे। मेरे लिए जीवन के अनुभवो से भीगने का अवसर भी आ गया। १९३० के सत्याग्रह आदोलन में मैने युनिवर्सिटी छोड दी और उसके पश्चात मेरे जीवन में जो भीषण तूफान आया और मेरे विचारो और भावनाओ मे जो प्रबल उथल-पुथल मची उसने मुझे ठीक उस मन स्थिति मे रख दिया जिसमे रुबाइयात उमर खैयाम मेरे प्राणो की प्रतिध्वनि हो गई। एक-एक रुबाई ऐसी मालूम होने लगी जैसे मेरे लिए ही लिखी गई हो। अब जब उन्हे मै स्वय पढता या किसीको सुनाता तो उनमें अतर्निहित भावनाओ से मेरा हृदय सहज ही द्रवित, परिप्लावित और प्रोच्छ्वसित होने लगता। उफ, क्या दिन थे वे भी!

ऐसी मनोदशा मे आने के पूर्व मैने कभी 'रुबाइयात उमर खैयाम' का रूपातर करने की बात मन में सोची ही न थी। पर अब तो उसका अनुवाद मेरे मन मे उमडा पडता था। मैने इस कार्य के लिए ४ जून, सन् १९३३ को लेखनी उठाई और १५ जून, सन् १९३३ को रख दी। इतने दिनो के बीच मैने बाहर की एक बारात की, और तीन दिन बीमार रहा। अर्थात् 'रुबाइयात उमर खैयाम' का यह रूप उपस्थित करने मे मेरे सात दिन लगे जिनमे मैने प्रतिदिन चार पाँच घटे की औसत से काम किया। यद्यपि यह काम

केवल सात दिन मे समाप्त हो गया पर इसे करते हुए मुझे ऐसा लगा कि इसमे मेरे सात बरस की मेहनत लगी है। रूपातर करते समय मुझे आभास हुआ कि जैसे पिछल सात बरसो मे किया हुआ प्रत्येक पाठ और उसकी प्रतिक्रिया कुछ न कुछ सहायना दे रही है। लोग मुझसे अक्सर पूछते थे कि अनुवाद मे कितने दिन लगे और मै नि मकोच कहता था कि सात बरस। मेरा मन साफ है कि मै उनसे झूठ नही कहता था।

हिंदी पत्र-पत्रिकाओ के देखते रहने के कारण यह तो मुझे मालूम था कि साहित्यकारो का ध्यान उमर खैयाम की कतिपय रुबाइयो की ओर जा रहा है परतु अपने जीवन के तूफानी दिनो मे जब पहले पहल उमर खैयाम की सारी रुबाइयो को रूपातरित करने की बात मेरे मन मे आई उस समय मुझे यह नही ज्ञात था कि अन्य लोग अपने अनुवादो को पूरा करके पुस्तकाकार छपाने की आयोजना कर रहे है। मुझे जीवन मे अवकाश मिले कि मै कलम लेकर जो कुछ हृदय मे हिलोरे मार रहा है उसे कागज पर उतारू कि बाबू मैथिलीशरण गुप्त का अनुवाद सन् १९३१ मे प्रकाशित हो गया।[1] और साल भर के बाद ही पडित केशव प्रसाद पाठक का अनुवाद।[2] यह दोनो अनुवाद जिस ठाट-बाट और जिस आन-बान से निकले थे उसे देखकर यदि मेरे मन मे अपने अनुवाद को पूरा करके इनकी प्रतियोगिता मे रखने की बात होती तो उसे उसी समय ठडी पड जानी चाहिए थी। मुझ अज्ञात लेखक का अनुवाद कौन प्रकाशित कर सकता था। १९३२ मे मेरी कविताओ का एक सग्रह प्रकाशित हो चुका था पर उसके लिए मुझे जो दौड-धूप करनी पड़ी थी और जिन लज्जास्पद शर्तों पर मुझे उसे प्रकाशक को देना पडा था उसका कडुआ पाठ मै अभी न भूला था। अनुवाद तो मेरे कठ से, मै फिर कहूगा, फूटा पडता था और मेरे लिए अब उसे रोकना असभव था। उमर खैयाम की रुबाइयो के प्रति मेरी प्रतिक्रिया अपनी थी, मेरी राय अपनी थी, मेरी ध्वनि अपनी थी, मेरी अनुवाद की धारणा अपनी थी, विधि अपनी थी, और इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण इसे आरभ करने की

---

१ प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर।

२ इडियन प्रेस लिमिटेड, जबलपुर।

प्रेरणा अपनी थी। वस मैं काम मे लग गया।

उमर खैयाम की रुबाइयो को हिंदी मे उपस्थित करने मे रहदेखाव का काम किसने किया इसे मैं निश्चयपूर्वक नही कह सकता। पर न जाने कैसे मेरी स्मृति में यह बात टँकी हुई है कि पहला अनुवाद जो मैंने उमर खैयाम की रुबाइयो का देखा वह स्वर्गीय पडित सूर्यनाथ तकरू द्वारा किया गया था और सभवत 'प्रभा' में प्रकाशित हुआ था, अपना अनुवाद करते समय मैंने उन्हे इस विषय में पत्र लिखा था। परतु वे वीमार थे। उन्होंने मुझे उत्तर तो दिया पर कोई वात उससे स्पष्ट न हो सकी। वावू मैथिली-शरण गुप्त ने अपने पूर्व किसी सज्जन के प्रयास की चर्चा अपनी भूमिका मे की है, सभव है उनका तात्पर्य उन्ही से हो। झालरापाटन के पडित गिरि-वर शर्मा नवरत्न का किया हुआ रुबाइयात उमर खैयाम का अनुवाद[1] मैंने अपना अनुवाद पूरा करने के वाद देखा। उसकी प्रकाशन तिथि सन् १९३१ दी हुई है। इसके दो वर्ष पहले वे खैयाम की रुवाइयो का सस्कृत अनुवाद भी प्रकाशित करा चुके थे। उनका अपना छन्द है, और अन्य लोग भी अनु-वाद कर रहे हैं इससे वे अनभिज्ञ मालूम होते हैं। विज्ञापन न होने से उनके इस अनुवाद से अन्य अनुवादक अनभिज्ञ हैं। १९३२ में ही पडित वलदेव प्रसाद मिश्र का अनुवाद[2] प्रकाशित हुआ, पर उसे भी मैंने वाद को देखा। उन्होंने वावू मैथिलीशरण गुप्त और मुशी इकवाल वर्मा 'सेहर' के अनुवाद से अपना परिचय प्रकट किया है। १९३३ मे डाक्टर गयाप्रसाद गुप्त का अनुवाद[3] प्रकाशित हुआ। यह वँगला के किसी अनुवाद का भाषातर है। १९३५ में मेरा अनुवाद प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व किसी समय लखनऊ जाने पर वहा के पडित व्रजमोहन तिवारी का, जिन्होंने 'झलक' नाम से हिंदी में सानेटो का एक सग्रह प्रकाशित किया है, अनुवाद मैंने सुना। प्रका-शित हुआ या नही इसका मुझे पता नही है। इसीके कुछ दिन वाद 'सैनिक', आगरा मे किसी सज्जन का अनुवाद प्रकाशित होता रहा, वह भी पुस्तक

---

१ नवरत्न सरस्वती भवन, झालरापाटन।
२ मेहता पब्लिशिंग हाउस, सूत टोला, काशी।
३ हिंदी साहित्य भडार, पटना।

केवल सात दिन मे समाप्त हो गया पर इसे करते हुए मुझे ऐसा लगा कि इसमे मेरे सात बरस की मेहनत लगी है। रूपातर करते समय मुझे आभास हुआ कि जैसे पिछल सात बरसो मे किया हुआ प्रत्येक पाठ और उसकी प्रतिक्रिया कुछ न कुछ सहायता दे रही है। लोग मुझसे अक्सर पूछते थे कि अनुवाद मे कितने दिन लगे और मै नि सकोच कहता था कि सात बरस। मेरा मन साफ है कि मै उनसे झूठ नही कहता था।

हिंदी पत्र-पत्रिकाओ के देखते रहने के कारण यह तो मुझे मालूम था कि साहित्यकारो का ध्यान उमर खैयाम की कतिपय रुबाइयो की ओर जा रहा है परतु अपने जीवन के तूफानी दिनो मे जब पहले पहल उमर खैयाम की सारी रुबाइयो को रूपातरित करने की बात मेरे मन मे आई उस समय मुझे यह नही ज्ञात था कि अन्य लोग अपने अनुवादो को पूरा करके पुस्तकाकार छपाने की आयोजना कर रहे है। मुझे जीवन मे अवकाश मिले कि मै कलम लेकर जो कुछ हृदय मे हिलोरें मार रहा है उसे कागज पर उतारू कि बाबू मैथिलीशरण गुप्त का अनुवाद सन् १६३१ मे प्रकाशित हो गया।[1] और साल भर के बाद ही पडित केशव पसाद पाठक का अनुवाद।[2] यह दोनो अनुवाद जिस ठाट-बाट और जिस आन-बान से निकले थे उसे देखकर यदि मेरे मन में अपने अनुवाद को पूरा करके इनकी प्रतियोगिता मे रखने की बात होती तो उसे उसी समय ठडी पड जानी चाहिए थी। मुझ अज्ञात लेखक का अनुवाद कौन प्रकाशित कर सकता था। १६३२ मे मेरी कविताओ का एक सग्रह प्रकाशित हो चुका था पर उसके लिए मुझे जो दौड-धूप करनी पडी थी और जिन लज्जास्पद शर्तों पर मुझे उसे प्रकाशक को देना पडा था उसका कडुआ पाठ मै अभी न भूला था। अनुवाद तो मेरे कठ से, मै फिर कहूगा, फूटा पडता था और मेरे लिए अब उसे रोकना असभव था। उमर खैयाम की रुबाइयो के प्रति मेरी प्रतिक्रिया अपनी थी, मेरी लय अपनी थी, मेरी ध्वनि अपनी थी, मेरी अनुवाद की धारणा अपनी थी, विधि अपनी थी, और इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण इसे आरभ करने की

---

१ प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर।

२ इडियन प्रेस लिमिटेड, जबलपुर।

प्रेरणा अपनी थी। बस मैं काम मे लग गया।

उमर खैयाम की रुबाइयो को हिंदी मे उपस्थित करने म रहदेखाव का काम किसने किया इसे मैं निश्चयपूर्वक नही कह सकता। पर न जाने कैसे मेरी स्मृति में यह बात टँकी हुई है कि पहला अनुवाद जो मैंने उमर खैयाम की रुबाइयो का देखा वह स्वर्गीय पडित सूर्यनाथ तकरू द्वारा किया गया था और सभवत 'प्रभा' मे प्रकाशित हुआ था, अपना अनुवाद करते समय मैंने उन्हें इस विषय में पत्र लिखा था। परतु वे बीमार थे। उन्होने मुझे उत्तर तो दिया पर कोई बात उससे स्पष्ट न हो सकी। बाबू मैथिली-शरण गुप्त ने अपने पूर्व किसी सज्जन के प्रयास की चर्चा अपनी भूमिका में की है, सभव है उनका तात्पर्य उन्ही से हो। झालरापाटन के पडित गिरि-धर शर्मा नवरत्न का किया हुआ रुबाइयात उमर खैयाम का अनुवाद[1] मैंने अपना अनुवाद पूरा करने के बाद देखा। उसकी प्रकाशन तिथि सन् १९३१ दी हुई है। इसके दो वर्ष पहले वे खैयाम की रुबाइयो का सस्कृत अनुवाद भी प्रकाशित करा चुके थे। उनका अपना छन्द है, और अन्य लोग भी अनु-वाद कर रहे हैं इससे वे अनभिज्ञ मालूम होते हैं। विज्ञापन न होने से उनके इस अनुवाद से अन्य अनुवादक अनभिज्ञ हैं। १९३२ मे ही पडित बलदेव प्रसाद मिश्र का अनुवाद[2] प्रकाशित हुआ, पर उसे भी मैंने बाद को देखा। उन्होने बाबू मैथिलीशरण गुप्त और मुशी इकबाल वर्मा 'सेहर' के अनुवाद से अपना परिचय प्रकट किया है। १९३३ में डाक्टर गयाप्रसाद गुप्त का अनुवाद[3] प्रकाशित हुआ। यह बँगला के किसी अनुवाद का भाषातर है। १९३५ में मेरा अनुवाद प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व किसी समय लखनऊ जाने पर वहा के पडित ब्रजमोहन तिवारी का, जिन्होने 'झलक' नाम से हिंदी मे सानेटो का एक सग्रह प्रकाशित किया है, अनुवाद मैंने सुना। प्रका-शित हुआ या नही इसका मुझे पता नही है। इसीके कुछ दिन बाद 'सैनिक', आगरा में किसी सज्जन का अनुवाद प्रकाशित होता रहा, वह भी पुस्तक

---

१ नवरत्न सरस्वती भवन, झालरापाटन।

२ मेहता पब्लिशिंग हाउस, सूत टोला, काशी।

३ हिंदी साहित्य भडार, पटना।

रूप मे छपा या नही, मुझे नही मालूम। १९३७ मे मुशी इकबाल वर्मा 'सेहर' का अनुवाद[1] प्रकाशित हुआ, यह मूल फारसी मे किया गया है और इसपर उन्होने कई बरसो से परिश्रम किया था। १९३८ मे श्रीयुत रघुवश लाल गुप्त का अनुवाद[2] प्रकाशित हुआ। १९३९ मे जोधपुर के श्रीयुत किशोरीरमण टडन ने एक अनुवाद करके मेरे पास भेजा, पर वह अभी अप्रकाशित है। पडित जगदवा प्रसाद 'हितैषी' ने बहुत दिनो मे रुबाइयात उमर खैयाम के ऊपर काम किया है और उनकी पुस्तक 'मधुमदिर' के नाम से प्रकाशित होने वाली है। मैंने यह भी सुना है कि पडित सुमित्रानदन पत का किया हुआ एक अनुवाद इडियन प्रेस मे रक्खा है, पता नही कब प्रकाशित होगा।[3]

खैयाम की कविता के प्रति जो मेरी प्रतिक्रिया थी वह एक समय मुझे निजी मालूम हुई थी। पर इन प्रकाशनो की तिथियो पर गौर करने से पता लगेगा कि जैसे देश-काल मे कुछ ऐसा वातावरण था कि दूर-दूर बैठे हुए लोगो ने भी लगभग एक ही समय मे खैयाम को हिदी मे उपस्थित करने की बात सोची। जिस तरह मैंने ऊपर कहा है कि व्यक्ति के जीवन मे एक समय ऐसा आता है जब वह उमर खैयाम की विचारधारा की ओर स्वय खिच जाता है, क्या इसी तरह देश के जीवन मे ऐसा समय आता है जब वह इस प्रकार की कविता सुनने को आतुर-आकुल हो उठता है।

उत्तर है, हाँ। ऐसा ही था १९३० का वह समय। आँधी आने के पूर्व की शान्ति मे बैठा हुआ क्रातिकारी दल एक ऐसा षड्यत्र रच रहा था कि जिसके द्वारा वह विदेशी शासन के सपूर्ण दुख-सकटमय यत्र को पकडकर चकनाचूर कर डाले और हृदय के स्वप्नो के अनुकूल एक नए ही विधान का निर्माण करे। सहसा हमारे सारे देश के ऊपर वेग से बहता हुआ एक तूफान यह घोषणा कर चला, 'जागो, इधर सरदार भगतसिह ने असेंबली भवन के अदर बम फेंक दिया है जिससे हमारी गुलामी की जजीरे उड गई है और

१ इडियन प्रेस, प्रयाग।
२ किताबिस्तान, प्रयाग।
३ १९४८ में 'मधुज्वाल' के नाम से भारती भडार, प्रयाग द्वारा प्रकाशित।

उधर महात्मा गाधी ने अपने चरखे के तागे से ब्रिटिश सत्ता की सुल्तानी मीनार को फँसा लिया है। माँ के लाडलो! उठो, देश-प्रेम की मदिरा पीकर मैदान में आ जाओ, देर करने से मौका हाथ से निकल जाएगा।' नौजवान ने सिर पर कफन बाँधा और अपनी प्रेयसी से बोला, 'मानिनी, विलम्ब करना व्यर्थ है, मुझे थोडी ही देर ठहरना है, सभवत यह हमारा अतिम मिलन हो।' देश की पुकार तेज होती जा रही थी, वह अपने हृदय की पुकार न सुन सका। युवक, युवतियाँ, यहाँ तक कि बच्चे भी वानर सेना बनाकर निकल पडे। हमारी आँखो मे एक अनोखी मस्ती थी, दिलो मे एक अजीब जोश था, दिमागो में एक नई जिंदगी का सपना था। हमारी आशा की लहरो ने आकाश छू लिया। सरकार ने नियति की दृढता, कठोरता और निर्ममता से हमारा दमन आरभ किया। न दलील, न अपील, न वकील। उसने हमारे नेताओ को पकड-पकडकर शतरज के मोहरो की तरह जेल मे डालना शुरू किया। पर हम निरुत्साह नही हुए। सरकार को हमारी शक्ति का पता लगा। डाँडी यात्रा के विद्रोही चरणो का वायसराय की कोठी मे स्वागत हुआ। महात्मा गाधी राउड टेबिल कान्फ्रेंस मे गए। पर यह सब बाहरी तमाशा था। ब्रिटिश नीति ऐसा घूंघट मारकर बैठी थी कि उसे उठाकर उससे बोलना असभव था। इधर लार्ड अरविन के उत्तराधिकारी लार्ड वेलिंगडन ने आर्डिनेस राज फैला दिया और गाधी जी हिंदुस्तान मे आते ही गिरफ्तार कर लिए गए। राष्ट्रीय आदोलन बिल्कुल कुचल दिया गया और सर सेमुएल होर ने गाधी जी की गिरफ्तारी पर गर्व से कहा कि एक कुत्ता भी नही भौंका। सरकार की कूटनीति ने जगह-जगह हिंदू-मुस्लिम दगे करा दिए। और इस प्रकार मर्दित, दलित, विभाजित और पराजित देश के ऊपर 'ह्वाइट पेपर' का विधान लाद दिया गया। हम इसे 'कोरा कागद' कहकर हँसे, पर हमे उसीको स्वीकार करना पडा! और भारत को अग्रेजो द्वारा पूर्व दृढ निश्चित पथ पर ही आगे बढना पडा। उसकी जाज्वल्यमान आशाएँ, जिनपर उसने न जाने कितने दिनो से आँख लगा रक्खी थी, सब की सब, राख बनकर न जाने किस ओर उड गईं। स्वतत्रता का बीज बोने का जो उसने श्रम-यत्न किया था उनके फलस्वरूप उसकी आँखो मे आँसू थे और उसके कठ में उच्छ्वास। नियति ने भारत की भाल-

शिला पर जो लेख लिख दिया था उसका एक अक्षर भी भारत के शत-शत आसुओ की धारा से न धुल सका। ऐसा था वह नैराश्यपूर्ण समय और ऐसी थी वह शोकजनक परिस्थितियाँ जिनमे देश के कोने-कोने मे उमर ख़ैयाम की वाणी प्रतिध्वनित हुई। यह बडी रोचक खोज होगी कि भारत की अन्य भाषओ मे ख़ैयाम के अनुवाद कब हुए। निश्चय के साथ तो मै नही कह सकता पर मेरा अनुमान है कि वे भी सब इसी समय के आस पास हुए होगे।

और फिट्जजेरल्ड ने स्वय अपने जीवन के एक बडे उद्वेगपूर्ण समय मे ख़ैयाम की रुबाइयो का अनुवाद किया था। साथ ही साथ उन्नीसवी सदी मे इगलैड का वायुमडल भी कुछ इस प्रकार का था जिसमे रुबाइयात के भाव और विचार लोगो को सहज ही आकर्षक मालूम होने लगे। इस मन स्थिति से, बीसवी सदी मे भी, इगलैड क्या, योरुप को भी त्राण नही मिला। शायद वह वर्तमान शताब्दी मे और तीव्र ही हो गई है, और यही कारण है आज लगभग एक सौ बरसो से यह पुस्तक पच्छिमी जन-समुदाय मे अत्यत लोकप्रिय बनी हुई है। जितने और जितनी तरह के सस्करण इस छोटी-सी पुस्तक के निकले है उतने शायद किसी और पुस्तक के नही निकले और आए दिन नए-नए निकलते ही जाते है। सैकडो चित्रकारो ने इसके भावो को प्रदर्शित करने को चित्र बनाए है। आइसोडोरा डकन ने ख़ैयाम की रुबाइयो पर नृत्य भी तैयार किया था। नि सदेह फिट्जजेरल्ड द्वारा ख़ैयाम की रुबाइयो का रूपातर साहित्य ससार मे एक विशेष महत्वपूर्ण घटना थी। लैवार्न ने लिखा है, कि सन् १८५९ मे डारविन की 'ओरीजिन आफ स्पीशीज' प्रकाशित हुई और उसने आधुनिक मस्तिष्क का निर्माण किया, उसी साल यह कविता प्रकाशित हुई और इसने आधुनिक हृदय की भविष्यवाणी की। जीवन के विषय मे चितन करने वाला शायद ही कोई व्यक्ति हो जो कभी न कभी उन्ही भावनाओ से होकर न गुजरा हो जिनसे फिट्जजेरल्ड गुजरे थे। निश्चय-पूर्वक यह कहा जा सकता है कि उनकी अनुभूतियो की प्रतिध्वनि प्रत्येक हृदय से होती है।

फिट्जजेरल्ड को फारसी पढने की प्रेरणा सन् १८५३ मे उनके मित्र प्रोफेसर कोवेल से मिली, और उन्होने ही सन् १८५६ मे आक्सफर्ड की बोडलियन लाइब्रेरी से उमर ख़ैयाम की रुबाइयो की पाडुलिपि उनके पास

भेजी। थोडे ही दिनो पश्चात् भारतवर्ष आने पर कोवेल ने एशियाटिक सोसाइटी की पाडुलिपि की प्रतिलिपि भी उन्हे भेजी। इसके पूर्व फिट्ज़-जेरल्ड कई स्पेनिश और फारसी पुस्तको का अनुवाद कर चुके थे और अनुवाद कला में दक्ष हो चुके थे। फिट्ज़जेरल्ड ने अन्य पुस्तके भी लिखी है और पत्रलेखक के रूप मे भी उनकी प्रसिद्धि है, परतु जो यश उन्हे ख़ैयाम के अनुवादक के रूप में मिला वह सर्वोपरि है और चिरस्थायी है। और अनुवादो मे फिट्ज़जेरल्ड का मस्तिष्क था, रुवाइयात उमर ख़ैयाम में उनका हृदय है। उमर का परिचय उनमे ऐसे समय मे हुआ था जब उन्हे उमर की आवश्यकता थी। फिट्ज़जेरल्ड के पत्रो मे इस तरह के वाक्य प्राय मिलते है, 'जितने फारसी कवियो को मैने पढा है उनमें उमर मुझे सबसे अधिक प्रिय है, उमर मे मेरे हृदय को बडी सात्वना मिलती है, उमर को मै अपनी निधि समझता हू, उमर मे और मुझमे बडी एकता है, मै उमर की कविता का केवल सौंदर्य ही नही देखता उसकी अनुभूतियो का भी सहभागी हू।' फिट्ज़-जेरल्ड के हृदय मे कौन ऐसी चोट या कचोट थी जिसमे ख़ैयाम की कविता मे उनके दिल को तसल्ली मिलती थी ? १८५६ में फिट्ज़जेरल्ड ने लूसी बारटन से विवाह कर लिया, 'दियो विधि अनचाहत को सग'। शीघ्र ही उन्हें अनुभव हुआ कि यह उनके जीवन की सबसे बडी भूल थी, मन पश्चत्ताप और वेदना से भर गया। उसी समय उमर की कविता उनके अतराल में पैठ गई और उनके निश्वासो के साथ अन्य रूप मे मुखरित हुई। एफ० आर० बारटन लिखतें है[१]

There is very little reference to Persian poetry in his letters until 1856 the year of his marriage to Lucy Barton By that time he was sufficiently proficient in the subject to read the language in the original script without the help of his mentor, Professor Cowell As things turned out his sufficient acquirement of Persian at this period stood him

---

१ Some New Letters of Edward Fitzgerald Edited by F R Barton C M G, pp 73-74

in good stead—not only for the reason that with Cowell's departure for India in 1856 he could no longer rely upon his guidance, but also because he thus had a congenial subject ready at hand to which he could turn when the mortification of the knowledge that he had made a blunder by marrying came home to him Out of evil sometimes cometh good Men not infrequently do their best work under the stress of adversity Had it not been for the overwhelming need he felt to divert his thoughts from the mistake he had made, we may justly doubt whether he would ever so far have overcome his naturally indolent temperament as to produce the best that was in him Moreover, the philosophy of Omar attuned perfectly with his then despondent frame of mind

यह है फिट्जजेरल्ड के अनुवाद की अद्भुत सफलता का रहस्य—विगलित हृदय, परिपक्व मस्तिष्क। उनके विगलित हृदय मे उमर खैयाम की भावनाएँ घुल-मिलकर एक हो गई थी। उन्हे अब उमर के शब्दो की अपेक्षा न थी, वे अब अपने शब्दो मे भी उमर के भावो को जाग्रत कर सकते थे। अपने पत्रो मे कई स्थलो पर उन्होने लिखा है कि मैं उमर के शब्दो से बहुत दूर चला गया हूँ, तत्वत मैने शाब्दिक अनुवाद करने का प्रयत्न ही नही किया। कई रुबाइयो के भावो को उन्होने मिला दिया था इसका भी उन्हे ज्ञान था। अंग्रेजी लेखक एलेन की एक पुस्तक है[१] जिसमे उन्होने फिट्जजेरल्ड की रुबाइयो की तुलना मे मूल फारसी की रुबाइयाँ खोजकर रक्खी हैं। ४६ रुबाइयाँ मूल की अविकल अनुवाद है, ४४ मे एक से अधिक के भाव सम्मिलित हैं, २ केवल फ्रांसीसी अनुवाद निकोलस की प्रति मे हैं, २ मे केवल मूल का भाव मात्र है, २ मे एक अन्य फारसी कवि अत्तार के भाव

१ Rubaiyat Omar Khayyam with Persian originals by E A Allen Nichols, London

है, २ में हाफिज़ का प्रभाव स्पष्ट है, और सबसे अधिक ध्यान देने की बात यह है कि ३ रुबाइयाँ ऐसी हैं जिनके मूल का पता नही है और सभवत. वे फिट्ज़जेरल्ड की स्वय अपनी हैं। इनको फिट्ज़जेरल्ड ने प्रथम दो सस्करणो के पश्चात हटा भी दिया था।

एक प्रश्न पूछा जा सकता है, फिट्ज़जेरल्ड ने अनुवादक की मर्यादा का निर्वाह कहाँ तक किया हैं। अगर अनुवाद का अर्थ यह है कि एक भाषा के शब्द के स्थान पर दूसरी भाषा का शब्द लाकर रख दिया जाए तो फिट्ज़-जेरल्ड सफल अनुवादक नही हैं और अगर अनुवाद का अर्थ यह है कि मूल के भावो को दूसरी भाषा के माध्यम से जाग्रत किया जाए तो फिट्ज़जेरल्ड आदर्श अनुवादक हैं। वस्तुत फिट्ज़जेरल्ड का अनुवाद शब्दानुवाद न होकर भावानु-वाद है। फिट्ज़जेरल्ड अनुवाद के विषय में अपनी एक विशेष धारणा रखते थे। अपने एक पत्र में कहते हैं, अनुवाद को जिस तरह भी हो सके सजीव बनाना चाहिए, अगर मूल के प्राणो की प्रतिष्ठा उसमें नही हो सकती तो अपनी ही साँसो का सचार उसमें कर देना चाहिए, भुसभरे गिद्ध से फुदकती गौरैया कही बढकर है। फिट्ज़जेरल्ड ने यत्न तो यही किया है कि उनके अनुवाद से उमर के ही प्राण पुकार उठे, पर जहाँ कही इसमें उ हे सदेह हुआ है वहाँ उन्होंने अपनी ही नही दूसरो की साँसो का भी उपयोग कर लिया है। अनुवाद तो रुबाइयात के बहुत हैं पर जो सजीवता फिट्ज़जेरल्ड के अनुवाद मे है वह अन्यत्र कही नही है, और कुछ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि वह सजीवता उमर खैयाम की मौलिक रुबाइयो में भी नही है। पर, यदि वह सजीवता फिट्ज़-जेरल्ड की ही देन है तो उन्होंने किसी अन्य कवि की रचना को अथवा स्वय अपनी रचना को उससे अनुप्राणित क्यो नही किया ? सच बात तो यह है कि फिट्ज़जेरल्ड की रुबाइयाँ न तो उमर खैयाम की ही विशुद्ध कृतियाँ रह गई हैं और न फिट्ज़जेरल्ड की। दोनो की विचार धारा, भावना और कला ने मिलकर एक तीसरी ही वस्तु को जन्म दिया है जिसमें प्राचीन की व्याप-कता और नवीन का आकर्षण है, जिसमे पूर्व की मादकता और पश्चिम की चैतन्यता है, जिसमे दर्शन की विवेचना और कला का शृगार है। हमे यह जानकर आश्चर्य नही होना चाहिए कि फिट्ज़जेरल्ड के इस अनुवाद को मौलिक अग्रेज़ी के काव्य साहित्य में स्थान मिल चुका है। पालग्रेव की

अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ गायन और गीतों के संग्रह गोल्डेन ट्रेज़री ने इसको स्थान देकर इसे रुबाइयों का संकलन मात्र न मानकर एक संपूर्ण गीत होने की सनद दे दी है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि फिट्ज़जेरल्ड की रुबाइयों की भाषा टकसाली अंग्रेज़ी है और अंग्रेजी काव्य परम्परा के सर्वथा अनुकूल है। यह भी सौभाग्य की बात थी कि जब फिट्ज़जेरल्ड ने अपना अनुवाद शुरू किया था उस समय अंग्रेजी काव्य की भाषा अत्यन्त कोमल, प्रांजल, मधुर और लालित्य-पूर्ण हो गई थी और फिट्ज़जेरल्ड के मित्र और समकालीन कवि टेनिसन की कविता में भाषा का यह गुण दोष की सीमा तक पहुँच गया था। फारसी में रुबाई का छंद छोटा होता है परन्तु फिट्ज़जेरल्ड ने भावों की गंभीरता व्यक्त करने के लिए लंबी पंक्ति वाला छंद पसंद किया था और सो भी आयंबिक पेंटामीटर जो अंग्रेज़ी कविता का आधार छंद है, जिसमें अंग्रेजी कविता के जनक चासर से लेकर टेनिसन पर्यंत कवि गण लिखते आए थे और जिसमें अंग्रेज़ी काव्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ लिखी जा चुकी थीं। रुबाई की तुक योजना जिसमें तीसरी पंक्ति अतुकांत होती है अंग्रेजी काव्य साहित्य के लिए नवीन थी और अतुकांत के पश्चात चौथी में तुक की अप्रत्याशित प्राप्ति में लोगों ने नया सौंदर्य देखा, नए आनंद का अनुभव किया। शब्द चयन में फिट्ज़जेरल्ड का ध्यान केवल शब्दों के अर्थ की ओर न होकर उनकी ध्वनि, उनकी शक्ति और उनकी कुलीनता की ओर भी रहता है। रुबाइयात के प्रथम परिचय पर ही, चाहे हम उसमें सन्निहित भावना से अछूते ही क्यों न रहें, फिट्ज़जेरल्ड, केवल अपनी काव्य कला के बल से हमें मोहित कर लेते हैं। उमर खैयाम की विचारधारा का आधार तो सभी अनुवादकों को एक-सा था, परंतु किसीमें वह प्रतिभा न थी कि उसे अनेक रंगों से रंजित कर उसमें कलकल-छलछल ध्वनि भी भर दे।

भावों और ध्वनियों का सामंजस्य तो इस अनुवाद की अपनी विशेषता है—टेनिसन इस कला में पारंगत थे। Morning in the Bowl of Night Has flung the Stone की ध्वनि में ही यह मालूम होता है जैसे किसी ने निशा-भाजन में पाषाण फेंक दिया है और टनटन की आवाज़ हो पड़ी है। Puts the Stars to Flight में उड़ती चिड़ियों के पंखों की

सरसराहट है And David's Lips are lock t इसे उच्चारण कीजिए और अतिम शब्द पर जैसे मुंह में ताला-सा लग जाएगा । The brave Music of a distant Drum से ऐसा लगता है जैसे ढोल पर दो हाथ पड गए है । Their mouths are stopt with Dust इसे पढते ही ऐसा लगेगा जैसे किसीने मुंह में मिट्टी भर दी है । For in and out, above about, below, इन थोडे-से अधिकरण चिह्नो मे कितना जादू है ! सारा ससार ताल पर नाच गया है 'बाहर-भीतर, ऊपर-नीचे, आस-पास' अनुवाद कर दीजिए और इसकी मिट्टी पलीद हो जाएगी । यह तो पूरी रुबाई उद्धृत करने को जी चाहता है

For in and out, above, about, below,
'T is nothing but a magic shadow show,
Play'd in a Box whose Candle is the Sun,
Round which we Phantom Figures come and go

अतिम तीन पक्तियो में रेखाकित ध्वनियो पर ध्यान दीजिए । नाचने वालो की पग-पायले ताल के साथ छमाछम बज रही है । Conspire to grasp this sorry Scheme of things entire में जैसे दो आदमी सच-मुच में बैठकर कानाफूमी कर रहे है और फुसर-फुसर की आवाज़ आ रही है । Shatter it to bits में ऐसा लगता है कि कोई चीज़ टूटकर चकना-चूर हो गई है । कितने ही ऐसे उदाहरण दिए जा सकते है ।

फिट्ज़जेरल्ड को अग्रेजी साहित्य के स्वाध्याय का व्यसन था । उनका दिमाग कितनी ही सुदर पक्तियो, मधुर पदो, शक्तिपूर्ण शब्दो, और प्राण-मय प्रयोगो का कोष बन गया था । जब उन्होने अपना अनुवाद शुरू किया तो जैसे स्मृति का यह कोष सहसा खुल गया और सहज ही यह सब उनकी लेखनी से उतर-उतरकर उनकी कृति को अलकृत करने लगे । फिट्ज़जेरल्ड का अनुवाद पढते समय अग्रेज़ी की कितनी ही पूर्वोक्तियाँ प्रतिध्वनित होने लगती है । उनकी पहली ही रुबाई पढिए और स्पेंसर की इन पक्तियो से उनकी तुलना कीजिए

Wake now, my love, awake ! for it is time,
The Rosy Morne long since left Tithones bed,

All ready to her silver coche to clyme,

And Phoebus gins to shew his glorious hed[1]

कितनी समता है। into the Dust decend, Dust into Dust, and under Dust, to lie बाइबिल के एक प्रसिद्ध प्रयोग के आधार पर है। पुनरुक्ति मे ऐसा लगता है जैसे मिट्टी की परत पर परत लगती जा रही है। As the Cock crew भी बाइबिल से लिया गया है। एक अनुवादक महोदय ने इसपर 'कुकड़ूँ कूँ' कर दिया है। मुझे तुलसीदास ने बचा लिया। take the present time शेक्सपियर का प्रयोग है, take the cash in Hand मे उसकी प्रतिध्वनि कितनी मूर्त होकर आई है। Cheek of her's to' incarnadine से शेक्सपियर के मैकबेथ के the multitudinous seas incarnadine की याद आ जाती है। उसी प्रकार To-morrow ?—why, To-morrow I may be myself with vesterday's मे उसी नाटक मे मैकबेथ के प्रसिद्ध अभिभाषण To-morrow and To-morrow etc का सस्मरण स्पष्ट है। Sans wine, sans Song, sans Singer, and–sans End ! तो शेक्सपियर के 'ऐज यू लाइक इट' के Sans teeth, sans eyes, sans taste, sans everything का बिल्कुल अनुकरण है, पर अनुकरण मे मूल से अधिक सगीत है। हेरिक की पक्ति है Old Time is still a flying जैसपर मेन की पक्ति है Time is the feather'd thing takes wing फिट्जजेरल्ड इन पक्तियो मे कि

The Bird of time has but a little way

To fly—and Lo ! the bird is on the Wing

उपर्युक्त दोनो कवि साथ साथ बोल उठे है। फिर देखिए हेरिक की यह पक्ति And this same flower that smiles today tomorrow will be dying फिट्जजेरल्ड के The Flower that once has blown for ever dies मे कितनी अधिक आर्त हो गई है ! फिट्जजेरल्ड ने today और tomorrow की जगह once और forever कर दिया है।

---

१ Epithalamion–Spenser

हेरिक ही की इस पक्ति को कि we have short time to stay फिट्ज़-जेरल्ड ने दुहराया है you know how little while we have to stay मगर कितना कर्ण मधुर बनाकर। we Phantom Figures come and go में मिल्टन की एक पक्ति सहसा कान में गूंज उठती है come and trip it as you go, इसी प्रकार Ah, what boots it to repeat मे मिल्टन के प्रसिद्ध शोक गीत लिसिड्स की एक पक्ति बोल रही है Alas, what boots it with uncessant care to tend फिट्ज़जेरल्ड की यह पक्ति nor all thy Piety nor wit Shall lure it back ड्राइडेन की प्रसिद्ध कविता से है, और वैसे ही अर्थ और प्रसग में प्रयुक्त हुई है Not wit, nor piety could fate prevent कीट्स की पक्ति है Still wouldst thou sing and I have ears in vain—और इसीका अनुसरण करती हुई फिट्ज़जेरल्ड की पक्ति चलती है,

How oft hereafter rising shall she look
Through this same Garden after me—in vain

ऐसे ही White hand of Moses मूसा के प्रसिद्ध प्रयोग Nature's white hand से नाता जोडे हुए है। रुबाई मे इसका तात्पर्य प्रकृति के धवल करो से ही है। और, महमूद की जिस enchanted Sword का जिक्र फिट्ज़जेरल्ड ने किया है वह तो मेलोरी के आख्यान में मलिन प्रदत्त किंग आर्थर की तलवार है जिससे अग्रेज़ का बच्चा-बच्चा परिचित होता है। यह है फिट्ज़जेरल्ड के शब्द, पद, पक्तियो और बहुत स्थान पर भावो और विचारों की भी परपरा से चली आती हुई सत्ता, शक्ति और कुलीनता जिसने फ़िट्ज़जेरल्ड के अनुवाद को मौलिक साहित्य की श्रेणी में ला बिठाया है।

अनुवाद की लोकप्रियता के और भी कारण हैं। इसकी भाषा सरल और मुहावरेदार है, पुनरुक्ति, सबोधन, विस्मय आदि के प्रयोग शैली को घरेलूपन, और कथन को वर्तालाप की सजीवता प्रदान करते हैं। रुबाइयाँ लिखित-सी नही कथित-सी मालूम होती हैं। पढने से अधिक सुनने अथवा सुनाने में उनका आनन्द अधिक मिलता है, जो लोग चाहें प्रयोग करके देख लें। अनुप्रास, यमक और शब्द मैत्री के कारण कविता में अद्भुत प्रवाह आ गया है, जिसमें पाठक बरबस बह जाता है। इसमें कोई सदेह नही कि

फिट्ज़जेरल्ड एक सचेत, सुरुचिपूर्ण और श्रेष्ठ कलाकार थे। परतु उनकी कला उमर खैयाम के विचारो को अग्रेजी की कोमल, कात, सभ्रात और सर्वप्रिय पदावली मे भाषातारित करके ही निश्चित नही हुई। इतना उनके कार्य का सबसे सरल भाग था। उन्होने दो बाते और की जो इससे अधिक महत्त्वपूर्ण थी। इसमे पहला कार्य था रुबाइयो का चुनाव और दूसरा था उनका सजाव अर्थात उनका क्रम स्थापित करना। फिट्जजेरल्ड अच्छे अनुवादक तो थे ही, पर सपादक उससे बढकर थे।

मैने ऊपर कहा है कि अनुवाद मे सफलता प्राप्त करना फिट्ज़जेरल्ड के लिए सबसे सरल कार्य था। उसे मै इस प्रकार स्पष्ट करूँगा। प्रत्येक कवि के कथन में दो बातें होती हैं, एक 'जो' वह कहना चाहता है और दूसरी 'जैसे' वह कहना चाहता है, मोटे तौर पर विषय और विधि अथवा भाव और भाषा। फिट्ज़जेरल्ड मे पहली का सर्वथा अभाव था, उनके पास कहने को कुछ भी न था। उनकी कृतियो मे अनुवादो की ही अधिकता है, जो कुछ मौलिक उन्होने लिखा था उसके साथ अपना नाम सबद्ध करने की उनमे हिम्मत न थी। दूसरी पर उन्होने अध्ययन, अध्यवसाय और अभ्यास से धीरे-धीरे किंतु स्थाई अधिकार प्राप्त कर लिया था। उन्हे अपने गुण को प्रकट करने के लिए, अपनी शक्ति का उपयोग करने के लिए किसी आधार, किसी धरातल की आवश्यकता होती थी। उमर खैयाम की रुबाइयो मे भी उन्हे फलक मिल गया था, उन्होने अपनी सारी चातुरी उसपर चित्र बनाने मे लगा दी। और वह भी ऐसा फलक जो जीवन की विशेष परिस्थितियो में उनके हृदय के साथ एक हो गया था। दोनो भाषाओ के जानकार कहते हैं कि तुलना में उमर खैयाम की रुबाइयां फीकी, मामूली और सिलपट मालूम होती हैं।* उमर अपने देश मे विज्ञानी और विचारक के रूप मे

---

*1 Rubaiyat of Omar Khayyam with a foreword by A C Benson, Siegle Hill and Co , London

२ सेंट्सबरी ने अपने 'रुबाइयात उमर खैयाम' शीर्षक लेख मे ५१वीं रुबाई के (जिसे वे रुबाइयों का एवरेस्ट मानते हैं) मूल रूप और अनुवाद की तुलना करके यही सिद्ध किया है।

(The Memorial Volume—Methuen)

प्रसिद्ध थे, कवि के नाम से नही। उनकी कृति मे शुष्कता थी, सादगी थी, सीधापन था। इसको फिट्ज़जेरल्ड की कला ने सरसता दी, शृगार दिया, गति दी। पर फिट्ज़जेरल्ड के लिए यह कोई साधारण सुविधा और सौभाग्य की बात न थी कि उन्हें उमर खैयाम का यह भावना-पटल मिल गया जिस-पर उन्होने मनमानी अपनी चित्रावली अकित कर दी। फलक को तैयार करने में उन्हे कुछ भी न करना पडा था, और उसे अलकृत और सुसज्जित करने के लिए हमें आवश्यकता से अधिक महत्ता नही देनी चाहिए। फ़िट्ज़-जेरल्ड अपनी अपूर्व अभिव्यजना शक्ति से भी यदि उमर की सारी रुवाइयो का अनुवाद उसी रूप मे छोड जाते जिसमे उन्होने वोडलियन लाइब्रेरी की पाडुलिपि प्रोफेसर कोवेल से पाई थी तो, बहुत सभव है, आज उनकी वह ख्याति न होती जो उनके उनमें से कुछ को चुनकर एक विशेष क्रम में रखने से हुई है।

फिट्ज़जेरल्ड ने जितनी रुवाइयो का अनुवाद किया उससे कही अधिक रुवाइयाँ पाडुलिपि में थी। फिट्ज़जेरल्ड के चयन ने उनमे विचारो का मेल दिखाया, भावो की समानता जनाई और मनःस्थिति का ऐक्य स्थापित किया। यहाँ पर यह बतला देना अनुचित न होगा कि फारसी के दीवानो मे कविताएँ अथवा पद विषय क्रम के अनुसार न होकर वर्णानुक्रम से रक्खे जाते हैं। उनकी एकता उनके आरभिक अथवा अतिम अक्षरो मे होती है। ऐसा सग्रह कितना कृत्रिम होता होगा इसे बतलाने की आवश्यकता नही है। विभिन्न अवस्थाओ में लिखे हुए पद जब सग्रह रूप मे आते हैं तो अपना स्वाभाविक स्थान छोडकर एक यात्रिक क्रम से रख दिए जाते हैं। ऐसे समय मे जब कि पुस्तको की छपाई नही हो सकती थी, इस प्रकार की योजना पदो को स्मरण करने मे अवश्य सहायक और सुविधाजनक प्रतीत होती होगी, पर इससे तो इन्कार नही किया जा सकता कि ऐसे सग्रह से किसी कवि के विचार-विकास का कोई पता नही लग सकता। इन रुवाइयो में एक भाव-सूत्र खोजने के लिए हम फिट्ज़जेरल्ड के ऋणी हैं। और फिट्ज़जेरल्ड ऋणी हैं अपनी उस अवसादपूर्ण परिस्थिति के जिसमें उन्हे अपना जीवन अर्थहीन और नैराश्यपूर्ण और ससार शून्य तथा अधकारमय प्रतीत हुआ था। ऐसे समय मे उमर की जो रुवाइयाँ फिट्ज़जेरल्ड को प्रिय हो गई, जो उन्हे

सात्वना देने लगी; जो उनके हृदय की निधि बन गई, जो उनके कठ से रह-रहकर ध्वनित होने लगीं उनमे उनके व्यक्तित्व का एक तागा-सा पिरो गया और वे एक नया रूप और नया स्वर लेकर अन्य रुबाइयो के ऊपर उठ गईं। जडता ने जीवन पाया, कृत्रिमता ने स्वाभाविकता पाई, विभिन्नता को एकता मिली। फिट्जजेरल्ड द्वारा चुने गए फूलो का एक मनोहर गजरा लेकर आप उसकी तुलना उमर के पुष्पो की ढेरी से करना चाहते है ? यदि आप निराश होते हैं तो मुझे आश्चर्य नही है। यह है फिट्ज़जेरल्ड की अपनी देन जो उमर से हमे नही मिल सकती थी। यह है दो कलाकारो के हृदयो का मिलन जो एक तीसरी वस्तु को जन्म देता है जिसकी अपनी स्वतत्र सत्ता है, अपना स्वाधीन जीवन है। सेंट्सबरी ने लिखा है कि यह कृति उतनी ही फिट्ज़जेरल्ड की है जितनी खैयाम की। रूपक को आप ज्यादा दूर न ले जाना चाहे तो मै कहूँगा जैसे सतान उतनी ही माता की कृति है जितनी पिता की। दोनो अपने आप मे असमर्थ थे—उमर फिट्ज़जेरल्ड के बिना निष्प्रभ, फिट्ज़जेरल्ड उमर के बिना निरवलब। दोनो मिलकर स्वय ही नही जी उठे है, एक और सजीव वस्तु के जन्मदाता हो गए है।

मैंने ऊपर कहा था कि अनुवाद के अतिरिक्त फिट्ज़जेरल्ड ने दो बाते और की है, उनमे से एक तो यह हुई। दूसरी बात जो फिट्जजेरल्ड ने की वह यह है कि उन्होने अपनी चुनी हुई रुबाइयो को इस क्रम से रक्खा कि परस्पर स्वतत्र रुबाइयाँ एक दूसरे से सबद्ध हो गई अर्थात् उन्होने मुक्तको को प्रबन्ध काव्य का रूप दिया। फिट्ज़जेरल्ड ने अपने चुने हुए फूलो को एक तरफ से उठाकर गूँथना नही शुरू किया, उसका एक विशेष क्रम रक्खा है। इस क्रम को बिगाड दीजिए उनकी माला की सुन्दरता नष्ट हो जाएगी। हमे माला का रूपक छोडना पडेगा क्योकि फिट्जजेरल्ड ने इन मुक्तको से एक कहानी कही है—कहानी का अरस्तू के अनुसार आदि, मध्य और अवसान होता है। इस कहानी मे भी यही है। हिंदी के दो अनुवादको ने फिट्ज़-जेरल्ड के इस क्रम को बदल दिया है। श्रीयुत रघुवश लाल गुप्त ने बीच मे कुछ उलट-फेर अवश्य किया है, पर कहानी का मुख्य ढाँचा नही छुआ। श्रीयुत बलदेवप्रसाद मिश्र ने एक भोडी बात की है। उन्हे इन रुबाइयो के

क्रम मे कोई प्रवध नही दिखाई पडा। उन्होंने विपयो के कुछ गल्ले वना-कर रुवाइयो को जहाँ-तहाँ डालना शुरू कर दिया है। एक स्थान पर तो दो ऐसी रुवाइयो को अलग कर दिया है जो अपने स्थूल रूप मे भी जुडी हुई है। उनका अपराध सर्वथा अक्षम्य है। कहाँ तो फिट्जजेरल्ड ने मुक्तको का मत्राभिषेक कर उन्हे एक प्रतीकात्मक आख्यायिका का रूप दिया था और कहाँ मिश्र जी ने दो-चार बिलो का अन्वेषण कर उसे 'पुनर्मूषको भव' का अभिशाप दे दिया है।

हाँ, तो फिट्ज़जेरल्ड ने जिस क्रम मे अपनी चुनी हुई रुवाइयो को रक्खा है उससे एक प्रतीकात्मक आख्यायिका वन गई है। रुवाइयात प्रभात से लेकर सध्या तक का गीत है—जीवन प्रभात से जीवन सध्या तक का, जन्म से मरण तक का। दो चरित्र हैं—उमर खैयाम और उनकी प्रेयसी। सूर्य की किरणें पृथ्वी पर फैल गई हैं, खैयाम ने अपनी प्रेयसी को जगाया है। प्रात - काल स्वप्न मे कोई कह गया था, जागो, विलव करने से मधुपान वेला समाप्त हो जाएगी। वाहर देखता है, ससार प्यास की पुकार कर रहा है। प्रकृति वासती साज सजकर खडी है। सहसा अतीत की याद आ जाती है, पर वर्तमान का आकर्षण भी तो एक चीज़ है। अव भी वागो में फूल खिले है, अव भी वुलवुल अपनी सुरीली तान में गा रही है, अव भी हृदय मे अभि-लाषाएँ जागरित हो उठती है। पिछले पश्चात्ताप और विषादो का स्मरण करने से काल-पक्षी की गति तो रुक नही सकती। पर मरने से क्या डरना, वडे-वडे समार छोडकर चले गए है। उनकी याद भी करने से क्या लाभ। प्रेयसी को लेकर वस्ती से दूर चला जाता है, पेड के नीचे बैठ जाता है, सामने मधु का पात्र है, वगल में प्रेयसी है, हाथ मे सरस कविता की पुस्तक है। सहसा ध्यान आता है, ससार में ऐसे लोग भी तो है जो स्वर्ग प्राप्ति की आशा में जीवन को तपमय वना रहे हैं, पर यही कहाँ निश्चय है कि स्वर्ग मिलेगा ही। फूल भी तो यही कह रहा है, जव खिलने का समय है खिलो और जव मुर्झाने का समय आए विखर जाओ। दुनिया में किसकी आशाएँ पूरी होती है, राजा हो या रक, मृत्यु सवको मिट्टी मे मिला देती है। दुनिया तो सराय है, यहाँ से सभी जाते हैं। अपनी झोपडियो की क्या चिंता, शाहो के महल खडहर हो गए। न जाने कितने सम्राट् और सुदरियाँ

जिस ज़मीन पर हम चलते-फिरते हैं, उसके नीचे गडी हुई हैं। विषाद-मय अतीत और अंधकारमय भविष्य की चिंता सहसा हृदय विह्वल कर देती है। मदिरा से अपने को सँभालना चाहता है। प्रेयसी भविष्य में उसकी इच्छा पूर्ण करने को कहती है। किंतु अबोध है वह—यहाँ एक क्षण के बाद की बात भी अनिश्चित है। इसी प्रकार की प्यास लिए हुए कितने प्रिय जन चले गए, पर हाय री जीवन की तृष्णा, हम उसे सँजोए अब भी बैठे हैं। और अगर हम अपनी दुर्बलता संचित किए हुए हैं तो बुरा क्या है, क्या इसका भी अंत एक दिन नहीं हो जाएगा ? फिर भी संसार में कहीं इस दुनिया के लिए और कहीं उस दुनिया के लिए दौड-धूप मची है। दार्शनिकों के समान बात भी करें तो क्या लाभ ? क्या दार्शनिकों का मुँह भी मौत ने नहीं बंद कर दिया ? विद्वानों की बात सुनना बेकार है, निश्चित केवल यह है कि जीवन बीता जा रहा है। फूल जो एक बार खिलता है, सदा के लिए मुर्झा जाता है। तर्कों से कोई तत्व आज तक नहीं निकला। जीवन भर मगज़पच्ची करके यही तो मनुष्य सीखता है कि वह कितना असहाय है। इसका रहस्य नहीं खुलता कि मनुष्य इस संसार में क्यों आता है और क्यों यहाँ से चला जाता है। जन्म-मरण के ध्यान को वह प्याले में डुबा देना चाहता है। यह नहीं कि उसने कभी मनन नहीं किया, पर 'कर्म का चक्र और मनुज की मृत्यु' सदा अनबूझ पहेली रही है। काल और नियति अपना रहस्य कहाँ खोलते हैं ! मनुष्य क्या, सारा विश्व असमर्थता का उच्छ्वास है। प्याली तो उसकी अंतिम शरण है। यह प्याली भी तो दुखद स्मृतियाँ जगाती है। जो कभी सजीव थी आज जड मिट्टी है। कल हम भी ऐसे ही जड हो सकते हैं, आज तो मधु पी लें। पीना, पीना बहुत कहते हैं, पर थोडे से जीवन में कितनी थोडी-सी मदिरा पी सकते हैं। लेकिन बहुत-सी कटु-ताओं से बचने को जो कुछ मिले उसे ही बहुत मानना चाहिए। खैयाम कहता है, मित्रो, मुझे विज्ञानी, दार्शनिक और विचारक मत समझो, मुझमें सब साधारण मनुष्यों की दुर्बलताएँ हैं—तृष्णा है। मुझे भी कहीं शांति मिली है तो बस मदिरा में। मेरे भय और शोक अगर किसीने भुलाए हैं तो इसीने। मैं जो कर रहा हूँ, उसे न्यायोचित ठहराने को किसीसे बहस नहीं करना चाहता। तुम मेरी हँसी उडाओ, मैं तुम्हारी उडाता हूँ। सच

पूछो तो मनुष्य के इन कामो पर वाद-विवाद व्यर्थ है। तत्व है कही ?—सब छाया का-सा खेल है। सबका अत शून्य में होना है, झगडा किस बात का। हमे चुनने की स्वतत्रता कहाँ है—सुरा आई तो सुरा पी ली, गरल आया तो गरल पी लिया। मनुष्य के अधिकार में है क्या, नियति हमें शतरज के मुहरे से अधिक कब समझती है। हमें अपनी इच्छा के अनुसार करने का अवसर कब मिलता है। विधि का लेख कौन मिटा सका है। प्रार्थना करना भी व्यर्थ है। सृष्टि का भाग्य निश्चित हो चुका है, हमारी कौन बिसात। और अगर सब कुछ पहले से निर्णय है तो हमारी रुचि भी निर्णीत हो चुकी है। हमारे लिए, सभव है, यही निर्णय मगलप्रद हो। जब मनुष्य का पथ निश्चित कर दिया गया और उसके मार्ग में बाधाए डाल दी गई तब उसके पतन में जो उसका पाप देखे उसे अन्यायी कहना चाहिए। मनुष्य मे क्या सामर्थ्य है कि पाप करता, अगर उसका निर्माता ही उससे ऐसा कराना न चाहता। मनुष्य का दोष नही, यह तो सारे विधान का ही दोष है। पर मनुष्यो मे सृष्टिकर्ता के विषय में तरह-तरह की राये हैं। कोई उसे दयावान समझता है, कोई अन्यायी, कोई उसे विनोदी समझता है, कोई उदासीन—किसकी बात माने। ससार की तृष्णा से छुटकारा नही मिलता। और जीवन भर पीकर भी प्यास नही मिटती। जगजीवन की इन्ही गुत्थियो को सुलझाते जीवनात आ पहुँचता है। खैयाम अपनी प्रेयसी से कहता है, मरने पर भी मुझे मदिरा मे स्नान कराना। हाय! मै पीने का कितना अरमान लिए जा रहा हूँ। जीवन का अत निकट है, और हाय! मै मद्यप के नाम से ही बदनाम रहा। तोबा कर डालूं पर अपनी मानवीय दुर्बलता के ऊपर कैसे उठूंगा। मदिरा ने मुझे अपयश दिया हो पर कितनी सुखद विस्मृति भी तो इसीने दी। खैयाम देखता है कि वसत जा रहा है, फूल सूख रहे हैं, बुलबुल विदा ले रही है। क्या उसकी भी प्रस्थान-वेला आ गई? हाय अमरता के अभिलाषी को मरण क्यो वरण करना पडता है। मनुष्य में यदि शक्ति होती तो क्या वह इस जगजीवन के विधान को समूल नष्ट न कर देता? जीवन का दिन डूब रहा है। चाँद आकाश मे उठ आया है। पर उसका तो समय आ गया, वह तो जाएगा। चाँद फिर-फिर निकलेगा मगर वह जीवन के पार होगा। ससार मे लोग मधुपान उसी प्रकार

करेगे। विदा के समय एक आशा लेकर जाता है, शायद उसके मरने के बाद उसकी प्रेयसी कभी उसे स्मरण करे।

यह खैयाम और उसकी प्रेयसी का वार्तालाप नही है। यह है जन्म से लेकर मरण तक की मानव की जीवनचर्या। यह है सचेत होने से लेकर ससार से विदा लेने के समय तक की विचार धारा। यह है मानव जीवन के कटु कठोर सत्यो का दर्शन और उसकी प्रतिक्रिया। यह स्वतत्र मुक्तको का सग्रह न होकर एक ऐसी आत्मा की पुकार है जिसे इस ससार के अतिरिक्त कुछ नही दिखाई देता, जो इस ससार से सतुष्ट भी नही है और जो इससे विरक्त भी नही हो सकती। जीवन के प्रभात मे आँखे खोलकर वह इसी ससार की ओर आकर्षित होती है। जितना ही वह इसके समीप जाती है उतनी ही उसकी निराशा बढती जाती है, वह दूसरे ससार का स्वप्न देखती है—पर उसकी दुर्बलता उसे इसी ससार की ओर फिर-फिर झुकाती है और अत मे उसे इसे भी अनिच्छा से छोडकर महान अधकार मे विलीन हो जाना पडता है। खैयाम और उसकी प्रेयसी का वार्तालाप मनुष्य और उसकी तृष्णा का सभाषण है—एक जगह से आरभ होता है, दूसरी जगह समाप्त होता है। यह है फिट्जजेरल्ड की दूसरी देन जिसने उनके अनुवाद को मूल से भी अधिक मूल्यवान बना दिया है। यह है फिट्ज़जेरल्ड का सकलन और सगठन जिसकी महत्ता उनके अनुवाद से कही अधिक है। उन्होने अपनी इस अद्भुत कला से क्या करिश्मा कर दिखाया है इसको रिचार्ड लि गेलीमी[१] के शब्दो मे सुनिए। वे अपने रुबाइयो के सग्रह की भूमिका मे कहते है

Probably the original rose of Omar was, so to speak, never a rose at all, but only petals towards the making of a rose, and perhaps Fitzgerald did not so much bring Omar s rose to bloom again, as make it bloom for the first time The petals came from Persia, but it was an English magician who charmed them into a living rose

---

१ Rubaiyat Omar Khayyam, Published by Grant Richards, London

ऊपर मैंने फूलो और हार के रूपक का प्रयोग किया है। गैलीमी पखु-रियो और फूल का रूपक बाधते है। कहते है उमर का मौलिक काव्य-गुलाब, गुलाब था ही नही, वह केवल पखुरियो के रूप मे था। फिट्जजेरल्ड ने उमर के गुलाब को फिर मे नही प्रफुल्लित किया, उन्होने इसे सर्व प्रथम प्रस्फुटित ही किया। पखुरियाँ अवश्य फारस से आई थी, परतु यह एक अग्रेज़ जादू-गर था जिसने अपने मत्रबल से उन्हे लहलहाते हुए गुलाब के फूल मे परि-वर्तित कर दिया।

ऐसी रुबाइयो को जिनमे विचारो, भावो और परिस्थितियो की एकता आ गई है, जो मुक्तक का रूप छोडकर प्रबध के रूप मे अवतरित हो गई हैं, अगर उमर की बेतरतीब अथवा नकली सिलसिले मे रक्खी हुई रुबाइयो के सामने लाएँ तो दोनो मे आश्चर्यजनक भेद हमे अवश्य ही दिखलाई पडेगा। जिनकी आँखो ने फिट्ज़जेरल्ड की रुबाइयो का यह गुण विशेप नही देखा उन्होने एक बडे साहित्यिक सौंदर्य से अपने को वचित रक्खा है, साथ ही उमर और फिट्जजेरल्ड का अतर उनके लिए सदा रहस्यमय ही रहेगा। गीत की अत्यत कठिन कसौटी रखकर भी जिसने रुबाइयात को 'गोल्डेन ट्रेज़री' में रक्खा उसकी सूक्ष्म दृष्टि और उत्तम परख को सराहना होगा।

दुनिया ने आज फिट्जजेरल्ड के अनुवाद के अनेक गुणो की खोज कर ली है, परतु प्रकाशित होने पर जितनी उपेक्षा इस पुस्तक की हुई थी उतनी शायद ही अन्य किसी अच्छी पुस्तक की हुई हो। सन् १८५७ मे कुछ रुबा-इयाँ फ्रेजर मैगजीन में भेजी गई थी, दो बरस दफ्तर मे पडी रहने के बाद वे यह कहकर लौटा दी गई कि वे छपने योग्य नही है। १८५६ मे २५० प्रतियाँ खानगी तौर से छापी गई और क्वारिच के पास बेचने को भेज दी गई। इसमें रुबाइयो की सख्या ७५ थी। अनुवादक का नाम गायब था। मूल्य ५ शिलिग रक्खा गया था। किताब बहुत दिनो तक नही बिकी, दाम घटाने पर भी नही बिकी, तब पुस्तक विक्रेता ने ऊबकर सडी-गली पुस्तको के ढेर मे उन्हें डाल दिया, जो उसे चाहता एक पेनी देकर ले जा सकता था। रासेटी और स्विनबर्न ने वही से इसे खरीदा। कीचड मे उन्हे कमल दिखाई पडा, अपावन ठौर से कचन मिला। चर्चा चल पडी और पुस्तक की माँग शुरू हुई।

१८६८ मे उस पुस्तक का दूसरा सस्करण प्रकाशित हुआ। इस बीच फिट्ज़जेरल्ड ने रुबाइयो की अन्य पाडुलिपियो को भी देख लिया था, और सभवत दो फासीसी अनुवादो को भी जो उनके सग्रह के प्रकाशन के कुछ पूर्व निकल चुके थे। इस सग्रह मे ७५ के स्थान पर ११० रुबाइयाँ थी, पिछली रुबाइयो मे भी वहुतो में पाठ-भेद किए थे। इस प्रकार दूसरे मस्करण मे रुबाइयात को एक नया ही रूप मिल गया था। प्रथम मस्करण की उपेक्षा पर भी फिट्जजेरल्ड की रुचि रुबाइयो मे वनी रही और वह उनको सजाने-सँवारने और सुधारने मे लगे रहे, इससे उनका अपनी कृति के प्रति गाढा विश्वास प्रकट होता है। उनकी इस लगन मे हम एक आदर्श कलाकार की साधना भी देखते है।

१८७२ मे तीसरा, और १८७६ मे चौथा और अतिम मस्करण प्रकाशित हुआ। रुबाइयो के रूप और क्रम मे परिवर्तन उपस्थित किए गए और उनकी सख्या घटाकर १०१ कर दी गई। चौथा सस्करण भी अनुवादक के जीवनकाल में ही प्रकाशित हो गया था। मैकमिलन कपनी ने चारो मस्करणो को एक साथ प्रकाशित किया है जो तुलनात्मक दृष्टि से रुवाइयात का अध्ययन करने वालो के लिए वडे काम का है। इन विभिन्न सस्करणो मे परिवर्तन, परिवर्धन और सशोधनो को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि फिट्जजेरल्ड अपने अनुवाद को उत्तरोत्तर अधिक परिमार्जित, परिष्कृत और सुष्ठ स्वरूप मे उपस्थित करने के प्रयत्न मे बराबर लगे रहे। और सभवत उन्हे सबसे अधिक सतोष अपने अतिम सस्करण से ही हुआ होगा। परतु अपनी रचनाओ के सबध मे कलाकार की समति ही तो सर्वदा सत्य नही हुआ करती। फिट्ज़जेरल्ड को अपना चौथा मस्करण ही क्यो न सर्वोत्कृष्ट प्रतीत हुआ हो परतु शिक्षित जनता की रुचि ने वह स्थान उनके पहले ही सस्करण को दिया है। कज़ामियन ने अपने अग्रेज़ी साहित्य के इतिहास[1] मे इसी प्रथम सस्करण की ७५ × ४ = ३०० पक्तियो को 'अमर पक्तियो' की उपाधि से विभूषित किया है। जनता ने भी शिक्षितो की सम्मति मे ही सहमति प्रकट की है। परिणामस्वरूप रुवाइयात उमर खैयाम के जो आज अनेकानेक

१ History of English Literature, vol II, p 441

मस्करण प्रचलित है उनमें प्राय सभी इसी प्रथम अनुवाद के होते है ।

मैंने पहले कहा है कि उन्नीसवी सदी के इगलैंड का वातावरण ही कुछ ऐसा था कि उसमे रुबाइयात के भाव और विचार लोगो को सहसा आकर्षित करने लगे और मैंने यह भी कहा है कि इगलैंड क्या सारा योरुप आज भी उस वातावरण से वाहर नही निकल सका। मै यहाँ पर एक वात और जोड देना चाहता हूँ कि विश्व की सभ्यताओ में सबसे अधिक नवीन, सजीव और मनमोहक होने के कारण आज समस्त ससार का ध्यान इसकी ओर खिच गया है। मै लिखने जा रहा था 'सभ्य ससार का ध्यान', पर आज तो सभ्य वही है जो इस वृहत्तर योरुप की छाया मे आ गया है। और जहाँ-जहाँ इस वृहत्तर योरुप की छाया गई है वहाँ-वहाँ अपने साथ वह वातावरण भी ले गई है जिसमे इस जीवन के पार जो कुछ भी है उसकी सत्ता का लोप हो जाता है, जिसमें इस ससार को भोगने की लालसा सौ गुना, हजार गुना वढ जाती है, जिसमें इस ससार मे जो कुछ भी प्राप्य है उसके लिए पग-पग पर सघर्ष करना पडता है और जिसमें मनुष्य को अपने दीन, दुर्वल और निरुपाय होने का आभास पल-पल पर होता है। इस वातावरण में मनुष्य की वुद्धि इतनी जागरूक हो जाती है कि वह अपने को स्वप्नो मे नही विलमा सकता और उसकी आकाक्षाए इतनी तीव्र हो उठती हैं कि उसे वास्तविकताओ से असतोष हो जाता है। इसमे मनुष्य विश्वास का मूल्य देकर तृष्णा को खरीदता है लेकिन जव उसे तृप्ति के अधरो से छूना चाहता है तो वह मृगतृष्णा वनकर उसे दूर—सुदूर ले जाती है और अत मे उसे थकित, पतित और पराजित देखकर उसपर अट्टहास करती है। इसमें अतरात्मा की अमूल्य निधियो पर ताला पड जाता है और मनुष्य जव उसे खोलने का प्रयत्न करता है तो उसे ऐसा अनुभव होता है जैसे उसकी कुजी वह कही अज्ञात रूप मे गिरा आया है। जिनको वह अपनी प्रार्थना सुना सकता था ऐसी दैवी शक्तियो मे श्रद्धा खोकर वह मानवी सवेदना पाने के लिए अपने चारो ओर देखता है पर किसीको अपनी ओर ध्यान देते न देखकर वह लाचार होकर अपने ही ऊपर दया करने को वाध्य होता है। और अत मे अपने दु ख, दैन्य और निराशा से मुक्ति पाने मे अपने को सर्वथा असमर्थ पाकर इन्हींको दुलारने लगता है, इन्हींको आदर्श वना लेता है। इस कथित

सभ्य ससारव्यापी अधकार, अविश्वास, अनास्था, अतृप्ति, अशाति, अस्थिरता और अनिश्चय की निश्चित आवाज है 'रुबाइयात उमर खैयाम' ।

उन्नीसवी सदी मे, इग्लैड मे विज्ञान की आश्चर्यजनक उन्नति हुई। चौदहवी और पद्रहवी सदी मे मनुष्यो की शिक्षा-दीक्षा मे जो स्थान धर्म का था वही स्थान उन्नीसवी सदी मे विज्ञान ने ले लिया। शिक्षा के प्रसार, मुद्रण कला की उन्नति और मुद्रित पत्र, पत्रिकाओ, पुस्तको के प्रचार के केंद्रो की वृद्धि ने विज्ञान को सर्वसाधारण की मानसिक चेतना का एक महत्त्वपूर्ण अश बना दिया। धर्म ने शुरू मे ही विज्ञान को सदेह की दृष्टि से देखना आरभ किया था। कितने ही वैज्ञानिको को अपने सिद्धातो के लिए प्राणो की बलि देनी पडी थी, परतु जो बात धर्म के लिए ठीक थी वही विज्ञान के लिए भी ठीक निकली—शहीद का खून व्यर्थ नही जाता। एक समय ऐसा भी आया जब कि वैज्ञानिको ने निर्भीकता से अपने विचारो का प्रचार करना आरभ किया और उन्होने परपरागत श्रद्धा, विश्वास और रूढियो की जडो को हिला दिया। वैलेस, स्पेसर, डारविन, टिंडेल और हक्सले के लेखो ने लोगो के दिमाग में एक अजीब तहलका मचा दिया। बाइबिल द्वारा प्रचारित ईश्वर, जीवात्मा, स्वर्ग, सृष्टि, धर्म और आचार को लोग अविश्वास की दृष्टि से देखने लगे। कुछ लोगो ने अधविश्वास पर आश्रित रोमन कैथलिक धर्म की शरण ली पर अधिकतर लोग नास्तिक अथवा अनिश्चयवादी हो गए—हक्सले ने अपने लिए 'ऐगनास्टिक' शब्द की खोज की और प्राय सभी जागरूक बुद्धिवालो का यह विशेषण बन गया। पारलौकिकता यदि जीवन से लुप्त नही हुई तो इसका स्थान नगण्य अवश्य हो गया। यह विज्ञान का नकारात्मक अथवा सहारक कार्य था।

विज्ञान की क्रियाशीलता का एक सकारात्मक पक्ष भी था। इसने प्राकृतिक शक्तियो का अध्ययन कर उनपर अधिकार करना आरभ किया। सूक्ष्म ज्ञान के स्थूल प्रयोग और उपयोग आरभ हुए। विज्ञान ने कहा कि हमने तुम्हारा स्वर्ग अवश्य छीना है पर हम तुम्हारे लिए इसी पृथ्वी-तल पर स्वर्ग की सारी सुविधाएँ एकत्र करने मे समर्थ है। परलोक आंखो से ओझल हो चुका था। भौतिक ससार को विज्ञान अपने नित नूतन अन्वेषणो और आविष्कारो से मनमोहक और आकर्षक बना रहा था। मनुष्य इस

ससार के अधिक से अधिक सुखो को अपने अधिकार मे करने के लिए लालायित हो उठा। जीवन के पार तो कुछ भी नही है, जो कुछ है वह यही है, हमारा जीवन इसीको भोगने का अवसर है—इन्ही विचारो ने उसकी तृष्णा को अनियन्त्रित और उसके प्रयत्न को जीवन-मरण सग्राम का रूप दे दिया। ऐसे सामाजिक सगठन में जहाँ व्यक्ति के लिए अपने विकास और वृद्धि की कोई सीमा नही है, किसी श्रेणी अथवा वर्ग का विज्ञान और उसकी विभूतियो पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना और उनके लिए लालायित समाज का शोषण करना स्वाभाविक वात थी। इस श्रेणी अथवा वर्ग को अपने आचार के सिद्धात विज्ञान से मिल गए Struggle for existence and Survival of the fittest—जीवन के लिए सग्राम, और वली के लिए विजय। ससार ने मनुष्य की तृष्णा को उभारकर तृप्ति के मार्ग में सघर्ष घर दिया। असफलता, निराशा, अशाति, पराजय और पलायन उसके भाग्य में पडे। जिन्हे सफलता कुछ मिली भी उन्होने सुख शायद जाना हो पर शाति नही जानी, सतोष नही जाना। विज्ञान से मनुष्य की प्रत्याशाए पूरी नही हुई—सच तो यह है कि विज्ञान ने मानव के चिरतन सुख और शाति के मूल स्रोतो को ही सुखा दिया। इतना ही नही, उसने नई विष की वेले लगा दी। विज्ञान पृथ्वी पर कल्पतरु लगाने आया था, उसने मनुष्य से उसके हरे-घने वृक्षो की छाँह भी छीन ली ! विज्ञान की फैक्ट्रियो से निकला हुआ धुआँ कारलाइल, रस्किन, न्यूमन आदि लेखको के स्वरो की अवहेलना करता हुआ सारे इगलैंड पर फैल गया और उन्नीसवी सदी के अतिम भाग में उसने ऐसा दमघोट वातावरण उपस्थित कर दिया जिसमें लोग ऐसी भावनाओ और विचारो में प्रश्रय पाने को बाध्य हुए जिससे फिट्ज़जेरल्ड, थामसन, गिसिंग, हार्डी, हाउस मन आदि की वाणी ओतप्रोत है। लेंबार्न के शब्दो में फिट्ज़जेरल्ड ने निश्चय ही इस आनेवाले युग की मन स्थिति की भविष्यवाणी की थी—और कला की माँग का उन्होने जो सत्कार किया था उसके पुरस्कारस्वरूप उन्हे जो लोकप्रियता मिली वह किसीको नही मिली।

ऊपर मैंने दिखलाया है कि १९३०-३५ के बीच भारतवर्ष की परिस्थिति ही कुछ ऐसी थी जिसमें वह रुबाइयात का स्वागत करने को तैयार

था। सभव है इन कारणो मे एक यह भी हो कि हम स्वय वृहत्तर योरुप की कृत्रिम छाया मे आते जा रहे थे। जो विश्वास के साथ 'नैन छिन्दति शस्त्राणि, नैन दहति पावक, सुख दु खे समे कृत्वा' आदि अथवा 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' कह सकते हैं उनके लिए रुबाइयात मे शायद ही कुछ आकर्षण हो। इसके विपरीत जो लोग शिक्षा-सस्कार, सहानुभूति, या अन्य प्रभावो के कारण अपने को योरोपियन अशाति के वातावरण में लाएँगे उन्हे अवश्य रुबाइयात मे अपनी भावनाओ की प्रतिच्छाया दिखाई देगी।

रुबाइयात को प्रकाशित हुए लगभग सौ वर्ष हो रहे हैं, पर इसकी आधुनिकता आज भी वनी है। प्रोफेसर चार्ल्स इलियट नार्टन ने लिखा है, "अपनी अग्रेज़ी पोशाक मे यह ऐसी प्रतीत होती है कि जैसे यह उस पीढी की व्यग्रता और उद्विग्नता की नवीनतम अभिव्यक्ति हो जिसमे हम स्वय पैदा हुए है।" हमारे आश्चर्य की सीमा नही रहती है जब हम यह सोचते हैं कि ये रुबाइयाँ ग्यारहवी या वारहवी शताब्दी मे लिखी गई थी और ऐसे वातावरण मे जो आधुनिक योरुप के वातावरण से विल्कुल भिन्न था। स्वभावतया हमारे मन मे कई ऐसे प्रश्न उठते है। क्या यह सव उमर खैयाम की रुवाई मे है जो फिट्जजेरल्ड ने हमे अपने अनुभव से बनाया है ? यदि है तो क्या खैयाम का युग भी ऐसा ही था जिसका हमारे आधुनिक युग से साम्य रहा हो ? क्या जैसे कहते है कि इतिहास अपनी पुनरावृत्ति करता है उसी तरह मानसिक अस्थिरता के युग भी अपने को दुहराते है ? अथवा क्या खैयाम इतने भारी द्रष्टा थे कि उन्होने ८०० वर्ष पूर्व मानव जाति पर आनेवाली अशाति का साक्षात्कार कर लिया था ? अन्यथा इस साम्य का रहस्य क्या है ?

मै अपनी भूमिका मे जिन विषयो पर कहना चाहता था उससे यह बाहर की वात है। फिट्जजेरल्ड के अनुवाद से ही हिंदी मे रूपातर करते हुए भी—सेहर साहव उसमे नही आते—अनुवादको ने फिट्जजेरल्ड के वारे मे नाममात्र और उमर खैयाम के विषय मे बहुत कुछ कहा है। मैने अपने ध्येय मे यह रक्खा था कि मै फिट्जजेरल्ड के वारे मे विस्तार से और उमर खैयाम के वारे मे नाममात्र कहूँगा। फिर मुझे यह भी ध्यान है कि

उमर ख़ैयाम के विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है और मैं उन्ही बातो को दुहराने के अतिरिक्त कुछ नया नही कह सकता हूँ। ऊपर के प्रश्नो का यदि मैं उत्तर दूं भी तो वह मेरा प्रमाद होगा क्योंकि फारसी का मेरा ज्ञान नही के बराबर है। इन विषयो पर जो दूसरो का लिखा हुआ मैंने पढा है उससे मैं कोई अपनी निश्चित धारणा नही बना सका। ऊपर के कुछ प्रश्नो पर मैंने अपनी रीति से विचार किया है और कुछ पर दूसरो के कथन को सभवत ठीक कहकर मैंने फिलहाल अपने मन को शात कर लिया है। मुझे पता नही कि मेरे विचार अधिक सचेत स्वाध्यायी को कहाँ तक सतोष देंगे, परतु साधारण पाठक के लिए इन गुत्थियो को, सुलझाने में न सही तो समझने में, मेरा ध्यान है, वे अवश्य सहायक होगे।

उमर ख़ैयाम का जन्म ग्यारहवी शताब्दी में हुआ और मृत्यु बारहवी शताब्दी में हुई। उनके जीवन और काव्य के विषय में ससार का कौतूहल उन्नीसवीं और बीसवी सदी मे बढा। उन्हीके कहने का ढग उधार लें तो कह सकते हैं कि यदि वे कल के सात हज़ार वर्षों के साथ नही तो सात सौ वर्षों के साथ तो अवश्य मिल चुके है। इन सात सौ वर्षों मे फारस देश में कितनी हलचलें मची, कितनी राज्य-क्रातियाँ हुईं, कितने आक्रमण हुए और कितने किए गए; कितनी लडाइयाँ और कितनी सधियाँ हुईं—और, कितने सुल्तानो की मीनारें ढह गई, कितने जमशेदो के दरबार खँडहर हो गए, कितने क़ैकुबाद और क़ैखुसरो आए और चले गए और कितने विद्वान और पडित जग और जीवन की कहानी बूझकर मौन हो गए। हम आज चिर परिवर्तनशील इतिहास के सात सौ बरसो को भेदकर उमर ख़ैयाम और उनके समय का फिर से साक्षात्कार करना चाहते है। इस कार्य मे हमारी सहायता करने वाले जो कुछ लेखादि मिलते हैं वे अपर्याप्त है और प्राय हमें अनुमान और कल्पना की शरण में जाना पडता है। हमारे लिए विशेष चिंता की बात तो यह है कि ख़ैयाम के जीवन के जिस पक्ष में हमें सबसे अधिक कौतूहल है उसके विषय में अतीत उतना ही उदासीन है। उन्नीसवी सदी के पूर्व उमर की गणना दार्शनिको मे, गणितज्ञो में, ज्योतिषियो में थी, कवियो में नही। फिट्ज़जेरल्ड ने जब उनकी रुबाइयो का अनुवाद किया तो उनके नाम के साथ उन्हें जोडना पडा—'फारस के ज्योतिषी-कवि', ज्योतिषी पहले, कवि

वाद को। सभवत उमर ने अन्य विषयो मे जो कुछ भी लिखा था वह तो सबका सब प्राप्त हो गया है पर उनकी कविता आज भी अधकार के गर्भ मे पडी हुई है। उनकी रुबाइयो की जो पाडुलिपियाँ खोजी गई हैं उनमे सबसे छोटी मे लगभग १० और सबसे बडी मे लगभग १००० रुबाइयाँ हैं। विभिन्नता इन पाडुलिपियो मे इतनी है कि आज लगभग ३००० रुबाइयाँ उमर के नाम से सबद्ध हैं। इनमे से कितनी रुबाइयाँ उमर की स्वय लिखी हुई हैं, कोई निश्चय से नही कह सकता। कुछ लोग यह समझते हैं कि शायद उमर ने और भी लिखा हो, खोज जारी है और प्राय पुरानी रुबाइयो मे जिनके भी लेखक का पता नही लगता वे उमर के गल्ल मे डाल दी जाती हैं।

उमर ने लम्बी उमर पाई थी, इसमे सदेह नही, और उमर को यदि लिखने का व्यसन था तो उन्होने अपने यौवन से अपनी वृद्धावस्था तक समय-समय पर अपने अनुभवो और विचारो को वाणी दी होगी। उमर के व्यक्तिगत जीवन के उथल-पुथल को हम नही जानते, पर उमर स्वाध्यायी थे, विचारक थे, और इतना तो निर्विवाद माना जा सकता है कि कोई विचारक अपने समस्त जीवन मे एक ही स्थान पर जड-सा नही जमा रहता, वह दिनानु-दिन बढता है, विकसित होता है, बदलता है। उमर का लिखा जो कुछ भी हमें प्राप्त है क्या वह उसी क्रम मे है जिसमे उन्होने लिखा होगा ? फारसी के दीवानो को लिखने की कृत्रिम वर्णानुक्रम विधि ने इस महत्वपूर्ण बात को हमसे सदा के लिए छिपा लिया है। उमर को समझने के लिए इतना ही जानना पर्याप्त नही है कि फलाँ रुबाई उनकी लिखी हुई है या नही—यह भी जानना ज़रूरी है कि फलाँ रुबाई उन्होने अट्ठारह बरस को उमर मे लिखी थी या अस्सी बरस की अवस्था मे, और यह तो बताने की शायद ही जरूरत हो कि कोई भी सवेदनशील मनुष्य जो अट्ठारह बरस की उमर मे लिखता है वही अस्सी बरस की उमर में नही लिखता। हम आज, उमर ने जो कुछ भी लिखा है, उसे बिना किसी तरतीब के सामने रखकर उनमे विरोधी सिद्धान्तो, विचारो और मतव्यो पर अचरज कर रहे हैं। हम पूछते हैं, उमर यदि एक विचार के थे तो उन्होने दूसरे रूप मे अपने को कैसे अभिव्यक्त किया ? हम शब्दो के अर्थों को तोड-मरोडकर उनके विचारो की एकता

स्थापित करना चाहते हैं। हम वर्धमान उमर खैयाम की कल्पना नही करते। हम उमर खैयाम को मनुष्य के बजाय मूर्ति समझ बैठे हैं। उमर के सग्रह-कर्त्ता वर्णानुक्रम से विषयानुक्रम पर आ गए हैं पर विकासमान उमर खैयाम का यथोचित सग्रह समयानुक्रम का ही हो सकता है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, उमर की रुबाइयो का कोई ऐसा सग्रह नही किया गया। कार्य कठिन है और व्यक्तिगत झुकाव से कुछ का कुछ हो जाने की सभावना भी है परतु यदि इस प्रकार का कोई सग्रह तैयार किया जाए तो वह बडा रोचक होगा। अभी थोडे ही दिन हुए अग्रेजी में उमर खैयाम के जीवन को आख्यान का रूप देने का प्रयोग किया गया है।[1] उमर की कविता का कोई प्रेमी किसी दिन उनकी रुबाइयो को अवश्य इस प्रकार रक्खेगा कि जिससे उमर के विचारो और भावो का क्रमश विकास प्रतीत हो। उस समय बहुत-से ऐसे विवाद, कि वे नास्तिक थे या आस्तिक, परोक्षवादी थे या प्रत्यक्षवादी, पक्के मुसल्मान थे या सूफी या रिंद अथवा और कुछ, समाप्त हो जाएगे। क्योकि इसान की जिंदगी में नास्तिक और आस्तिक दोनो बनने के लिए स्थान है, मुसल्मान और काफिर दोनो बनने के मौके हैं, सूफी और रिंद दोनो बनने के अवसर हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक हम उमर खैयाम की सब रुबाइयो को निश्चयपूर्वक न जान लें, और साथ ही उनका रचना-क्रम न स्थापित कर लें तब तक उनके सिद्धान्तो के विषय में हमें कुछ कहने का अधिकार नही है—और ये दोनो बातें अभी हम नही कर सके।

हमने प्रश्न उठाया था, क्या यह सब उमर की रुबाई में है जो फिट्ज़-जेरल्ड ने हमें अनुवाद से बताया था ? फिट्जजेरल्ड ने बोडलियन लाइब्रेरी की पाडुलिपि की १५८, और एशियाटिक सोसाइटी की पाडुलिपि की ५१६ रुबाइयो में से केवल ७५ रुबाइयो को हमारे सामने रक्खा है। अग्रेज़ी में कहावत है कि Even the Devil can quote the scripture ६७४ रुबाइयो में से केवल ७५ रुबाइयो को लेकर, और वह भी सब अपने विशुद्ध रूप मे नही, ऐसी भी बात कही जा सकती है जो उमर खैयाम के मूल

---

१ Persian Mosaic by Harold Lamb

सिद्धात के बिल्कुल विपरीत हो। ऐसे समालोचक कम नही है जिनकी यह राय है कि फिट्जजेरल्ड ने उमर खैयाम को विकृत रूप मे पश्चिम के सामने रखा है। जान पेन[१] ने तो यहाँ तक कहा है फिट्जजेरल्ड की रचना 'साहित्यिक सदाचार के विरुद्ध पाप है।'

यदि खैयाम की कविता मे उनका व्यक्तित्व निश्चित और उनकी मन-स्थिति निर्धारित होती तो हम भी उससे विपरीत होने पर फिट्जजेरल्ड के कार्य को साहित्यिक सदाचार के प्रति अन्याय समझते। पर फिट्जजेरल्ड ने तो उस स्थान पर एक विशेष मन स्थिति और व्यक्तित्व की स्थापना की जहाँ उसका सब प्रकार अभाव था। क्या यह कम महत्वपूर्ण बात है कि वह मन स्थिति आनेवाले युग की मन स्थिति थी? फिट्जजेरल्ड ने अपने अनुवाद से जो हमें दिया है वह उमर खैयाम मे है भी और नही भी है, बिल्कुल तो नही पर बहुत कुछ उसी तरह जैसे प्रत्येक वाक्य शब्द-कोष मे मौजूद है और नही भी है। वाक्य के सब शब्द कोष मे है, पर वाक्य नही है।

अब हम दूसरे प्रश्न को उठाते है। क्या खैयाम का युग भी ऐसा था जिसमे हमारी बीसवी सदी की अशाति, अविश्वास, अनस्थिरता और असमर्थता के लिए स्थान था? ११ वी सदी मे फारसी के ऊपर इस्लाम की विजय पूर्ण हो चुकी थी। जिन जातियो ने कोई धार्मिक एकता न जानी थी, जिनका आचार-विचार केवल भौतिक परिस्थितियो और सुविधा अथवा असुविधाओ पर अवलबित था उन्होने इस्लाम को स्वीकार किया और उसीके कट्टर पक्षपाती बन गए। परतु फारस दूसरे ही प्रकार का देश था। सिकदर के हमले के साथ अफलातून की विचार धारा फारस मे आ चुकी थी, ईसा के ६ सौ बरस पहले उत्तरी-पश्चिमी भारत के कुछ भाग फारसी साम्राज्य के प्रात मान जाते थे और इस प्रकार भारतीय वेदात दर्शन से भी उसका परिचय हो चुका था। इसी प्रकार चीनी और रोमन आक्रमणो से कानफ्यूशियस और ईसा के धर्म से भी फारस अपरिचित न था। सातवी शताब्दी मे, जब कि इस्लाम ने फारस मे प्रवेश किया, उसका

---

१ The Quatrains of Omar Khayyam by John Payne, Villon Society, London, 1898

अपना राष्ट्रीय धर्म ज़ोरोस्ट्रियन, जिसे विद्वान लोग आर्यों के प्राचीन वैदिक धर्म का ही विकृत रूप कहते हैं, अपनी परपरा स्थापित कर चुका था और अपनी प्रारभिक असहिष्णुता भूल गया था। फारस प्राचीन सभ्य ससार का समरागण ही न था, क्रय-विक्रय का स्थान भी था, प्राचीन व्यापार मार्ग जो भारत से यूनान और रोम को जाता था वह फारस के प्रसिद्ध नगरो में होकर गुजरता था— निशापुर, जहा उमर ख़ैयाम का जन्म हुआ था, इसी मार्ग पर स्थित था। इस प्रकार फारस अन्य देशो के और मुख्यतया भारत के दार्शनिक विचारो से परिचित ही न था वरन उसके पडित और प्रचारक भी वहाँ मौजूद थे। ऐसे शिक्षित-दीक्षित, सस्कृत और उदार देश के ऊपर इस्लाम अपने प्रारभिक जोश-खरोश के साथ एक भयकर तूफान के समान आ गया और कुछ समय तक ऐसा आभास हुआ जैसे उसने उसके प्राचीन धर्म और सस्कार को आमूल नष्ट कर दिया है। परन्तु फारसियो का वह उदार धर्म मरा नही था, दब गया था, और कालातर मे सूफीवाद का रूप लेकर उठा। इसपर यूनानी और भारतीय एव फारसी विचार की छाप स्पष्ट थी, साथ ही कुछ तत्व इस्लाम से भी लिए गए थे। परन्तु विद्वानो का मत है कि इस सूफीवाद का अधिक सबध वेदात के अद्वैतवाद से था और वस्तुत यह इस्लामी सिद्धान्तो के विरुद्ध फारस के राष्ट्रीय उदार धर्म का इन्कलाब था। दार्शनिको ने इस वाद का कर्कश स्वर उठाया होता तो वे तलवार के घाट उतार दिए गए होते। फारस की चतुर अतरात्मा ने कवियो के मधुर कठ मे बैठकर इस क्राति का गीत गाया। धर्म और साहित्य के बीच जैसा विपर्यय फारस मे फैला वैसा शायद ही किसी अन्य देश में फैला हो। दूर जाने की आवश्यकता नही है। काव्य मे फ़ारसी की परपरा को अपनाने वाले भारत के मुसलमान कवियो को देख लीजिए। इस्लाम विरागात्मक धर्म है, शराब को हराम समझता है, बुतपरस्ती को कुफ्र। मुशायरे मे बैठकर मुसलमान शायर, जाहिद को गाली देता है, शराब के गुण गाता है और बुतपरस्त होने पर गर्व करता है।

इस्लाम विरागात्मक धर्म था और फारस की मिट्टी की पुकार थी रागात्मकता की ओर। पहाडो से घिरी घाटियाँ, हरी उपजाऊ भूमि, फलो से लदे हुए बाग़, फूलो से सजे हुए खेत, स्वच्छ-निर्मल जल के चश्मे, और

शीतल, मद, सुगन्ध वायु मे गूंजते हुए बुलबुल के तराने—यह सब उस विरागात्मकता का व्यग करते थे। जब फारस की अतरात्मा कवियो के कठ मे अपना क्राति गीत गाने को उठी तब इस भूमि ने भी गुल और बुल-बुल, बहार और शराब आदि के विद्रोही पतीक प्रदान कर उनकी सहायता की। उन प्रतीको के दुहरे अर्थों ने एक ओर तो जन-साधारण की स्वाभाविक दुर्बलता को थपकी दी और दूसरी ओर मनीषियो के आध्यात्मिक सिद्धान्तो को प्रोत्साहित किया। और इस प्रकार यह क्राति देश की सस्कृति का एक अग बन गई। फारस के मस्तिष्क के सचेत केंद्र मे था अपने नए धर्म के लिए अधविश्वास और अचेत केंद्र मे अपनी रागात्मिका धरती की ओर आकर्षण, सचेत मे थी नए अपनाए हुए इस्लाम की कट्टरता और अचेत मे परपरा से आई हुई सभ्यता की उदारता। साधारण जनता इन विरोधी वृतियो को एक साथ लेकर चलती होगी और उमे इस विरोध का आभास भी नही होता होगा पर विचारको को इस विरोध का ज्ञान और तज्जनित अशाति का अनुभव पल-पल पर होता होगा। उमर खैयाम इस दूसरी श्रेणी के लोगो मे से थे।

निशापुर, जिसका पुराना नाम ईरान शहर—आर्यन शहर—आर्य नगर था और जो खुरासान—क्षुरासन—सूर्यासन प्रदेश मे स्थित था, फारस के नगरो का नमूना था। प्रकृति ने अपने हाथो से सजाकर इसे इतना रमणीय, सुन्दर और मनोमोहक बना दिया था कि अनवरी ने लिखा था कि पृथ्वी पर यदि कही स्वर्ग है तो वह निशापुर मे है। शिक्षा और सस्कृति का भी वह केंद्र था, नगर मे कई महाविद्यालय, बहुत-से पुस्तकालय तथा कितने ही विद्वान थे। साथ ही भारत और यूनान के व्यापार मार्ग पर स्थित होने के कारण दोनो देशो की विदग्ध विचार धाराओ से वह सदियो से अभिसिंचित होता आया था। जान पेन का कथन है कि वहा पर कई ऐसे पथ थे जो वेदातवादी थे। केवल राज्य धर्म इस्लाम के आतक से अपनी रक्षा करने के लिए उन्होने उसके कुछ बाह्य उपकरणो को स्वीकार कर लिया था। और, निशापुर मे इस्लाम का आतक भी था, इस्लाम की कट्टरता भी थी, इस्लाम की असहिष्णुता भी थी।

इसी निशापुर मे उमर खैयाम का जन्म हुआ, शिक्षा-दीक्षा हुई और

जीवन का अधिक समय बीता। निशापुर के वातावरण मे जितनी भी विरोधी वृत्तियाँ थी उमर ने उन सबका अनुभव किया और उनकी कविता उन्ही वृत्तियो के सघर्ष का परिणाम है। जिस युग मे धर्म का सामाजिक जीवन से अत्यत घनिष्ठ सबध था, हम किसी जागरुक और विचारवान आत्मा की अशाति, अस्थिरता और अनिश्चय की उद्विग्नता का अनुमान भली भाँति कर सकते है। यदि यह सघर्ष उमर के जीवन भर चलता रहा तो फारस भर में उनसे अधिक व्यग्र, विचलित और उदास कोई भी मनुष्य नही था। रुबाइयो का रचनाक्रम न जानने से यह कहना कठिन है कि उनका विकास किस प्रकार हुआ होगा, फिर भी मेरी एक कल्पना है। अपने यौवन काल मे जब कि मनुष्य की प्रवृत्तियाँ स्वय ही रागात्मक होती है एक ओर तो फारस की विलासमयी भूमि ने उन्हे अपनी ओर खीचा होगा और दूसरी ओर उनके विज्ञान, ज्योतिष और दर्शन के नवीन ज्ञान के अभिमान ने उन्हे नास्तिक और इहलोकवादी बना दिया होगा। इस समय वे 'मदिरा और मदिराक्षी', 'सुरा और सरक' की ओर झुके होगे और ऐसा करने से अवश्य ही वे सूफियो और कट्टर मुसल्मानो के कोपभाजन बने होगे, जिनमें से कुछ ने उन्हे मार डालने तक की धमकी दी थी।[१] उमर की कितनी ही रुबाइयो में इसका सकेत मिलेगा। लेकिन उमर ऐसे विचारवान को प्याली और प्यारी सदा नही लुभा सकती थी। साथ ही यह आभास हुआ होगा कि यह तृष्णा बुझाने के प्रयत्न मे बढती ही जाती है। प्रौढ़ावस्था पहुँचने पर यौवन का ज्वर हल्का हुआ होगा और ज्ञान की कथा भीगकर भारी हुई होगी। उस समय उमर स्वय सूफ़ी अथवा अद्वैतवादी हो गए होगे। जान पेन की सम्मति है कि अपने जीवन मे एक समय उमर उपनिषदो के सिद्धातो के पालक ही नही उनके प्रचारक भी थे और उनकी बहुत-सी रुबाइयो की व्याख्या केवल वेदात के सिद्धातो पर हो सकती है।[२] आगे

---

१ See Introduction to The Nectar of Grace by Swami Govind Tirtha, Kitabistan, 1941.

२ See also Quatrains from Omar Khayyam by F York Powell, Howard Wilford Bell, Oxford

शीतल, मद, सुगन्ध वायु मे गूंजते हुए बुलबुल के तराने—यह सब उस विरागात्मकता का व्यग करते थे। जब फारस की अतरात्मा कवियो के कठ से अपना क्राति गीत गाने को उठी तब इस भूमि ने भी गुल और बुल-बुल, बहार और शराब आदि के विद्रोही प्रतीक प्रदान कर उनकी सहायता की। उन प्रतीको के दुहरे अर्थों ने एक ओर तो जन-साधारण की स्वाभा-विक दुर्बलता को थपकी दी और दूसरी ओर मनीषियो के आध्यात्मिक सिद्धान्तो को प्रोत्साहित किया। और इस प्रकार यह क्राति देश की सस्कृति का एक अग बन गई। फारस के मस्तिष्क के सचेत केंद्र मे था अपने नए धर्म के लिए अधविश्वास और अचेत केंद्र मे अपनी रागात्मिका धरती की ओर आकर्षण, सचेत मे थी नए अपनाए हुए इस्लाम की कट्टरता और अचेत मे परपरा से आई हुई सभ्यता की उदारता। साधारण जनता इन विरोधी वृतियो को एक साथ लेकर चलती होगी और उसे इस विरोध का आभास भी नही होता होगा पर विचारको को इस विरोध का ज्ञान और तज्जनित अशाति का अनुभव पल-पल पर होता होगा। उमर खैयाम इस दूसरी श्रेणी के लोगो मे से थे।

निशापुर, जिसका पुराना नाम ईरान शहर—आयन शहर—आर्य नगर था और जो खुरासान—क्षुरासन—सूर्यासन प्रदेश मे स्थित था, फारस के नगरो का नमूना था। प्रकृति ने अपने हाथो से सजाकर इसे इतना रम-णीय, सुन्दर और मनोमोहक बना दिया था कि अनवरी ने लिखा था कि पृथ्वी पर यदि कही स्वर्ग है तो वह निशापुर मे है। शिक्षा और सस्कृति का भी वह केंद्र था, नगर मे कई महाविद्यालय, बहुत-से पुस्तकालय तथा कितने ही विद्वान थे। साथ ही भारत और यूनान के व्यापार मार्ग पर स्थित होने के कारण दोनो देशो की विदग्ध विचार धाराओ से वह सदियो से अभि-सिंचित होता आया था। जान पेन का कथन है कि वहा पर कई ऐसे पथ थे जो वेदातवादी थे। केवल राज्य धर्म इस्लाम के आतक से अपनी रक्षा करने के लिए उन्होने उसके कुछ वाह्य उपकरणो को स्वीकार कर लिया था। और, निशापुर मे इस्लाम का आतक भी था, इस्लाम की कट्टरता भी थी, इस्लाम की असहिष्णुता भी थी।

इसी निशापुर में उमर खैयाम का जन्म हुआ, शिक्षा-दीक्षा हुई और

जीवन का अधिक समय बीता। निशापुर के वातावरण मे जितनी भी विरोधी वृत्तियाँ थी उमर ने उन सबका अनुभव किया और उनकी कविता उन्ही वृत्तियो के सघर्ष का परिणाम है। जिस युग में धर्म का सामाजिक जीवन से अत्यत घनिष्ठ सबध था, हम किसी जागरूक और विचारवान आत्मा की अशाति, अस्थिरता और अनिश्चय की उद्विग्नता का अनुमान भली भाँति कर सकते हैं। यदि यह सघर्ष उमर के जीवन भर चलता रहा तो फारस भर मे उनमे अधिक व्यग्र, विचलित और उदास कोई भी मनुष्य नही था। रुबाइयो का रचनाक्रम न जानने से यह कहना कठिन है कि उनका विकास किस प्रकार हुआ होगा, फिर भी मेरी एक कल्पना है। अपने यौवन काल में जब कि मनुष्य की प्रवृत्तियाँ स्वय ही रागात्मक होती है एक ओर तो फारस की विलासमयी भूमि ने उन्हे अपनी ओर खीचा होगा और दूसरी ओर उनके विज्ञान, ज्योतिष और दर्शन के नवीन ज्ञान के अभिमान ने उन्हे नास्तिक और इहलोकवादी बना दिया होगा। इस समय वे 'मदिरा और मदिराक्षी', 'सुरा और सरक' की ओर झुके होगे और ऐसा करने से अवश्य ही वे सूफियो और कट्टर मुसलमानो के कोपभाजन बने होगे, जिनमे से कुछ ने उन्हे मार डालने तक की धमकी दी थी।[१] उमर की कितनी ही रुबाइयो मे इसका सकेत मिलेगा। लेकिन उमर ऐसे विचारवान को प्याली और प्यारी सदा नही लुभा सकती थी। साथ ही यह आभास हुआ होगा कि यह तृष्णा बुझाने के प्रयत्न मे बढती ही जाती है। प्रौढावस्था पहुँचने पर यौवन का ज्वर हल्का हुआ होगा और ज्ञान की कथा भीगकर भारी हुई होगी। उस समय उमर स्वय सूफी अथवा अद्वैतवादी हो गए होगे। जान पेन की सम्मति है कि अपने जीवन में एक समय उमर उपनिषदो के सिद्धातो के पालक ही नही उनके प्रचारक भी थे और उनकी बहुत-सी रुबाइयो की व्याख्या केवल वेदात के सिद्धातो पर हो सकती है।[२] आगे

---

१ See Introduction to The Nectar of Grace by Swami Govind Tirtha, Kitabistan, 1941.

२ See also Quatrains from Omar Khayyam by F York Powell, Howard Wilford Bell, Oxford

चलकर वृद्धावस्था मे जन-समुदाय का विरोध करने मे अपने को असमर्थ पाकर, साथ ही सामाजिक जीवन के लिए सामाजिक धर्म की आवश्यकता समझकर अथवा मृत्यु के अज्ञात देश मे जाने के पूर्व बुद्धि पोषित सिद्धातो से हृदय स्वीकृत विश्वासो मे अधिक शाति देखकर उन्होने इस्लाम के खुदा को याद किया होगा, अपने पिछले किए पर पश्चात्ताप किया होगा, और मुक्ति की प्रार्थना की होगी। क्या इस अवस्था मे मक्का की यात्रा का यही अर्थ नही है ? सक्षेप मे, उमर के यौवन की वाणी वासना प्रधान, प्रौढता की वाणी ज्ञान प्रधान और वृद्धावस्था की वाणी धर्म प्रधान है। दूसरे शब्दो मे यौवन मे उनका शरीर प्रधान है, प्रौढता मे उनकी बुद्धि और वृद्धावस्था मे उनका हृदय।

फिट्जजेरल्ड ने अपने चयन मे यौवन और प्रौढता के बीच की मन-स्थिति व्यक्त करने वाली रुबाइयो को लिया है। यौवन का स्वप्न नष्ट हो रहा है पर प्रौढता के ज्ञान से जो शाति मिलनी चाहिए वह नही आई, एक दुनिया नष्ट हो चली है, पर दूसरी का निर्माण नही हो सका, और मन फिर उन्ही नष्ट स्वप्नो की ढेरी मे अपनी पुरानी अभिलाषाओ को खोजने का प्रयत्न करता है, असफल होता है, निराश होता है। रीते होते हुए मधुघटो के साथ तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम होती हुई तृष्णा अपने होठ सटाती जा रही है। इसमे मनुष्य की कितनी अशान्ति, कितनी अस्थिरता, कितनी उद्विग्नता और कितनी असमर्थता छिपी है, इसे बताने की आवश्यकता नही है। फिट्जजेरल्ड ने बार-बार 'Old Khayyam' का सकेत करके मानो जीवन की इस बीच की उथल-पुथल को जीवन के अतिम निर्णय का रूप दे दिया है। क्या अब यह समझना कठिन है कि उमर खैयाम की जिन रुबाइयो मे फिट्ज़जेरल्ड ने अपने सग्रह का वातावरण सचित किया है उससे हमारे युग का कितना साम्य है ? इससे अधिक इस प्रश्न पर मुझे कुछ नही कहना है।

हमारा तीसरा प्रश्न था, क्या मानसिक अस्थिरता के उस युग ने अपने आपको दुहराया है ? अगर दुहराया हो तो हमे आश्चर्य क्यो होना चाहिए। दुनिया मे जब कोई नया आदोलन या नई विचारधारा चल पडती है तो पुराने समाज मे एक तहलका मच जाता है। उसका सारा ढांचा नीचे से ऊपर तक हिल उठता है। पुरानी दुनिया और पुराने समाज को नए आदो-

लन अथवा नई विचारधारा के साथ सहयोग करने और सामंजस्य स्थापित करने में कुछ समय लगता है। मानसिक अस्थिरता ऐसे समय की स्वाभाविक देन है। किसी समय धर्म और दार्शनिक विचार उसके कारण थे, आज विज्ञान उसका कारण है। विज्ञान ने दुनिया को जो प्रगति दी है उसमें तो आए दिन हमें किसी न किसी नूतन आंदोलन के लपेट में आकर अपना पुराना स्थान छोड़ना और नया टटोलना पड़ता है। ऐसे परिवर्तनशील समय की वाणी ख़ैयाम के शब्दों में भले ही न बोले पर ख़ैयाम के भावों को अवश्य ही प्रतिध्वनित करती है।

और, जागरूक और विकासवान व्यक्ति के जीवन में तो यह एक निश्चित अवस्था है। बिना इसमें होकर निकले हुए न मनुष्य की वृद्धि होती है, न उसे शांति मिलती है और न उसे जीवन की सच्चाई का पता लगता है। इस अवस्था के आने पर मनुष्य उसी तरह सोचता है, अनुभव करता है जैसे ख़ैयाम ने सोचा और अनुभव किया था। ख़ैयाम ने जब उन विचारों को वाणी दी थी तब वह अपने व्यक्ति के ऊपर उठकर मानवता के स्तर पर पहुँच गए थे। इसीलिए उस अवस्था में यदि किसीका संयोगवश ख़ैयाम से परिचय हो जाए तो वह यही कह पड़ता है—हाय, यही तो मैं भी सोचता था, यही तो मैं भी कहना चाहता था। यद्यपि इस स्थान पर यह कहना अनुचित न होगा कि इसी अवस्था पर आकर टिक जाना मानसिक अस्वस्थता का चिह्न है।

इस भूमिका को समाप्त करने के पूर्व फिर एक बार मैं इस बात को दुहरा देना चाहता हूँ कि ख़ैयाम की रुबाइयों की आधुनिकता, मानवता, अथवा सार्वभौमता स्थापित करने के लिए हम फ़िट्ज़जेरल्ड के कम ऋणी नहीं हैं।

अपने अनुवाद के विषय में मुझे केवल यह कहना है कि मैं शब्दानुवाद करने के फेर में नहीं पड़ा। भावों को ही मैंने प्रधानता दी है। साथ ही फ़िट्ज़जेरल्ड के कथनानुसार अनुवाद को सजीव बनाने का प्रयत्न किया है। इसमें मेरी शक्ति की सीमा है। मुझे कितनी सफलता मिली है उसे देखना दूसरों का काम है। मेरा अनुवाद रुबाई छंद में नहीं हो सका। इसके लिए जो छंद मेरे मन में उठा उसमें मुझे कुछ ऐसा आभास हुआ कि रुबाई के

एक तुक मे सफलता न मिल सकेगी। हिंदी के कई अनुवादको ने रुबाई के रूप का भी निर्वाह किया है।

एक शब्द फिट्जजेरल्ड के अग्रेजी टेक्स्ट के विषय मे भी कहना है। खेद है कि हिंदी के जिन अनुवादको ने मूल अग्रेजी भी साथ मे दी है, उनमे से एक ने भी इस बात का ध्यान नही रक्खा कि वह शुद्ध हो और फिट्जजेरल्ड के टेक्स्ट के अनुसार हो। एकाध स्थानो पर गलत पाठ के कारण उन्होने अर्थ का अनर्थ भी किया है। टिप्पणी मे एक ऐसी अशुद्धि की ओर मैने पाठको का ध्यान आकर्षित किया है। यहा जो पाठ दिया जा रहा है वह फिट्जजेरल्ड के १८५६ के प्रथम अनुवाद के अनुसार है। इसे मैने राइट[1] महोदय द्वारा सपादित फिट्जजेरल्ड की ग्रथावली से लिया है। राइट महोदय को फिट्ज-जेरल्ड ने स्वय अपने ग्रथो को सपादित करने का अधिकार दिया था और उनकी यह ग्रथमाला उनकी मृत्यु के केवल ६ वर्ष बाद प्रकाशित हुई थी। उनके ग्रथो का सभवत यह सर्वप्रथम सग्रह है। श्रीमती बच्चन ने इसी ग्रथमाला से साथ मे दी गई मूल अग्रेज़ी की प्रतिलिपि तैयार की है। ध्यान-पूर्वक उन्होने एक-एक शब्द, एक-एक विराम-चिह्न हूबहू मूल के अनुसार रखने का प्रयत्न किया है। यह शुष्क और नीरस कार्य मुझसे शायद ही हो सकता। इसके लिए मै उनका आभारी हूँ।

मै प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइस चैंसेलर पडित अमरनाथ झा का भी कृतज्ञ हूँ। उन्होने अपने 'रामकाशी पुस्तकालय' से फिट्जजेरल्ड और खैयाम के ऊपर बहुत-सी दुष्प्राप्य और बहुमूल्य पुस्तके ही नही पढने को दी, समय-समय पर अपना सत्परामर्श भी मुझे देते रहे। अत मे उन्होने इस भूमिका का अतिम प्रूफ देखने के लिए अपने बहुधधी जीवन से समय निकाल-कर मुझे विशेष रीति से बाधित किया है। मै विश्वविद्यालय के अरबी तथा फारसी विभाग के अध्यापक मिस्टर नईमुर्रहमान के प्रति भी अनुगृहीत हूँ क्योकि उनसे मुझे कई एसी किताबे मिली जिनसे मुझे फारस के सास्कृतिक

---

१ Letters and Literary Remains of Edward Fitzgerald Edited by William Aldis Wright, Published by Macmillan & Co London, 1889

धरातल को समझने मे आसानी हुई।

टिप्पणी के लिए मैंने फिट्ज़जेरल्ड की अपनी तथा फाउलर, ह्वीलर, लैबार्न की टिप्पणी मे सहायता ली है।-एतदर्थ मैं इन महोदयो का भी एहसानमंद हूँ।

आशा है इस भूमिका और टिप्पणी से मेरे पाठक खैयाम और फिट्ज़जेरल्ड को अधिक अच्छी तरह समझ सकेंगे।

अंग्रेज़ी विभाग,
विश्वविद्यालय, प्रयाग
३० अप्रैल, १९४५

बच्चन

भूमिका

[पाँचवें संस्करण की]

उमर खैयाम और फिट्जजरल्ड के संबंध में जो कुछ मुझे कहना था वह मैंने तीसरे संस्करण की भूमिका में कह दिया था, पर उमर खैयाम की कविता के संबंध में इधर कुछ रोचक खोज हुई है उससे भी मैं अपने पाठकों को अवगत कर देना चाहता हूँ, इसकी कुछ चर्चा मैंने कमला देवी चौधरी की 'खैयाम के जाम' (१९५१) की भूमिका में की थी।

फिट्जजेरल्ड के अनुवाद ने अंग्रेजी साहित्य को सुंदर और सारगर्भित कविता ही नहीं दी, उमर खैयाम की मूल फारसी रचना के प्रति रुचि भी जागृत की। उनकी बहुत-सी पाण्डुलिपियों की खोज हुई और विद्वानों ने उनपर गवेषणात्मक लेख लिखे। अब भी निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि उमर खैयाम की सारी रचना प्राप्त कर ली गई है या जो कुछ उनके नाम से लिखा मिलता है वह वास्तव में उन्हींका है।

अभी कुछ वर्ष पहले तक उमर खैयाम की रुबाइयों की जो सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि समझी जाती थी वह सन् १३३० की थी—उमर खैयाम की मृत्यु के लगभग दो सौ वर्ष बाद की। इसमें उनकी केवल ३३ रुबाइयाँ थीं।

१९४७ में इंग्लैंड के प्रख्यात प्राचीन पुस्तक-संग्रहकर्ता श्री चेस्टर बियटी ने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री जे० ए० आरबेरी को एक ऐसी पाण्डुलिपि दिखाई जो सन् १२६० की थी। उसमें उनकी १७२ रुबाइयाँ थीं। इससे यह प्रमाणित हुआ कि कवि उमर खैयाम कोई कल्पित व्यक्ति नहीं थे, बल्कि अपने समय में भी प्रसिद्ध कवि थे और काव्यप्रेमी लोग, अपनी रुचि के अनुसार, जो उनमें सर्वश्रेष्ठ था, उसको चुनकर सुरक्षित रखना चाहते थे।

अभी इस पाण्डुलिपि की चर्चा यत्र-तत्र चल ही रही थी कि प्रोफेसर आरबेरी को एक ऐसी पाण्डुलिपि का पता लगा जो सन् १२०७ की थी। यह उपर्युक्त पाण्डुलिपि से ५३ वर्ष पुरानी थी और उमर खैयाम की मृत्यु के

लगभग ७५ वर्ष बाद तैयार की गई थी।

अपने केम्ब्रिज प्रवास के दिनो में प्रोफेसर आरबेरी के व्याख्यान सुनने और उनसे मिलने-जुलने के कई अवसर मुझे प्राप्त हुए थे। उन्होने उस पाडुलिपि के मिलने की बडी ही रोचक कहानी मुझे सुनाई थी। एक बार तो जाली समझकर उन्होने उसे लौटा भी दिया था, पर कुछ उडती नजर से देखी हुई बातो की ओर सहसा उनका ध्यान गया और वे उसकी खोज मे लगे। तब तक पाडुलिपि कई हाथो से गुजर चुकी थी और अगर थोडी-सी देर और होती तो शायद इग्लैड मे वह निकल जाती, पर प्रोफेसर आरबेरी ने उसे प्राप्त ही कर लिया और उसपर गभीरतापूर्वक विचार करना आरभ किया। वे इसी परिणाम पर पहुँचे कि यह पाडुलिपि जाली नही है, उमर खैयाम की पाडुलिपियो में सबसे पुरानी है, गो यह केवल सकलन मात्र है। इसमे २५२ रुबाइयाँ है। इससे यह अनुमान तो सहज ही लगाया जा सकता है कि कम से कम उसकी चौगुनी सख्या से तो यह सकलन तैयार किया गया होगा। इस पाडुलिपि ने यह बात निर्विवाद रूप मे सिद्ध कर दी है कि उमर खैयाम अपने समय मे भी विख्यात कवि थे और रचना-मात्रा और काव्य-गुण दोनो के ही कारण उनका अपने देश में पर्याप्त सम्मान था। यह पाडुलिपि केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ऐडर्मन रूम में रक्खी है। मैंने इसे निकलवाकर देखा था। अग्रेज लोग प्राचीन पाडुलिपियो को किस जतन और होशियारी से रखते है!

एक बार मेरे मन में आया कि किसी फारसी जाननेवाले विद्यार्थी से उसे पढाकर देवनागरी अक्षरो मे लिख लूँ। उन दिनो ईरान का एक विद्यार्थी केम्ब्रिज में था। वह तैयार भी हो गया था, पर पाडुलिपि देखकर उसने हिम्मत छोड दी। प्रोफेसर आरबेरी के पास इतना समय कहाँ था।

उन्होने इस पाडुलिपि से अग्रेजी में अनुवाद करना शुरू किया। मेरे केम्ब्रिज-प्रवास के दिनो मे ही उनका अनुवाद प्रकाशित हुआ था। अनुवाद में उन्होने अग्रेजी के साहित्यिक सौन्दर्य लाने से अधिक उमर खैयाम के विचारो के निकट रहने का प्रयत्न किया है। आधुनिक शृगारविरक्त, सीधी-सादी, विचार-प्रधान शैली के प्रेमियो को अनुवाद पसद आएगा। वस्तुत यह शैली उमर खैयाम की मूल शैली के अधिक निकट है। लोकप्रियता

फिट्जजेरल्ड के अनुवाद जैसी इसको न मिल सकेगी।

मैंने प्रोफेसर आरबेरी का अनुवाद पढा तो निष्प्रयास ही चार-पांच रुबाइयो का हिंदी अनुवाद कर गया। मैंने अपनी इग्लैड की डायरी मे कही इन्हे नोट कर लिया है। पर इस काम से मैंने अपने को बरबस रोका। मैं इसमे लगा तो ईट्स पर जो अनुसन्धान का काम करने को मैं इतनी दूर आया हूँ वह तो होने से रहा—'आए रहे हरि-भजन को ओटन लगे कपास।' और अग्रेजी से ही यदि अनुवाद करना है तो पुस्तक तो छप ही चुकी है, यह काम बाद को हो जाएगा। वैसे मैंने हरि-भजन के साथ काफी कपास भी ओटी, पर वह मेरी मजबूरी थी। पी-एच०डी० के लिए थीसिस भी तैयार की और सौ-सवा सौ कविताएँ भी लिखी।

मन मे एक और सारवान विचार भी आया। मूल से भी अनूदित करने मे मूल का अश मात्र ही अनुवाद मे आ पाता है। अनुवाद के अनुवाद मे वह अश और भी स्वल्प हो जाता है। जहाँ तक उमर ख़ैयाम की कविता के प्रति हिंदी पठित जनता की रुचि जाग्रत करने की बात थी, वह फिट्जजेरल्ड के लगभग एक दर्जन अनुवादो से पूरी हो चुकी है। अब लोगो को चाहिए कि वे उमर खैयाम की मूल रचना के अनुसधान मे रुचि ले, अनुवाद करना हो तो मूल फारसी मे करे। हिन्दी मे जितने अनुवाद अब तक हुए है उनमे सिर्फ मुशी इकबाल वर्मा 'सेहर' का मूल फारसी के किसी सकलन से है। श्री सुमित्रानदन पत के अनुवाद को मै फारसी के उर्दू गद्य अनुवाद का हिंदी पद्यातर कहूँगा, या उनके शब्दो मे गीतातर, जिसमे अत्यधिक स्वतत्रता ली गई है। सेहर साहब को हिंदी का पद्य सहज साध्य नही था। इधर दैनिक हिंदुस्तान के रविवार-अक मे श्री रामचन्द्र मैनी का अनुवाद मूल फारसी से क्रमश निकल रहा है। मुझे पता नही मूल पाठ किस पुस्तक से लिया गया है। अनुवाद की भाषा से मुझे सतोष नही हुआ। कुछ भोडी अशुद्धियां भी मैंने देखी। पर प्रयास ठीक दिशा मे हो रहा है। आशा है हिंदी-फारसी के विद्वान अन्य फारसी कवियो की ओर ध्यान देगे।

उमर खैयाम का ही अनुवाद करना हो तो मै चाहता हूँ कि कोई सज्जन उस पाडुलिपि के सकलन मे करे जिसमे प्रोफेसर आरबेरी ने अग्रेजी में किया है। इससे अधिक प्रामाणिक और प्राचीन पाडुलिपि कम से कम आज तक

तो नही मिली और मिल भी जाए तो इसकी विशेषता अक्षुण्ण रहेगी। केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय से पाडुलिपियो के फोटो चित्र प्राप्त किए जा सकते है। खर्च देना पडता है। आशा है कोई न कोई सज्जन इस कार्य मे रुचि लेंगे। जब हिंदी के माध्यम से ही विभिन्न भाषाओ के साहित्य का अध्ययन, अध्यापन और अनुसधान आरभ होगा, तब ऐसे अनुवादो की महत्ता होगी।

विदेश मत्रालय,
नई दिल्ली
२३-७-१९५८

बच्चन

जाए, तेरी आज्ञा रहे। इन फूलो पर अपने अश्रु-विदु छिडक-छिडककर तथा इनको अपने उच्छ्वासो से फूंक-फूंककर ताजा वनाने का मैने प्रयत्न किया है। प्रयत्न से अधिक मेरे वश मे और क्या है।

इस कार्य को पूर्ण करने मे तेरी आज्ञा ने नशे का-सा काम किया है। इसीसे, इन पक्तियो को लिखते समय एक अनोखी उमग थी, एक अनूठा उत्साह था, एक निराला उल्लास था, एक विलक्षण स्फूर्ति थी, एक विचित्र उन्माद था। तेरी आज्ञा मे ऐसा नशा हो, इसपर मुझे आश्चर्य नही। क्या तू स्वय एक मदिरा नही, जिसके लिए कितने दिनो से मै एक उमर खैयाम वन गया हूँ। इस कार्य ने मुझे पूर्ण आनद दिया है। इसमे तेरा विनोद हो।

वस, विदा।

१५ जून,
१९३३

तेरे आशीर्वाद का
अभिलाषी
मैं

ख़ैयाम की मधुशाला

Rubaiyat of Omar Khayyam

१

उषा ने फेंका रवि-पाषाण
निशा-भाजन में; जल्दी जाग,
प्रिये, देखो पा यह सकेत
गए कैसे तारक-दल भाग !

और देखो तो उठकर, प्राण,
अहेरी ने पूरब के लाल

फँसा ली सुल्तानी मीनार
बिछा कैसा किरणो का जाल !

I

AWAKE! for Morning in the Bowl of Night
Has flung the Stone that puts the Stars to Flight
And Lo! the Hunter of the East has caught
The Sultān's Turret in a Noose of Light

२

उषा ने ले अँगड़ाई, हाथ
दिए जब नभ की ओर पसार,
स्वप्न में मदिरालय के बीच
सुनी तब मैंने एक पुकार—

"उठो, मेरे शिशुओ नादान,
बुझा लो पी-पी मदिरा भूख,

"नहीं तो तन-प्याली की शीघ्र
जायगी जीवन-मदिरा सूख।"

II

DREAMING when Dawn's Left Hand
was in the Sky
I heard a Voice within the Tavern cry,
"Awake, my Little ones, and fill the Cup
"Before Life's Liquor in its Cup be dry."

श्रवणकर अरुण-शिखा-ध्वनि कान
उठे यात्री सब साथ पुकार,
पडे थे जो मदिरालय घेर—
"अरे जल्दी से खोलो द्वार !

"नही है क्या तुमको मालूम
खडी जीवन-तरणी क्षण चार,

"बहुत सभव है जा उस पार
न फिर यह आ पाए इस पार।"

III

AND, as the Cock crew, those who stood before
The Tavern shouted—"Open then the Door!
"You know how little while we have to stay,
"And, once departed, may return no more"

२

उषा ने ले

दिए जब नभ की

स्वप्न मे मदिरा

सुनी तब मैने

"उठो, एकात,

बुझा न पास—

"नही तो नन-

जायगी जीवन ।

DREAMING

was in the Sl

I heard a Voice w

"Awake, my Litt

"Before Life's L

५

सभी पाटल-पुष्पों के साथ
अरम-आराम हुआ बर्बाद,
रही जमशेदी प्याले सात—
चक्रवाले की किसको याद ?

मगर अब भी लहराते बाग
सलिल के कूलों पर छविमान,

मगर अब भी मिट्टी का पात्र
कराता माणिक मधु का पान ।

V

IRĀM indeed is gone with all its Rose,
And Jamshyd's Sev'n-ring'd Cup where no one knows,
But still the Vine her ancient Ruby yields,
And still a Garden by the Water blows

नई तरु-आभा, नवल समीर
जनाते, आया नूतन वर्ष,
जर्जरित इच्छाएँ भी आज
पा रही यौवन का उत्कर्ष।

मनीषी भोग रहे एकांत,
एक मधुऋतु उनके भी पास—

ज्वलित कर मूसा का तरु-ज्योति,
समीरण ईसा का उच्छ्वास।

IV

NOW the New Year reviving old Desires,
The thoughtful Soul to Solitude retires,
Where the WHITE HAND OF MOSES on the Bough
Puts out, and Jesus from the ground suspires

५

सभी पाटल-पुष्पो के साथ
अरम-आराम हुआ बर्बाद,
रही जमशेदी प्याले सात—
चक्रवाले की किसको याद ?

मगर अब भी लहराते बाग
सलिल के कूलो पर छविमान,

मगर अब भी मिट्टी का पात्र
कराता माणिक मधु का पान ।

V

IRĀM indeed is gone with all its Rose,
And Jamshyd's Sev'n-ring'd Cup where no one knows,
But still the Vine her ancient Ruby yields,
And still a Garden by the Water blows

६

युगो से मौन हुआ दाऊद,
कभी था जिसका सुमधुर गान,
मगर बुलबुल अब भी स्वर्गीय
स्वरो में छेड सुरीली तान,

सुना जाती पाटल को नित्य--
"सुरा पी, मधु पी, मदिरा लाल !"

जिसे पीकर हो जाएँ शीघ्र
गुलाबी उसके पीले गाल ।

VI

AND David's Lips are lock't, but in divine
High piping Pehlevi, with "Wine ! "Wine ! Wine !
"*Red* Wine !"—the Nightingale cries to the Rose
That yellow Cheek of her's to' incarnadine

वसती ज्वाल-अनिल मे, आज
पिलाकर मधु मदिरा साह्लाद,
उडा दो अपने करके राख
हृदय के पश्चात्ताप-विषाद ।

काल-पक्षी के पर दिन-रात,
उसे परिमित पथ करना पार,

प्रिये, तुम करती व्यर्थ विलम्ब,
उडा, लो, वह आता पर मार !

VII

COME, fill the Cup, and in the Fire of Spring
The Winter Garment of Repentance fling
The Bird of time has but a little way
To fly—and Lo ! the Bird is on the Wing

कली-कुसुमा के वन के बीच
पांव रखता है ज्योही प्रात,
कली-दल खिल उठता अनजान,
कुसुम-दल झर पडता अज्ञात।

अरे, आता जो आज वसत
सजा पाटल से अपने हाथ,

हमारे कैकुबाद-जमशेद
जायगा ले कल अपने साथ।

VIII

AND look—a thousand Blossoms with the
Day
Woke—and a thousand scatter'd into Clay
And this first Summer Month that brings the
Rose
Shall take Jamshyd and Kaikobād away.

सोचकर कैखुसरू का भाग्य
और कर कैकुबाद की याद,
जिन्हे ससार गया है भूल,
समय केवल करना बर्बाद।

बुलाए हातिम दे-दे भोज,
उठाए रुस्तम रण को हाथ,

न करके उनकी कुछ परवाह
प्रिये, तुम आओ मेरे साथ।

IX

BUT come with old Khayyam, and leave the Lot
Of Kaikobād and Kaikhosrū forgot
Let Rustum lay about him as he will,
Or Hātim Tai cry Supper—heed them not.

११

सुना मैंने, कहते कुछ लोग--
मधु- जग पर मानव का राज।
और कुछ कहते--जग से दूर
स्वर्ग मे ही सब सुख का साज।

दूर का छोड प्रलोभन, मोह,
करो, जो पास उसीका मोल,

सुहाने भर लगते है, प्राण,
अरे ये दूर-दूर के ढोल।

XII

"HOW sweet is mortal Sovran ty!"—think
some
Others—"How blest the Paradise to come!"
Ah, take the Cash in hand and wave the
Rest,
Oh, the brave Music of a *distant* Drum!

खिली जो अपने चारो ओर,
सुनो, क्या कहती पाटल-माल—
"विहँस-हँसकर उपवन के बीच
लूटती मोती मैं इस काल।

"रेशमी झोली अपनी फाड
अभी इस वन में दूंगी फेंक,

"और अपनी निधियां अनमोल
लुटा दूंगी मैं क्षण में एक।"

XIII

LOOK to the Rose that blows about us —"Lo,
"Laughing", she says, "into the World
"I blow ·
"At once the silken Tassel of my Purse
"Tear, and its Treasure on the Garden "throw".

१६

जीर्ण जगती है एक सराय,
दिवा-निशि जिसके द्वार विशाल,
खोलती एक उषा उठ प्रात,
दूसरा, सन्ध्या, सायकाल।

यहाँ आ बड़े-बड़े सुल्तान,
बड़ी थी जिनकी शौकत-शान,

न जाने कर किस ओर प्रयाण
गए, बस दो दिन रह मेहमान।

XVI

THINK, in this batter'd Caravanserai
Whose Doorways are alternate Night and Day
How Sultān after Sultān with his Pomp
Abode his Hour or two, and went his way

जहाँ था जमशेदी दरबार,
शान से होता था मधुपान,
वहाँ स्वच्छंद घूमते सिंह,
वहाँ निर्भीक भूकते श्वान ।

और, वह बादशाह बहराम,
अहेरी जो था जग-विख्यात,

पडा निद्रा में आज अचेत
गधे की सिर पर खाता लात ।

XVII

THEY say the Lion and the Lizard keep
The Courts where Jamshyd gloried and drank deep;
And Bahram, that great Hunter—the Wild Ass
Stamps o'er his Head, and he lies fast asleep.

१८

वही होते अति लाल गुलाव,
जड़े जिनकी कर पाती पान
गड़े अवनीपतियो का खून,
समझ यह, आता मुझको ध्यान,

हाय, वन की हर सुबुल-वेल्लि,
रही जो हिल-खिल आज समोद,

किसी सुमुखी की कुंतल-राशि,
पड़ी जो गिर उपवन की गोद ।

XVIII

I SOMETIMES think that never blows
so red
The Rose as where some buried Cæsar bled,
That every Hyacinth the Garden wears
Dropt in its Lap from some once lovely Head

१६

अरे, यह कितने कोमल पात,
चुबनो से अपने अम्लान
ढक रहे जो सरिता का कूल
विचरते हम-तुम जिसपर, प्राण—

घरो धीरे से इसपर पांव,
कौन जाने, हो सकता, प्राण !

किन्ही मृदु अधरो को ही चूम
उगे हो यह पौधे अनजान !

XIX

AND this delightful Herb whose tender Green
Fledges the River's Lip on which we lean—
Ah, lean upon it lightly ! for who knows
From what once lovely Lip it springs unseen !

१८

वही होते अति लाल गुलाब,
जडे जिनकी कर पाती पान
गडे अवनीपतियो का ख़ून,
समझ यह, आता मुझको ध्यान,

हाय, वन की हर सुबुल-वेलि,
रही जो हिल-खिल आज समोद,

किसी सुमुखी की कुतल-राशि,
पडी जो गिर उपवन की गोद ।

XVIII

I SOMETIMES think that never blows so red
The Rose as where some buried Cæsar bled,
That every Hyacinth the Garden wears
Dropt in its Lap from some once lovely Head

१६

अरे, यह कितने कोमल पात,
चुबनो से अपने अम्लान
ढक रहे जो सरिता का कूल
विचरते हम-तुम जिसपर, प्राण--

धरो धीरे से इसपर पाँव,
कौन जाने, हो सकता, प्राण !

किन्ही मृदु अधरो को ही चूम
उगे हो यह पौधे अनजान !

XIX

AND this delightful Herb whose tender Green
Fledges the River's Lip on which we lean—
Ah, lean upon it lightly ! for who knows
From what once lovely Lip it springs unseen !

पिलाकर प्यारी मदिरा आज
नशे मे इतना कर दो चूर,
भविष्यत के भय जाएँ भाग,
भूत के दारुण दुख हो दूर ।

प्रिये, लेना मत कल का नाम,
नही कल पर मुझको विश्वास,

अरे, कल दूर, एक क्षण बाद
काल का मैं हो सकता ग्रास ।

XX

AH, my Beloved, fill the Cup that clears
To DAY of past Regrets and future Fears—
To-morrow?—Why, To-morrow I may be
Myself with Yesterday's Sev'n Thousand Years

२१

अरे, वे सुदरतम, वे श्रेष्ठ,
जिन्हे हम करते इतना प्यार,
क्रूर-कटु काल-कर्म्म के, हाय,
हो गए कितने शीघ्र शिकार !

न पी पाए थे प्याले चार,
गया उनका जीवन-मधु सूख,

चले करने विश्राम अनत
लिए निज अरमानो की भूख ।

XXI

LO ! some we loved, the loveliest and best
That Time and Fate of all their Vintage prest,
Have drunk their Cup a Round or two before,
And one by one crept silently to Rest

उन्होने छोडा जो उद्यान,
हमारा वह आनद-निवास,
वहां सज प्रकृति वसती साज
हृदय मे भरती हास-हुलास ।

करे उनपर रँगरेली आज,
जहां वे, पर, जाना उस ठौर,

हमारे ऊपर भी रँगरेल
मचाने को आएँगे और ।

XXII

AND we, that now make merry in the Room They left, and summer dresses in new Bloom,
Ourselves must we beneath the Couch of Earth
Descend, ourselves to make a Couch—for whom ?

२३

अरे, अब भी जो कुछ है शेष,
भोग वह सकते हम स्वच्छद,
राख में मिल जाने के पूर्व
न क्यो करले जी भर आनद;

गडेगे जब हम होकर राख
राख में, तब फिर कहा वसत,

कहा स्वरकार, सुरा, सगीत,
कहा इस सूनेपन का अत ।

XXIII

AH, make the most of what we yet may
spend,
Before we too into the Dust descend,
Dust into Dust, and under Dust, to lie,
Sans Wine, sans Song, sans Singer, and—
sans End !

२४

भोगने को होते तैयार
बहुत से वर्तमान ससार,
पहुँचने को आगामी स्वर्ग
बहुत से सहते कष्ट अपार,

अँधेरे की चढकर मीनार
मुअज्जिन यह करता आह्वान--

"रहेगा दोनो ओर निराश,
"भटक मत, रे मानव नादान !"

XXIV

ALIKE for those who for TO-DAY prepare,
And those that after a TO-MORROW stare,
A Muezzin from the Tower of Darkness cries
"Fools ! your Reward is neither Here nor "There !"

२५

स्वर्ग-जग पर करते शास्त्रार्थ
जता विद्वत्ता का अभिमान,
अरे, कल जो सब पडित-विज्ञ,
गडे मूढो के आज समान ।

कुचल दी जाने को सब ओर
गई दी उनकी वाणी छीट,
वद करने को मुख वाचाल
गई दी मिट्टी उनमे पीट ।

XXV

WHY, all the Saints and Sages who discuss'd Of the Two Worlds so learnedly, are thrust
Like foolish prophets forth, their words to Scorn
Are scatter'd and their Mouths are stopt with Dust

ज्ञानियों को ले अपने साथ
ज्ञान के मैंने बोए बीज,
उगाने का करते श्रम-यत्न
उठा मेरा तन-प्राण पसीज,

और, इस खेती के फल-रूप
यही कहने को मेरे पास—

"लिये आया था अश्रु-प्रवाह,
"छोडता जाता हूँ उच्छ्वास।"

XXVIII

WITH them the Seed of Wisdom did I sow,
And with my own hand labour'd it to grow
And this was all the Harvest that I reap'd—
"I came like Water, and like Wind I go"

२९

अरे, आया क्यों जग के बीच!
कहाँ से तृण-सा मुझको तोड़,
बहा लाई है कोई धार,
गई जो जगती-तट पर छोड़?

जगत क्यों देना होगा छोड़?
कहाँ को, रज-कण मुझको जान,

उड़ा ले जाएगा दिन एक
किसी मरु का पवमान महान?

XXIX

INTO this Universe, and *why* not knowing,
Nor *whence*, like Water willy-nilly flowing.
And out of it, as Wind along the Waste,
I know not *whither*, willy-nilly blowing

३०

न पूछा, फेंक दिया इस ओर,
हमे समझा इतना निरुपाय !
न पूछा, खींच लिया उस ओर,
बड़ा यह तो हमपर अन्याय !

प्रिये, प्याले पर प्याला ढाल
बढ़ा दो इतना मद-उन्माद,

न जाए जन्म-निधन पर ध्यान,
न आए अन्यायी की याद !

XXX

WHAT, without asking, hither hurried *whence* ?
And, without asking, *whither* hurried hence !
Another and another Cup to drown
The Memory of this Impertinence !

३१

उडा ऊपर भू-कदुक छोड,
किए सातो नभ-मडल पार,
पहुंच शनि-सिहासन के पास
दिए उसपर अपने पग धार;

राह में सुलझा डाली, प्राण,
समस्याओ की गाँठ अनेक;

'कर्म का चक्र, मनुज की मृत्यु'
रही अनबूझ पहेली एक ।

XXXI

Up from Earth's Centre through the
Seventh Gate
I rose, and on the Throne of Saturn sate,
And many Knots unravel'd by the Road,
But not the Knot of Human Death and Fate

३८

काल था बैठा बंद कपाट
किए, जिसको न सका मैं खोल,
नियति बैठी थी घूंघट मार,
उठा जिसको न सका मैं बोल।

हुआ केवल क्षण-भर आभास
हो रही कुछ 'मैं-तू' की बात,

और, प्रेयसि, उसके पश्चात
हो गई वह भी लय अज्ञात।

XXXII

THERE was a Door to which I found no
Key
There was a Veil past which I could not see
Some little Talk awhile of ME and THEE
There seem'd—and then no more of THEE
and ME

मिले दिखलाने को पथ सूर्य,
चद्र, तारक-दल-दीप अनेक
जिसे, उस नभ का कर आह्वान
प्रश्न पूछा तब मैंने एक—

"नियति ने कौन दिया है दीप,
जिसे ले उसकी लघु सतान

"न भटके अधकार में भूल ?"
कहा–"अधी मति दीपक मान ।"

XXXIII

THEN to the rolling Heav'n itself I cried,
Asking, "What Lamp has Destiny to
"guide
"Her little Children stumbling in the
"Dark ?"
And—"A blind Understanding !" Heav'n
replied.

मृत्तिका की प्याली की ओर
झुका तब तज सब वाद-विवाद,
कि खोले जीवन का कुछ भेद
कहीं इसका ही मादक स्वाद,

होठ से होठ लगा यह बोल
उठी, "जब तक जी, कर मधुपान,

"कौन आया फिर जग मे लौट
किया जिसने जग से प्रस्थान ?"

XXXIV

THEN to the earthen Bowl did I adjourn
My Lip the secret Well of Life to learn
And Lip to Lip it murmur'd—"While
"You live
"Drink!—for once dead you never shall
"return"

३५

हाय, बोली जो प्याली आज
मद अस्फुट शब्दो में चार,
रही होगी यह मूर्ति सजीव
कभी करती आनद-विहार,

इन्ही जिन जड अधरो से आज
रहा हूँ कर मे मधु का पान,

हुआ होगा कितने रसपूर्ण
चुम्बनो का आदान-प्रदान ।

XXXV

I THINK the Vessel, that with fugitive
Articulation answer'd, once did live,
And merry-make; and the cold Lip I kiss'd
How many Kisses might it take—and give!

हृदय मे उठती क्यो यह बात ?
एक दिन जब था सध्याकाल,
घूमते जा पहुँचा मैं हाट,
देखता क्या हूँ, एक कुलाल

बनाने को ऐसे ही पात्र
थपकता है मिट्टी पर हाथ,

मिली मिट्टी मे जीभ कराह
रही है, "आह, दया के साथ !"

XXXVI

FOR in the Market-place, one Dusk of Day,
I watch'd the Potter thumping his wet Clay
And with its all obliterated Tongue
It murmur'd—"Gently, Brother, gently, "pray !"

करो प्याला मदिरा से पूर्ण,
लाभ क्या बार-बार यह चेत,
खडे हम जीवन-धारा वीच,
खिसकती पद-तल से पल-रेत,

अनागत कल जगती से दूर,
विगत कल काट चुका जग-फद;

करो मत उनका चितन आज,
आज यदि कटता है सानद ।

XXXVII

AH, fill the Cup —what boots it to repeat
How Time is slipping underneath our Feet :
Unborn TO-MORROW, and dead YESTERDAY,
Why fret about them if TO-DAY be sweet !

अरे, यह विस्मृति का मरु देश
एक विस्तृत है, जिसके बीच
खिची लघु जीवन-जल की रेख,
मुसाफिर ले होठो को सीच ।

एक क्षण, जल्दी कर, ले देख,
बुझे नभ-दीप, किधर पर भोर ?

कारवाँ मानव का कर कूच
बढ चला शून्य उषा की ओर !

XXXVIII

ONE Moment in Annihilation's Waste,
One Moment, of the well of Life to taste—
The Stars are setting and the Caravan
Starts for the Dawn of Nothing—Oh, make haste !

अरे, यह सारे व्यर्थ प्रयत्न ।
अरे, यह सारे व्यर्थ विवाद ।
अरे, यह सारो खोज अनत
तुम्हे देगी केवल अवसाद ।

सुनो, जीवन-उपवन के बीच
मधुर फल| केवल यह अगूर,

शेप तरु या तो हैं फल-हीन
रहे फल या कडुए फल दूर ।

XXXIX

HOW long, how long, in infinite Pursuit
Of This and That endeavour and dispute ?
Better be merry with the fruitful Grape
Than sadden after none, or bitter Fruit.

बहुत दिन से मित्रो को ज्ञात
भवन मे मेरे अति उत्साह-
सहित होता है मदिरा-पान;
किया है मैंने नूतन व्याह ।

कर्कशा, वृद्धा, वध्या जान
दिया है 'तर्क-शक्ति' को छोड,

लिया है सरस, मधुर, सुकुमार
'सुरा-बाला' से नाता जोड ।

XL

YOU know, my Friends, how long since in my House
For a new Marriage I did make Carouse
Divorced old barren Reason from my Bed,
And took the Daughter of the Vine to Spouse

दर्शनो का सीखा सिद्धात,
गणित विद्या सीखी दे ध्यान,
खपाया ज्योतिष में मस्तिष्क,
बढाया जड-जीवो का ज्ञान,

जगत की ज्वाला से मै तप्त,
जलाशय ज्ञान-विवेक अनेक

मगर सब छिछले, उथले, क्षीण,
मिला बस प्याला गहरा एक ।

XLI

FOR "IS" and "IS-NOT" though *with* Rule and Line,
And "UP-AND DOWN" *without*, I could define,
I yet in all I only cared to know,
Was never deep in anything but—Wine.

४२

खुले मदिरालय द्वार समीप
अभी उस दिन की ही है बात,
उतरकर सान्ध्य गगन से एक
आगया देव दूत अज्ञात ।

सज रहा था कंधे पर पात्र,
किसी रस से वह था भरपूर,

कहा उसने लो इसका स्वाद,
कहा मैंने चखकर—'अंगूर !'

XLII

AND lately, by the Tavern Door agape,
Came stealing through the Dusk an Angel Shape
Bearing a Vessel on his Shoulder, and
He bid me taste of it, and 'twas – the Grape!

४३

अँगूरी नैयायिक है एक,
पडितो-सा दे ठीक प्रमाण,
सिद्ध कर सकती है सब झूठ
विवादी मत-पथो का ज्ञान ।

कीमियागर है मदिरा एक
बडी ही चतुरा और सुजान,

मलिन जीवन-सीसे को शीघ्र
बना देती कचन द्युतिमान ।

XLIII

THE Grape that can with Logic absolute
The Two-and-Seventy jarring Sects confute
The subtle Alchemist that in a Trice
Life's leaden Metal into Gold transmute

अँगूरी बलशाली महमूद,
विजयकारी सम्राट महान,
नशे की जोशीली तलवार
हाथ मे ले करती प्रस्थान ।

डालती तितर-बितर कर काट
काफिरो के दल, जो भय-शोक,

बिठा जो मन मे दुख की मूर्ति
सत्य मत सुख को रखते रोक ।

XLIV

THE mighty Mahmūd, the victorious Lord
That all the misbelieving and black Horde
Of Fears and Sorrows that infest the Soul
Scatters and slays with his enchanted Sword

४५

न मुझको विद्वानो से काम,
व्यर्थ सब जिनके वाद-विवाद,
न जग के झगडो की परवाह,
निरर्थक जिनकी रखना याद ।

चलो जग-कोलाहल से दूर
करें हम-तुम एकात निवास,

उडाएँ हम भी उनपर धूल,
हमारा जो करते उपहास ।

XLV

BUT leave the Wise to wrangle, and with me The Quarrel of the Universe let be :
And, in some corner of the Hubbub coucht,
Make Game of that which makes as much of Thee.

मच रही या-तत्र-सर्वत्र
निरतर जग मे जो रँगरेल,
नही उसका कुछ भी अस्तित्व
इद्रजाली माया का खेल ।

गगन-भूतल की है कदील,
सूर्य है जिसमे दीपक एक ।

चतुर्दिक जिसके छाया रूप
घूमते हम जड-जीव अनेक ।

XLVI

FOR in and out, above, about, below,
'Tis nothing but a Magic Shadow show,
Play'd in a Box Whose Candle is the sun,
Round which we Phantom Figures come and
go

अरे, यदि यह मदिरा का पान
चुंबनो का आदान-प्रदान,
शून्य में परिणत हो अनजान
सभी का जिसमें अंत समान,

प्रिये, तो जब तक तुझमें प्राण
कल्पना से तू ऐसा जान,

वही हम हैं जो होंगे—शून्य—
न होंगे हम कुछ भी कम, प्राण !

XLVII

AND if the Wine you drink, the Lip you press,
End in the Nothing all things end in—Yes—
Then fancy while Thou art, Thou art but what
Thou shalt be—Nothing—Thou shalt not be less.

प्रफुल्लित जब तक पाटल वृंद
सरित का सुनकर कलकल गान,
बैठकर, प्रेयसि, मेरी गोद
करो माणिक मदिरा का पान।

गरल का प्याला ले यमदूत
तुम्हारे आ जाए जब पास,

उसे भी ले, कर जाना पान,
न होना विचलित और उदास।

XLVIII

WHILE the Rose blows along the River
Brink,
With old Khayyām the Ruby Vintage drink·
And when the Angel with his darker
Draught
Draws up to thee—take that, and do not
shrink

कर्म औ' नियति रहे शतरज
खेल, जगती की खोल बिसात,
मनुष्यों के मुहरे निःशक्त
बिठा खानो में, जो दिन-रात ।

उन्हें चलते वे इस-उस ओर
मारते और कराते मेल,

सभी को काल-कोष्ठ में डाल
खतम कर देते अपना खेल ।

IL

'TIS all a Chequer-board of Nights and Days
Where Destiny with Men for pieces plays :
Hither and thither moves, and mates, and slays,
And one by one back in the Closet lays

५०

"नहीं-हाँ" के प्रश्नो से व्यर्थ
दीन कदुक रखता कब काम ?
खिलाडी लुढकाता जिस ओर
चला जाता दक्षिण या वाम ।

हमे भी कदुक-सा ही जान
वही जिसने फेका अज्ञात,
लुढकने को भू पर हर ओर
हमारी जाने सारी बात ।

L

THE Ball no Question makes of Ayes and
Noes,
But Right or left, as strikes the Player goes,
And He that toss'd Thee down into the
Field,
He knows about it all—HE knows—HE
knows !

५१

किसी की लौह लेखनी भाल-
शिला पर लिख जाती कुछ लेख,
न फिर फिरती पीछे की ओर,
लिखा क्या, इतना तो ले देख

न कम कर देगी आधी पंक्ति,
देख सब तेरी भक्ति, विवेक

न तेरे आँसू की ही धार
सकेगी धो लघु अक्षर एक

LI

THE Moving Finger writes; and, having
writ,
moves on . nor all thy Piety nor Wit
Shall lure it back to cancel half a Line,
Nor all thy Tears wash out a Word of it.

अरे, यह उल्टा प्याला गोल,
जिसे हम कहते हैं आकाश,
तले जिसके हम जीवन-बोझ
उठाते, थकते, तजते श्वास,

उठाओ हाथ न इसकी ओर,
सकेगा कर क्या दीन सहाय ?

बना जब हम-सा ही नि शक्त
स्वय यह घूम रहा निरुपाय ।

LII

AND that inverted Bowl we call The Sky,
Whereunder crawling coop't we live and die,
Lift not thy hands to *It* for help—for It
Rolls impotently on as Thou or I

५३

ध्येय में रखकर अंतिम रूप
बना मानव का प्रथमाकार,
गया है बोया पहला बीज
उपज अंतिम का रूप विचार ।

न्याय के दिन के सायकाल
सुनाया जाएगा जो लेख,

सृष्टि के प्रथम प्रात में पूर्ण
हो चुका है उसका अवरेख ।

LIII

WITH Earth's first Clay they did the Last
Man's knead,
And then of the Last Harvest sow'd the Seed :
Yea, the first Morning of Creation wrote
What the Last Dawn of Reckoning shall
read.

५४

बताता तुझसे एक रहस्य--
लक्ष्य से जब करके प्रस्थान
चले सुर-दूत सूर्य पर बैठ,
अश्व जो नभ का है द्युतिमान,

फेंकते अंतरिक्ष के बीच
उपग्रह, ग्रह, नक्षत्र अनेक,

मनाते जैसे बरसा फूल
सृष्टि का पुण्य प्रथम अभिषेक।

LIV

I TELL Thee this —When, starting from the Goal,
Over the shoulders of the flaming Foal
Of Heav'n Parwin and Mushtara they flung
In my predestin'd Plot of Dust and Soul

तभी आ उस मिट्टी के बीच,
डालकर जिसमें मेरा प्राण
बनाई जाने को थी देह,
आज पृथ्वी पर जो गतिमान,

पड़ी अंगूर लता की मूल
किसीके ध्रुव निश्चय को मान

बनूं मैं, इसके कितने पूर्व
बनी रुचि मेरी दे तो ध्यान

LIV

I TELL Thee this—When, starting from the Goal,
Over the shoulders of the flaming Foal
Of Heav'n Parvin and Mushtara they flung
In my predestin'd Plot of Dust and Soul
THE Vine had struck a Fibre;

५५

फैलकर अब यह चारो ओर
किए है मुझपर शीतल छाँह,
फलित होकर करती मधुदान
मुझे क्या सूफी की परवाह ?

मुझे वह तुच्छ समझता लोह,
न लोहा यह कुजी बन जाय

खोलने को यह बद कपाट,
जिसे वह पीट रहा निरुपाय ।

LV

THE Vine had struck a Fibre, which about
If clings my Being—let the Sufi flout,
Of my Base Metal may be filed a key,
That shall unlock the Door he howls without.

५६

प्रेम को दिखलाने को राह
भस्म कर या करने को क्षार
झलक दिखलादे सच्ची ज्योति
एक यदि मदिरालय के द्वार,

प्रिये, तो उसपर सकता वार
न जाने कितनी बार स-चाव

मस्जिदें, मदिर, गिरजे साथ,
जहाँ उसका सब भाँति अभाव।

LVI

AND this I know: whether the one Tru
Light,
Kindle to Love, or Wrath consume me quite
One Glimpse of It within the Tavern caugh
Better than in the Temple lost outright.

मुझे जो पथ करना था पार
बिठाए उसपर प्रेत-पिशाच,
बनाए उसपर गहरे गर्त;
और, आया अब करने जांच

पूर्व ध्रुव निश्चय के अनुसार
चला मैं करता व्यर्थ प्रलाप,

देखते तुझे न आती लाज
पतन मे मेरे मेरा पाप !

LVII

OH Thou, who didst with Pitfall and with Gin
Beset the Road I was to wander in,
Thou wilt not with Predestination round
Enmesh me, and impute my Fall to Sin ?

मलिन मिट्टी की दे दी देह,
न करती फिर ये कैसे पाप ?
अदन के उपवन के ही साथ
रचा तूने पापो का सॉंप

अरे, वे तो सब तेरे पाप,
कलकित जिनसे मानव भाल,

क्षमा कर मानव के अपराध
क्षमा अपनी पा ले तत्काल

LVIII

OH, Thou, who Man of baser Earth didst make,
And who with Eden didst devise the Snake;
For all the Sin wherewith the Face of Man
Is blacken'd, Man's Forgiveness give—and take!

कूज़ा-नामा

और भी एक बताता बात—
गया रमजान मास था बीत,
आ गया था शुभ सध्या काल
न था निकला पर चद्र पुनीत,

सामने थी मेरे दूकान,
जिसे रखता वह वृद्ध कुम्हार,

बना मिट्टी के पात्र अनेक
गए थे रक्खे बांध कतार।

KUZA-NAMA
LIX

LISTEN again One Evening at the Close
Of Ramzān, ere the better Moon arose,
In that old Potter's Shop I stood alone
With the clay Population round in Rows

मुझे कहते होता आश्चर्य
रहे थे उनमें से कुछ बोल,
मगर कुछ थे ऐसे भी पात्र
नही जो मुंह सकते थे खोल

अचानक बोल उठा वह पात्र
सबो से जो था अधिक अधीर,

"बनाता क्यो है व्यर्थ कुलाल
तुच्छ मिट्टी का क्षणिक शरीर ?"

LX

AND, strange to tell, among that Earthen Lot
Some could articulate, while others not :
And suddenly one more impatient cried—
"Who *is* the Potter, pray, and who the "Pot ?"

६३

न उत्तर मे जब कोई बोल
सका, तब कुछ पल के पश्चात
पात्र उनमे से बोला एक,
बना था जिसका टेढा गात,

"देखकर मेरा वक्र स्वरूप
रहे हँस लोग व्यग के साथ,

मगर क्या मेरा है अपराध
कँपा यदि कुंभकार का हाथ ?"

LXIII

NONE answer'd this, but after Silence spake
A Vessel of a more ungainly Make,
"They sneer at me for leaning all awry,
"What! did the Hand then of the Potter shake?"

६४

एक बोला, "कहते कुछ लोग,
एक है क्रूर-कठोर कलाल,
नरक का काला भयप्रद घूम्र
रहा है रँग उसका मुख-भाल,

कडी करता पात्रो की जाँच;
अरे, उनकी बातें निस्सार;

हमारा स्वामी सज्जन-साधु
करेगा सुख से बेड़ा पार !"

LXIV

SAID one—"Folks of a surly Tapster tell,
"And daub his Visage with the Smoke
"of Hell,
"They talk of some strict Testing of us—
"Pish !
"He's a Good Fellow, and 'twill all be well "

दूसरा बोला ले उच्छ्वास,
"गई है मेरी मिट्टी सूख,
भूलकर चिर दिन से मधुपान,
सताती मुझको इसकी भूख ।

उसी मधु मदिरा से फिर आज
अगर कोई भर दे यह पात्र,

सरस, मधुमय फिर से हो जाय
शुष्क, नीरस मेरा यह गात्र ।"

LXV

THEN said another with a long drawn
Sigh, "My Clay with long oblivion is
"gone dry
"But, fill me with the old familiar Juice,
"Methinks I might recover by and-bye !"

पात्र जब करते थे यों बात
दिखा निज वाक् शक्ति, निज ओज,
एक ने देख लिया वह चाँद,
रहे थे कर सब जिसकी खोज ।

परस्पर धक्के देकर पात्र
उठे कह—मित्र, लगाओ कान,
सुनो, आते फिर वाहक लोग,
चलो फिर होगा मदिरा-पान ।

× × ×

LXVI

So while the Vessels one by one were speaking,
One spied the little Crescent all were seeking:
And then they jogg'd each other, "Brother! "Brother!
"Hark to the Porter's shoulder-knot a-"creaking!"

× × ×

प्रिये, मदिरा से देना सींच
अधर मेरे होते मृत-म्लान,
मरूँ तब मदिरा से ही, प्राण,
कराना मेरे शव को स्नान ।

अँगूरी पत्तो से मृत देह
मूद, उनकी ही शैया डाल,

सुला देना मुझको चुपचाप
किसी मधुमय उपवन के पास

LXVII

AH, with the Grape my fading Life provide,
And wash my Body whence the Life has died,
And in a Windingsheet of Vine-leaf wrapt,
So bury me by some sweet Garden-side

कि गडने पर भी मेरी राख
बिछाए सौरभ का मधु पाश
पवन में उपवन मे सब ठौर,
जहा हो शीतल छाया, घास ।

पकड ले शेखो के भी पाँव
रहे हो कर जो उपवन पार,

न जा पाएँ आगे की ओर
बिना विश्राम किए पल चार ।

LXVIII

THAT ev'n my buried Ashes such a
Snare
Of Perfume shall fling up into the Air
As not a True Believer passing by
But shall be overtaken unaware

किया जिनको चिर दिन से प्यार
उन्होंने ही ऐमा व्यवहार
किया, जिससे मारा ससार
मुझे कहता कचन से क्षार ।

दिया छिछले प्याले मे बोर
उन्होंने मेरा गौरव-मान,

और दी ख्याति-प्रतिष्ठा बेच
उन्होंने लेकर बस यह गान ।

LXIX

INDEED the Idols I have loved so long
Have done my Credit in Men's Eye much wrong
Have drown'd my Honour in a shallow Cup,
And sold my Reputation for a song

७०

शपथ ले मैंने निस्संदेह
किए थे पश्चात्ताप अनेक,
मगर, था क्या तब मे गभीर ?
मगर, था क्या तब में सविवेक ?

और, आया, फिर, सरस वसत,
सजा, फिर, पाटल से निज हाथ,

गए व्रत के वे मेरे तार
टूट उसके आने के साथ ।

LXX

INDEED, indeed, Repentance oft before
I swore—but was I sober when I swore ?
And then and then came Spring, and Rose-in-hand
My thread-bare Penitence apieces tore

७१

किया मदिरा ने मुझसे घात
मान की पगडी मेरी छीन,
मगर, कत्र उसको समझा हेय ?
मगर, कब उसको समझा हीन ?

मुझे प्राय इसपर आश्चर्य
बेचता मद क्यों दीन कलाल,

कहाँ ताँबे के टुकडे चार !
कहाँ माणिक-सा उसका माल !

LXXI

AND much as Wine has Play'd the Infidel,
And robb'd me of my Robe of Honour —well
I often wonder what the Vintners buy
One half so precious as the Good they sell

चली जाती मधुऋतु जिस काल
सूख जाते पाटल के प्राण,
अचानक होता, हाय, समाप्त
सरस यौवन का मधुराख्यान ।

आज बुलबुल किसको मालूम
बिलखती-रोती उड किस ओर
गई, जो कल फूलो को गीत
सुनाती आई थी इस ओर ।

LXXII

ALAS, that Spring should vanish with the Rose!
That Youth's sweet-scented Manuscript should close!
The Nightingale that in the Branches sang,
Ah, whence, and whither flown again, who knows!

हाय, प्रेयसि ! मिल हम-तुम साथ
नियति के, रच कोई षड्यत्र,
पकड सकते यदि यह सपूर्ण
जगत का दुख-सकट मय जत्र,

न क्या हम करके चकनाचूर
मिटाते इसका सत्व समूल--

बनाने एक नया ससार
हृदय के स्वप्नो के अनुकूल !

LXXIII

AH Love ! could thou and I with Fate conspire
To grasp this sorry Scheme of Things entire,
Would not we shatter it to bits—and then
Re-mould it nearer to the Heart's Desire

छिटकती नित जो एक समान,
कुमुद-जीवन की ज्योत्सने, प्राण,
देख, फिर आज उदित हो चद्र
बनाता नभ मडल छविमान ।

हाय ! इस उपवन में यह चाँद
न जाने अब से कितनी बार

करेगा आकर मेरी खोज,
रहूँगा मै जीवन के पार ।

LXXIV

AH, moon of my Delight who know'st no
wane,
The Moon of heav'n is rising once again;
How oft hereafter rising shall she look
Through this same garden after me—in vain !

श्रौर तू भी शशिमुख, पदरश्मि,
तारको-से मधुपो मे घूम,
घास पर होगे जो नभनील,
पिलाएगी मधु मदिरा भूम,

किंतु जब पहुँचेगी उस ठौर
जहा मै बैठा करता साथ,

भरा मदिरा का प्याला एक
उलट देगी नतमुख, नतमाथ !

LXXV

AND when Thyself with shining Foot
shall pass
Among the Guests Star-scatter'd on the Grass
And in thy joyous Errand reach the Spot
Where I made one—turn down an empty
Glass !

TAMAM SHUD

टिप्पणी

रुबाई सख्या

१ **भाजन में पाषाण फेंकना**—मरुस्थलो में प्रचलित एक सकेत, जिसका मतलब यह है कि घोडे पर चढकर भागो या केवल भागो। मूल में यह नहीं बतलाया गया कि यह पाषाण क्या है । मैंने 'रवि-पाषाण' कर दिया है।

२ अनुवाद की प्रथम दो पक्तियो के स्थान पर मूल में है, जब उषा ने अपना बाया हाथ नभ की ओर पसारा। 'बाया हाथ' उस प्रकाश के लिए प्रयुक्त हुआ है जो प्रभात होने के पूर्व दृष्टिगोचर होता है । इसे फारसी में 'सुबह काज़िब' कहते है, जिसका अर्थ है झूठा प्रभात । सच्चे प्रभात को 'सुबह सादिक' कहते है । शायद उसको उषा का दाया हाथ कहते । मेरे बदले हुए रूपक में दाए-बाए का भेद अनावश्यक है और रुबाई के मूल भाव में इससे कोई अतर नही आता।

४ **'ज्वलित कर मूसा का तरु-ज्योति'**—इसमें बाइबिल के Exodus IV. 6 का हवाला है —

'And he (Moses) put his hand into his bosom, and when he took it out, behold, his hand was leprous as snow'

मूसा के हाथ के सफेद दाग से एक ज्योति निकला करती थी। फ़ारस में नया वर्ष, नव रोज, वसतागमन के साथ ही पडता है । एक लेखक ने लिखा है कि फ़ारस मे 'Before the snow is well off the ground, the trees burst into blossom and the flowers start from the soil' जहा हिमाच्छादित पृथ्वी ने वसत की आभा फूट पडती है वहा कवि का ध्यान मूसा के हाथ की ओर जाना स्वाभाविक था जिसके वर्फ-से

सफेद दाग गे ज्योति निकला करती थी।

'समीरण ईसा का उच्छ्वास'—ईसा म मुर्दो को जिलाने की शक्ति थी। फारस के लोगो का विश्वास था कि उनकी इस शक्ति का रहस्य उनकी श्वास मे था। जैसे ईसा के फूंक देने से मुर्दे जी उठते थे उसी प्रकार वसंत-समीरण के प्रवाहित होने से मृत-मूर्च्छित पृथ्वी पुन जीवन प्राप्त करती है। जैसे कवि ने नूतन वर्ष की नई तरु आभा मे मूसा का हाथ देखा था उसी प्रकार वह वसंत के नवल समीर मे ईसा का उच्छ्वास देखता है।

५ **अरम-आराम**—शद्दाद नामक राजा का लगवाया हुआ गुलाबो का एक प्रसिद्ध बाग जो अरब के मरुस्थल मे लुप्त हो गया है।

सात चक्र वाला जमशेदी प्याला—जमशेद फारस की दंत कथाओमे एक राजा है जिसके पास एक ऐसा प्याला था जिसमे सात चक्र थे जिसमे सातो आसमान, सातो नक्षत्र और सातो समुद्रो का हाल जाना जा सकता था।

६ **दाऊद**—मुसलमान और ईसाइयो के एक पैगंबर जो गान-विद्या मे बहुत निपुण थे।

स्वर्गीय स्वरो में—मूल मे इसके लिए 'पहलवी' लिखा गया है। 'पहलवी' फारस की प्राचीन भाषा थी जिसमे पारसियो की धार्मिक पुस्तक 'जिंदावस्ता' लिखी गई थी और जिसे फारस के लोग देव-वाणी या स्वर्ग की वाणी समझते थे।

गुलाबो उसके पीले गाल—या तो यह किसी लाल गुलाब के लिए लिखा गया है जो पीला पड रहा था, या किसी पीले गुलाब के लिए। फारस मे लाल और पीले दोनो प्रकार के गुलाब पाए जाते है। मेरा विचार है यह किसी पीले गुलाब के लिए लिखा गया है। खैयाम की रुचि संभवत लाल गुलाबो की ओर थी। १८ वी रुबाई मे वे कहते है—

वहाँ होते अति लाल गुलाब
जडें जिनकी कर पाती पान
गडे अवनीपतियों का खून.

७ **'काल-पक्षी के पर दिन-रात'**—यहाँ दिन और रात के शुक्ल और कृष्ण पक्ष वाले काल पक्षी की कल्पना मेरी अपनी है। प० केशवप्रसाद पाठक ने इसको 'कीर' कह दिया है।

८ **क़ैकुवाद**—सेलजुक वंश का एक सुल्तान था, जिसने समस्त एशिया माइनर पर शासन किया था और जिसकी मृत्यु सन् १२३४ में हुई। यहाँ कैकुवाद और जमशेद के नाम खास उनके लिए न लाए जाकर प्रतीक के समान प्रयुक्त हुए है। यहाँ कैक़ुवाद और जमशेद से तात्पर्य है महान विभूतियो से जिन्हे काल उसी तरह उठा ले जाता है जिस तरह साधारण व्यक्तियों को।

९ **क़ैखुसरो**—इस नाम के दो बादशाह फारस मे हुए है। एक पहले आए हुए कैक़ुवाद का चाचा था और दूसरा उसका पोता। क़ैखुसरो का नाम भी कैकुवाद और जमशेद के समान प्रतीक-रूप में प्रयुक्त हुआ है।

हातिम—मूल में हातिमताई है। हातिम अरब के ताई नामक फिरके का एक सरदार था। यह अपने अतिथि-सत्कार के लिए प्रसिद्ध था।

रुस्तम—फारस का प्रख्यात मल्ल। फ़िरदौसी ने शाहनामा मे इसका गुणगान किया है। अंग्रेजी कवि मेथ्यू आरनल्ड ने इसपर 'सोहराब और रुस्तम' नाम की बडी सुंदर कविता लिखी है। इसीके नाम पर प्रसिद्ध भारतीय पहलवान गामा को 'रुस्तमे-हिंद' कहते है।

१० **महमूद**—(९९५-१०३०) फ़ारस का तुर्क राजा। अपनी राजधानी ग़ज़नी के नाम पर यह महमूद गज़नवी भी कहलाता है। उसने भारतवर्ष पर धन-लाभ और काफिरो में इस्लाम प्रचार के ध्येय से कई आक्रमण किए थे। सोमनाथ पर कहे गए इसके शब्द प्रसिद्ध हैं 'बुत-शिकन न कि बुतफ़रोश्त'—मैं मूर्ति को तोडनेवाला हूँ न कि मूर्ति को बेचनेवाला। यह कवियो का आश्रयदाता था। इसीने फिरदौसी से शाहनामा लिखवाया था। खैयाम के समय मे इनके पराक्रम और वैभव की कहानियाँ बहुत प्रचलित होगी।

१७ **जमशेदी दरबार**—सभवत कवि का तात्पर्य परसेपोलिस से है

जिसे तरते जमशेद भी कहते है । 'चेहल मीनार' (चालीस मीनार) की ओर भी संकेत हो सकता है जो मरदश्त के मैदान के सामने कोहे-रहमत को काटकर बनाया गया था।

बहराम—(४२०–४८८) यह बहराम गोर भी कहलाता है। फारसी मे 'गोर' जगली गधे को कहते है। यह जगली गधे का शिकार करने के लिए प्रसिद्ध था । एक बार एक जगली गधे का पीछा करते हुए एक गड्ढे मे गिर पडा और वही उसकी कब्र बन गई। प्रसिद्ध है कि इसने सात रग के महल बनवाए थे जिनमे हर एक मे इसकी एक प्रियतमा रहती थी। फारसी के एक कवि अमीर खुसरो ने इन सातो महलो मे सात प्रणय लीलाओ का वर्णन किया है। तीन के खडहर अब भी मिलते है।

इस रुबाई मे Lion and the Lizard के स्थान पर मैने सिह और श्वान रक्खा है । ध्वन्यात्मक अनुवाद यही है । भाव मे कोई अतर नही आता।

१८ **गडे अवनीपतियो का खून**—मूल मे है some buried Caesar bled, तात्पर्य किसी राजा से है।

सुबुल—यह एक प्रकार की बेलि है जिसकी पत्तियाँ बाल की तरह लबी और पतली होती है।

२० अरे, कल दूर, एक क्षण बाद काल का मै हो सकता ग्रास—मूल मे है Tomorrow I may be Myself with yesterday's Sev'n Thousand Years इसमे मैने भविष्य की अनिश्चितता को और बढा दिया है । कल मरा हुआ ऐसा ही है जैसे ७००० वर्ष पहले मरा हुआ। सभवत मूल के ७००० वर्ष, सात नक्षत्रो के आधार पर, १००० वर्ष प्रति नक्षत्र के हिसाब मे रक्खे गए है । शाब्दिक अनुवाद मे भाव के दुरूह होने की सभावना थी।

२२ इस रुबाई के भाव की सूक्ष्मता हम तभी समझ सकते है जब हम इसका ध्यान रक्खे कि कवि के देश की प्रथा के अनुसार मुर्दे जमीन मे गाड जाते है। १८वी और १९वी रुबाई मे भी इसे ध्यान मे रखने की

आवश्यकता है।

२८ 'लिए आया था अश्रु-प्रवाह, छोडता जाता हूँ उच्छ्वास' मूल में है 'I came like Water, and Like Wind I Go.' इस पक्ति का शाब्दिक अनुवाद वडा ही भोडा होता। water मेरे लिए अश्रु हो गया है, wind उच्छ्वास, फिर, लिए आया था अश्रु-प्रवाह, छोड़ता जाता हूँ उच्छ्वास मे कवि-जीवन का एक चित्र ही उतर पडा है। कवि अपनी वेदना लेकर आता है, यही उसका अश्रु-प्रवाह है, अपनी वाणी छोडकर चला जाता है यही उसका उच्छ्वास है। लिए आने और छोडते जाने के विरोध और छोडते जाने के श्लेष ने पक्ति को और भी मधुर वना दिया। शब्द-योजना और भावो के साथ पक्ति मुझे इतनी प्रिय लगी कि इसकी परवाह न करके कि मूल से मै कितनी दूर चला गया मैंने इसे रखना ही उचित समझा। जीवन-रूपी खेत को आँसुओ से सीचने और अत मे कुछ न पाने पर उच्छ्वास छोडने मे रूपक की पूर्णता भी मुझे दिखाई दी। पाठको को अपनी सम्मति रखने का पूर्ण अधिकार है।

२९. इस रुवाई में भी मैंने पानी की तरह आने के वजाय पानी में एक तिनके-सा लिखा है। हवा की तरह जाने के वजाय हवा में उडते हुए एक रज-कण-सा लिखा है। मनुष्य ससार में आने और वहाँ से जाने में जितना परवश है वह पानी और हवा से उतना व्यक्त नही होता जितना पानी मे वहनेवाले तिनके से और हवा में उडनेवाले कण से।

३१ शनि सिहासन—शनि सातवें आसमान का राजा है। वहाँ तक पहुँचने के लिए सातो आसमानो को पार करना पडता है।

४१ यहाँ भी मूल की प्रथम दो पक्तियो का शाब्दिक अनुवाद सभवत निरर्थक होता। खैयाम का तात्पर्य है कि मैंने दर्शन, गणित, ज्योतिष, जड-जीव विज्ञान सभी सीखे पर जीवन की समस्या किसीसे न सुलझी।

४३ मत पथों—मूल में इनकी सख्या ७२ दी गई है। सभवत तात्पर्य इस्लाम के ७२ पथो से है जिसमें वह वहुत जल्द विभक्त हो गया।

४४ इस रुवाई मे अगूरी की तुलना महमूद से की गई है। १० वी

रुबाई पर दिया गया उसका परिचय इसका औचित्य सिद्ध करेगा।

५४ फिट्जजेरल्ड की इस रुबाई ने अनुवादको के मार्ग मे जितनी कठिनता उपस्थित की है उतनी किसी और रुबाई ने नही की। परिणामस्वरूप हिंदी के जितने अनुवाद मेरे देखने म आए उनमे से किसी मे यह रुबाई ठीक-ठीक नही समझी गई और इस कारण उसके अनुवाद निरर्थक, भद्दे, गलत और उपहासास्पद हुए है। इस रुबाई को ठीक न समझ सकने का एक विशेष कारण है। फिट्जजेरल्ड की यह केवल एक रुबाई है जो केवल चार पक्तियो मे समाप्त नहीं होती। उसके भाव को पूर्ण करने के लिए कुछ और शब्दो की आवश्यकता थी। रुबाई का ढाँचा उन्हे अपने मे समा नही सकता था। फिट्जजेरल्ड ने एक सूक्ष्म चातुर्य दिखलाया। उन्होने इस रुबाई के शेप शब्दो को आगे की रुबाई मे रख दिया। हर एक रुबाई के अत मे विराम चिह्न है। इसके अत मे उन्होने विराम चिह्न नही रक्खा। रुबाई की सख्या बदल दी और जो शब्द ऊपरवाली रुबाई मे नही आ सके थे उन्हे उन्होने आगेवाली रुबाई मे रखकर सेमी कोलन (,) दे दिया और आगेवाली रुबाई के भाव को कुछ कम शब्दो मे व्यक्त किया। इस प्रकार ५४ वी और ५५ वी रुबाई मे उन्होने रुबाई का रूप तो रक्खा, पर ५४ वी रुबाई का भाव चार पक्तियो से अधिक म व्यक्त हुआ और ५५ वी का चार से कम मे। एक की अधिकता दूसरे की न्यूनता से सतुलित की गई। रुबाई का आदर्श तो यही है कि वह चार पक्तियो मे किसी भाव को पूर्ण कर दे। पर अनुवाद करते समय यदि यह आदर्श न निभ सके तो मै इसे कोई अपराध अथवा त्रुटि नही समझता। वहरहाल फिट्जजेरल्ड ने इन दोनो रुबाइयो को इस प्रकार रक्खा—(ब्रैकेट मेरे लगाए हुए है)

54

(I tell Thee this—When, starting from the Goal,
Over the shoulders of the flaming Foal
Of Heav'n Parwin and Mushtara they flung,
In my predestin'd Plot of Dust and Soul

55

The Vine had struck a Fibre,) (which about
If clings my Being—let the Sufi flout,
Of my Base Metal may be filed a Key,
That shall unlock the Door he howls without)

इस प्रकार हम देखते हैं कि ५४ वीं रुबाई Soul पर न समाप्त होकर ५५ वी रुबाई की प्रथम पक्ति में Fibre पर समाप्त होती है। इसका पदान्वय इस प्रकार होगा—

I Tell thee this—When, starting from the Goal, they flung Parwin and Mushtara over the shoulders of the flaming Foal of Heaven, the Vine had struck a Fibre in my predestined Plot of Dust and Soul,

Parwin और Mushtara कृत्तिका और बृहस्पति हैं। Flaming Foal of Heaven सूर्य है। शाब्दिक अर्थ इसका यह है 'मै तुझसे एक भेद की बात बताता हूँ, जब वे (फरिश्ते) लक्ष्य से प्रस्थान करके चले और उन्होंने कृत्तिका और बृहस्पति को सूर्य्य के कधो के ऊपर फेंका, उसी समय मेरे पूर्व-निश्चित आत्मा और काया के पिंड में अगूर लता की मूल जा पडी।' कहने का तात्पर्य यह है कि सृष्टि के प्रारभ मे जब नक्षत्रो से नभ-मडल सजाया गया उसी समय मेरा भाग्य भी निश्चित हो गया कि जब मैं जन्म लूँ तब मै मदिरा पान करूँ। इस्लाम धर्म के अनुसार सृष्टि के प्रारभ में ही प्रत्येक मनुष्य का भाग्य निश्चित हो गया है। क्योकि ईश्वर सर्वद्रष्टा है, जो आगे होने को है वह सब जानता है और जैसा वह जान चुका है वैसा ही होगा, उमर खैयाम उसी विचार का आश्रय लेकर अपने मदिरापान को उचित सिद्ध करता है। इसी भाव को वह एक दूसरी रुबाई में व्यक्त करता है जिसका अनुवाद इस प्रकार है—

God knew, on the Day of creation, that I should drink wine,

If I do not drink wine, God's knowledge was ignorance †

'ईश्वर को सृष्टि के प्रारम्भ में ही ज्ञात हो गया था कि मैं शराब पीऊँगा, अगर मैं शराब न पीऊं तो उसका ज्ञान अज्ञान सिद्ध होगा (और यह कैसे हो सकता है ?)

फिट्जजेरल्ड ने यह रुबाई संभवत उमर ख़ैयाम की उस मूल रुबाई के आधार पर लिखी थी—

آں روز کہ توسن فلک زیں کردند
آرایش مشتری و پروین کردند
ایں بود نصیب ما ز دیوان قضا
ما را چہ گناہ قسمت ما ایں کردند

इसका अनुवाद अंग्रेजी में इस प्रकार किया गया है —

Ere yet the steed of Heaven his housings bore,
Or Pleiades their shining jewels wore,
My lot was written in the rolls of fate,
Where is my sin ? 'T was destiny—no more [२]

अर्थात् जिस रोज आसमान के घोडे पर जीन कसी गई, और मुश्तरी और परवी की सजावट हुई उसी दिन कजा के दीवान में मेरा ऐसा नसीब लिख दिया गया, मेरा क्या गुनाह है, मेरी किस्मत ही ऐसी कर दी गई।

जो भाव फिट्जजेरल्ड से एक रुबाई के ढाँचे में न रक्खा जा सकता

[१] Rubaiyat Omar Khayyam Translated by Edward Heron Allen from the Mss at Bodleian Library Nichols London see Quatrain No 75

[२] Rubaiyat Omar Khayyam Translated by Johnson Pasha Kegan Paul, London see Quatrian No 285

था वह मुझसे भला क्या रक्खा जाता। ५४ वी रुवाई का अनुवाद मैंने दो चतुष्पदियो में रक्खा है। पर मुझे विश्वास है कि खैयाम के भाव को पूरी तरह व्यक्त किया गया है। इन दोनो चतुष्पदियो की एक ही सख्या रखने का यही रहस्य है।

अव, जिन लोगो ने ५४ वी रुवाई के अत मे Soul के आगे पूर्ण विराम ( ) की कल्पना कर ली है उन्होन अर्थ लगाने में भद्दी भूलें की है। [अफ़-सोस है कि ऐसी छापे की गलती मुझे कई अच्छे अग्रेज़ी सस्करणो में भी मिली।] उन्होने इस रुवाई का पदान्वय इस प्रकार किया है I tell thee this—When, starting From the Goal, over the shoulders of the flaming Foal of Heav'n they flung, Parwin and Mushtara in my predestined Plot of Dust and Soul अर्थात् मेरी पूर्व-निश्चित आत्मा और काया के पिंड में परवी और मुश्तरा को डाल दिया!! अनुवादको ने इतना भी देखने का प्रयत्न नही किया कि अगर मूल का अर्थ यही होता तो flung के पश्चात् कॉमा (,) की कोई आवश्यकता नही थी। सवसे अधिक उपहासास्पद तो प० वलदेवप्रसाद मिश्र हुए है। यही अर्थ करके उनके मन में शका उठी कि आत्मा और काया के पिंड में वृहस्पति और कृत्तिका पडने का क्या अर्थ? और उन्होने ज्योतिप की किसी किताव से यह अर्थ निकाला कि ये नक्षत्र जिसके भाग्य में पडे उसे 'कुछ थोडी मदिरा' पीने को मिलती है। नक्षत्रो के भाग्य में पडने के चक्कर में पडकर उन्होने इस रुवाई को मनमाना तोडा-मरोडा है। साथ ही विपय के अनुसार रुवाइयो का क्रम स्थापित करने के उतावलेपन में उन्होने इन ५४ वी और ५५ वी रुवाइयो को जो अपने स्थूल रूप में भी जुडी हुई है अलग-अलग कर दिया है। ५४ वी रुवाई का नवर उनके अनुसार है ४६, और ५५ वी का ६१। Goal (लक्ष्य) को उन्होने Gaol (कारागृह) कैसे कर दिया समझ में नहीं आता। वा० मैथिलीशरण गुप्त मूल फारसी से ठीक अर्थ पर पहुँचे थे, पर गलत अग्रेज़ी समझानेवाले ने उनसे भी यही भूल करा दी। प० केशवप्रसाद पाठक वी० ए० और प० वलदेवप्रसाद मिश्र

एम० ए०, एल-एल० बी० से ऐसी भूल की प्रत्याशा नहीं की जा सकती थी। श्री रघुवंशलाल गुप्त ने इन रुबाइयों का अनुवाद नहीं किया। फिट्जजेरल्ड की ७५ रुबाइयों के स्थान पर उनके अनुवाद में ७२ ही रुबाइयाँ हैं।

५८ **अदन के उपवन के ही साथ रचा तूने पापों का साँप**—बाइबिल के अनुसार आदि पुरुष आदम और आदि स्त्री हौआ को ईश्वर ने अदन के बाग में रक्खा था, यहीं पर शैतान ने साँप के रूप में आकर उन्हें उस ज्ञान-वृक्ष का फल खाने को कहा जिसके लिए ईश्वर ने मनाही कर दी थी। यहीं से मनुष्य की समस्त चिंताओं और यातनाओं का आरंभ हुआ। ख़ैयाम कहते हैं कि ईश्वर ने यह पापों की ओर ले जानेवाले साँप को मनुष्य के मार्ग में आने ही क्यों दिया।

५९ **रमजान**—रोजे का महीना। इस महीने में शराब पीना ख़ास तौर से मना होता है।

७५ पिछले दो संस्करणों में इस रुबाई का जो अनुवाद मैंने रक्खा था उससे यह आभास होता था कि ख़ैयाम की प्रेयसी भी मरने के बाद उसे भूल जाएगी। जहाँ वह बैठा करता था अनजान ख़ाली प्याला उलट कर धर देगी। अर्थ मुझे अब गलत मालूम होता है। उमर को विश्वास है कि उसकी प्रेयसी उसे याद रक्खेगी और उसके नाम पर एक भरा प्याला जमीन पर उँडेल देगी। जिस समय मैंने अनुवाद किया था मूल फारसी न देखी थी। मूल की यह रुबाई देखकर मेरी धारणा बदल गई।

یاران بموافقت چو دیدار کنند
باید که ز دوست یاد بسیار کنند
چون بادهٔ خوشگوار نوشند بهم
نوبت چو بما رسد نگونسار کنند

अर्थ हुआ, ऐ दोस्तो! जब तुम आपस में मिलो तो तुम्हें चाहिए कि अपने दोस्त को बहुत याद करो। जब उम्दा शराब पियो और हमारी बारी आए

एम० ए०, एल-एल० बी० से ऐसी भूल की प्रत्याशा नही की जा सकती थी। श्री रघुवंशलाल गुप्त ने इन रुबाइयो का अनुवाद नही किया। फिट्जजेरल्ड की ७५ रुबाइयो के स्थान पर उनके अनुवाद मे ७२ ही रुबाइयाँ है।

५८ **अदन के उपवन के ही साथ रचा तूने पापो का सांप**—बाइबिल के अनुसार आदि पुरुष आदम और आदि स्त्री हौआ को ईश्वर ने अदन के बाग मे रक्खा था, यही पर शैतान ने सांप के रूप मे आकर उन्हे उस ज्ञान-वृक्ष का फल खाने को कहा जिसके लिए ईश्वर ने मनाही कर दी थी। यही से मनुष्य की समस्त चिंताओ और यातनाओ का प्रारभ हुआ। ख़ैयाम कहते है कि ईश्वर ने यह पापो की ओर ले जानेवाले सांप को मनुष्य के मार्ग मे आने ही क्यो दिया।

५९ **रमजान**—रोजे का महीना। इस महीने मे शराब पीना ख़ास तौर से मना होता है।

७५ पिछले दो संस्करणो मे इस रुबाई का जो अनुवाद मैने रक्खा था उससे यह आभास होता था कि ख़ैयाम की प्रेयसी भी मरने के बाद उसे भूल जाएगी। जहाँ वह बैठा करता था अनजान खाली प्याला उलट कर धर देगी। अर्थ मुझे अब गलत मालूम होता है। उमर को विश्वास है कि उसकी प्रेयसी उसे याद रक्खेगी और उसके नाम पर एक भरा प्याला जमीन पर उँडेल देगी। जिस समय मैने अनुवाद किया था मूल फारसी न देखी थी। मूल की यह रुबाई देखकर मेरी धारणा बदल गई।

یاراں بموافقت چو میعاد کنید
باید کہ ز دوست یاد بسیار کنید
چوں بادۂ خوشگوار نوشید بہم
نوبت چو بما رسد نگونسار کنید

अर्थ हुआ, ऐ दोस्तो! जब तुम आपस मे मिलो तो तुम्हे चाहिए कि अपने दोस्त को बहुत याद करो। जब उम्दा शराब पियो और हमारी बारी आए

तब उलट दो ।

सभवत फिट्जजेरल्ड ने इसीका भाव अतिम रुबाई मे रक्खा है । इस रुबाई के भी अतिम भाग को किसी भी अनुवादक ने ठीक नही समझा—'turn down an empty Glass" का मतलब है—Shall turn down an empty Glass ! जो प्रेयसी 'करेगी' उसको अनुवादको ने 'करना'—ऐसा आदेश दिया है । किसी ने जूठा प्याला उलटने को कहा है, किसी ने खाली । प० बलदेवप्रसाद मिश्र ने मदिरा गिराने को कहा है पर अत में 'सुखमान' लगाकर अन्याय किया है । प्रेयसी मृत उमर खैयाम के नाम पर यह मदिरा जमीन पर उँडेलती हुई उदास होगी कि सुखी ?

* * *